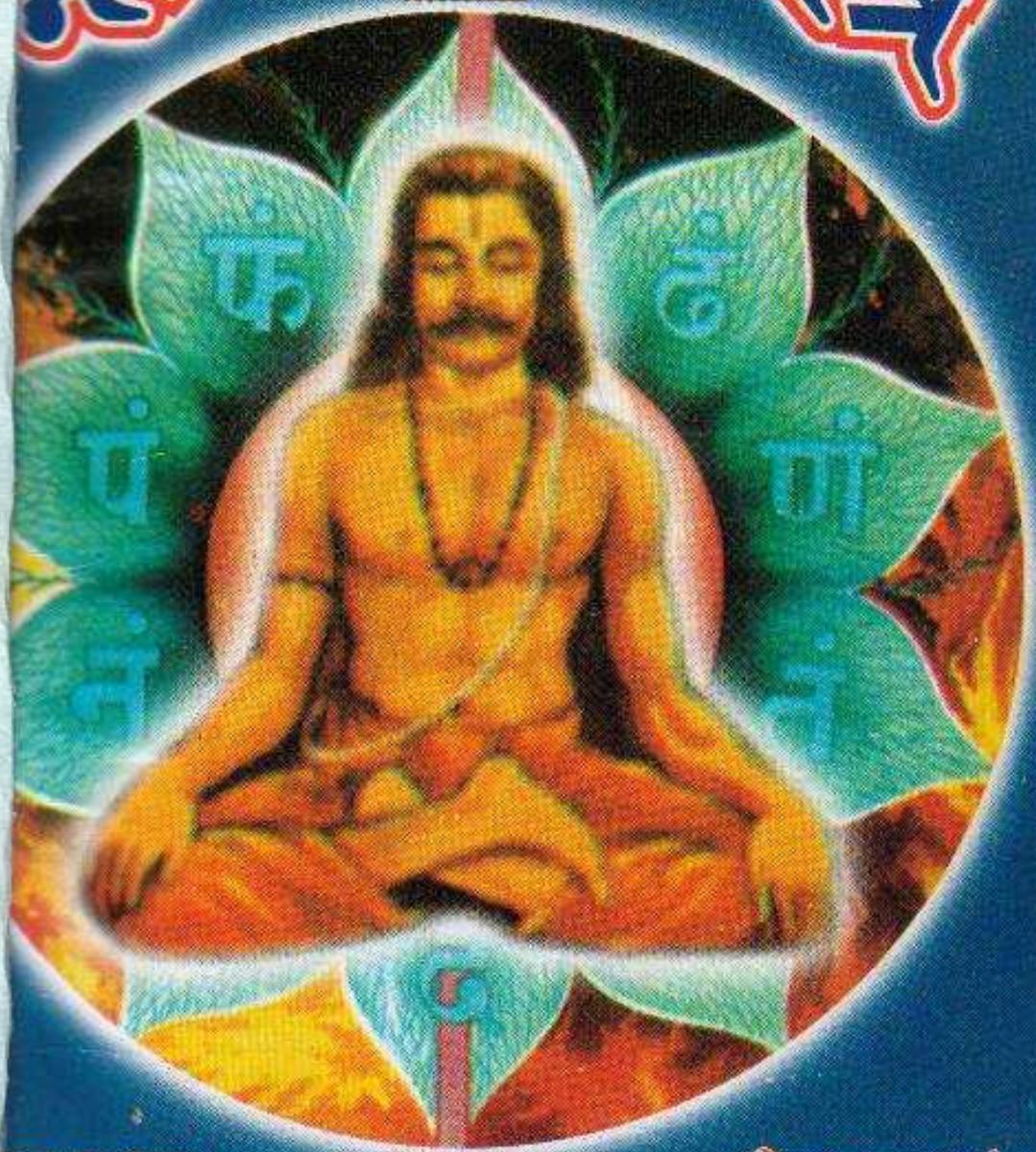


## विजय सिद्धि विशेषांक

मुद्रा : 18/-

# मुक्ति-तंत्र-विद्या



प्राचीन साधना

ਜੋਨ ਸਾਲਰ ਟੰਬ

ଶିଖାରତ୍ନ ପାଇଁ

**प्रश्नांक : कापड़ालियों का वर्ग**

पारदेश्वर श्रीवांश्



## COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with  
By  
  
Avinash/Shashi

Icreator of  
hinduism  
server!

# श्री शृङ्ख-पूर्वकाश्च

॥ उत्तम तत्त्वाय जाग्रायणाय शुक्रभ्यो ददमः ॥



## सद्गुरुदेव

सद्गुरु प्रबचन	5
गुरु बाणी	44
<b>स्तम्भ</b>	
शिष्य धर्म	43
नश्त्रों की वाणी	60
मैं समय हूँ	62
वराहमिहार	63
जीवन सरिता	69
इस मास दिल्ली में	80
एक वृष्टि में	86

## साधना

विजया एकावर्षी साधना	22
हनुमान साधना	27
तांत्रोक्त गणपति साधना	31
पारश श्रीवंश साधना	37
अखण्ड मुरक्का प्रयोग	46
जैन सावर तंत्र	45



**प्रेरक संस्थापक**  
डॉ. नारायणदत्त  
श्रीमाली  
(प्रसम्प्रस स्वामी  
जित्यित्येष्वरानंद जी)

**प्रधान सम्पादक**  
श्री नन्दविक्कोर  
श्रीमाली

**कार्यदातक सम्पादक**  
श्री वैश्वानाथनन्द श्रीमाली

**संयोजक व्यवस्थापक**  
श्री अरविन्द श्रीमाली

## सपादन सलाहकार मंडल

डॉ. रमेश चौधरी शास्त्री,  
श्री शुभ सेवक श्रीमालीनन्द,  
श्री रमेश पाटिल, श्री एस. के. विद्या,  
श्री भार. सी. निष्ठ, श्री गंगाधर  
महापात्र, श्री जसेन पाटिल, श्री  
सर्वीश विश्वा (बनवई), श्री एस.  
आर. विश्वा, श्री सुधीर चेतोकर,  
श्री विजय शास्त्री (हरियाणा),  
श्री कृष्ण जीड़ा (बंगलोर),  
डॉ. एस. के. धीताल (नेपाल),

**प्रकाशक एवं स्वामित्व**  
श्री वैश्वानाथ बन्दर श्रीमाली

दरा

नील आर्ट प्रिन्टिंग  
पा. १२४, नारायण इडिस्ट्रियल  
परिया फैसल १, नई दिल्ली  
से दृष्टि तथा  
सिक्काश्रम, ३०१ कोहाट  
एन्कलव, पीनगपुर, नई  
दिल्ली में प्रकाशित।

**मूल्य (भारत में)**  
एक प्रति : 18/-  
वार्षिक : 195/-



## विदेश

सम्मोहन वीथा	40
ज्योतिष में व्यवसाय योग	25
मंत्र जप का महत्व	64



:: सम्पर्क ::

सिद्धाश्रम, ३०८ कोहाट एन्कलव, पीनगपुर, विल्ली-११००३४, फोन: ०११-७१८२२४८, फैसली फोन: ०११-७१९६७००  
मंत्र-जप-यज्ञ विहार, श्री श्रीमाली नार. हैंडकोट ज़िले नार, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान), फोन: ०२९१-४३२२०९, फैसली फोन: ०२९१-४३२३१०  
WWW address - <http://www.siddhashram.org> E-mail add. - [mtyv@siddhashram.org](mailto:mtyv@siddhashram.org)

## प्रार्थना

### त्रियम्

परिकल में प्रकलित माझी नवजार्हों का अधिकान परिकल  
का है। इस 'मंत्र-तंत्र-यत्र विजाव' परिकल में प्रकलित लेखों में  
माध्याद्य का ग्राहण देता आदिवार्ही नहीं है। तर्क-कुर्क वन्दे वाले  
पाठक परिकल में प्रकलित पूरी माझी को मरण माफ़जो किसी नहीं,  
झाज या धट्टा का विक्षी मेरे कोई माफ़जा नहीं है, यदि नई छटा,  
नाम या तथ्य लिल जाय, तो उमे मांसोन मामजो परिकल के लेखक  
पुष्कर झाँग-मांत होते हैं, अतः उमे पों के बाने में दूष भी अच्छ  
जावकानी देना माफ़ज नहीं होगा। परिकल में प्रकलित विक्षी भी  
लेख या माझी के बाने में बाद-विवाद या तर्क माल्य नहीं होगा  
ओन व ही उमे के लिए लेखक, प्रकाशक, गुरुक वा माध्याद्य  
विमोचान हीं। विक्षी भी माध्याद्य को विक्षी भी प्रकाश का  
परिचयिक नहीं दिया जाता। विक्षी भी प्रकाश के बाद-विवाद में  
जो अपने ज्ञानालय से माझ देखा, परिकल में प्रकलित विक्षी भी  
माझी को माध्यक या पाठक नहीं हो भी प्राप्त कर माकरे है परिकल  
कावलिय से ग्रन्थाने पर हम अपनी नवक मेरे प्रकाशिक ओन मारी  
माझी याधवा यम भेजते हैं, यदि किम भी उमे के छाए में, अमली  
या नक्ली के बाने में अध्यापक प्राप्त होते या न होते के बाने में हानी  
विमोचानी नहीं होती। पाठक अपने विकाजा पर ही ऐसी माझी  
परिकल कावलिय से बचवाये। माझी के मूल्य पर तर्क या  
बाद-विवाद माल्य नहीं होगा। परिकल के वार्षिक गुरुक वर्तियाँ में  
।३५। - है, यदि विक्षी विकाज एवं अपरिचार्य कलणों के परिकल  
के प्रकाशिक वा बद कन्ता पठे, तो विक्षी भी अंक आपको प्राप्त  
हो जाएँगे, उमी ते वार्षिक माध्यका याधवा हो वर्ष, तीन वर्ष वा  
पंचवर्षीय माध्यका को पूर्ण माफ़जों इसर्वे किम्भी भी प्रकाश की  
अपाप्ति या आलोचना विक्षी भी रूप में रखीकर नहीं होती।  
परिकल में प्रकलित विक्षी भी माझका ने माफ़कता-मास्फ़कता,  
हानि-लाभ की विमोचानी माझक की अवज की होती तथा माध्यक  
नहीं भी ऐसी उपाधाना, यज या मंज प्रदीप न करें, जो नैतिक,  
मात्रातिक एवं कानूनी विकर्मों के विषयी हो। परिकल में प्रकलित  
लेखों के लेखक दोनों या माझाकी लेखर्वों के विचार माफ़ होते हैं,  
उन पर आरा का आवण परिकल के कर्त्तावियों की नवक ग्रो होता  
है। यात्रों की मांग पर हम अंक ते परिकल के विषयों लेखों का भी  
ज्यों का दो मानवेमा विद्या जाय है, जिसको कि दोनों पाठक लाभ  
उठ मार्क माध्यक या लेखक अपने प्रकाशिक अनुभावों के आधार  
पर जो मंज, तज या वंश (भले ही वे गाँड़ीय माध्यक के जन हों)  
बताते हैं, वे ही दे देते हैं। अतः इस माफ़कता में आलोचना कन्दा वर्ष  
है। माकण पृष्ठ पर या अद्य जो भी कोहो प्रकलित होते हैं, इस  
माफ़कता में विक्षी विमोचानी कोहो भेजते वाले कोटोडायन अध्यापक  
आठिक की होती हीका प्राप्त क्वने वा तार्क वर्ष नहीं है, कि  
माध्यक उमाजे माध्यकित लाभ तुमन प्राप्त कर मार्क, वह ही विक्षी  
ओव मातत प्रकलित है, अतः पूर्ण भद्रा ओन विकाजा के माथ ही  
दीका प्राप्त क्वनो। इस माफ़कता में विक्षी प्रकाश की कोई भी अपाप्ति  
या आलोचना झीकर्ही नहीं होती। मुक्केव या विकल परिकल इस  
माफ़कता में विक्षी भी प्रकाश की विमोचानी वर्ष नहीं कर्वेगी।

ब्रह्मा भूत्वासु जैल्लोकं विष्णुभूत्वाथ पालयन् ।  
सद्गो भूत्वाहरन्ते गतिर्भूत्स्तु सदाशिवः ॥  
आदित्यं च शिवं विद्याच्छिवमादित्यस्तपिणमा ।  
उभयोरन्तरं नास्ति द्यावित्यस्य शिवस्य च ॥

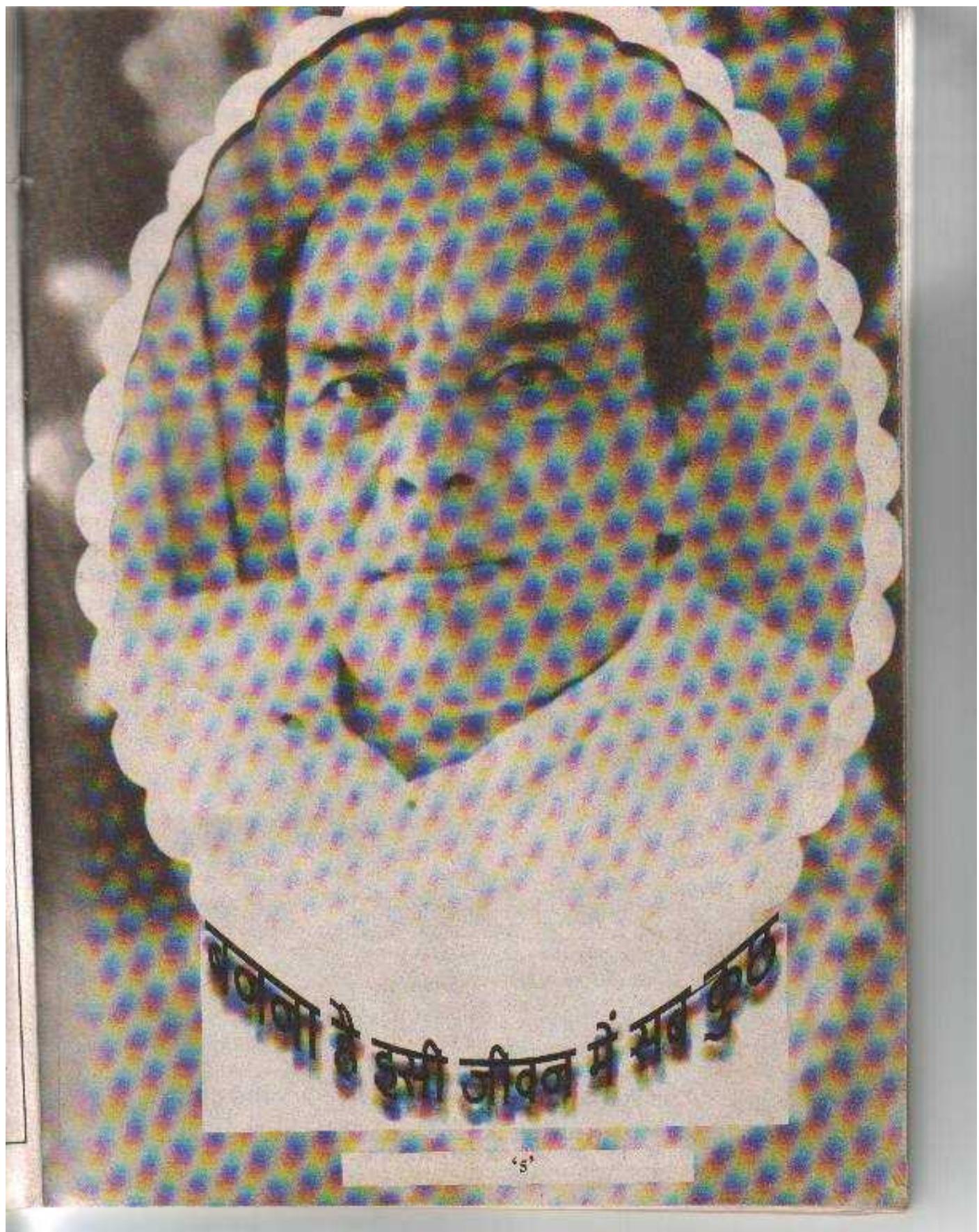
“जो ब्रह्मा होकर समस्त लोकों की सृष्टि करते हैं,  
विष्णु होकर सबका पालन करते हैं और अन्त में रुद्ररूप  
से सबका संहार करते हैं, वे सदाशिव मेरी परमगति हैं।  
सूर्य और चन्द्र भगवान सदाशिव के नेत्र हैं।  
इसलिए भगवान सदाशिव सूर्य सोमात्मक है। सदाशिव  
और सूर्य में पूर्णतया अभेद है। ऐसे भगवान सदाशिव को  
मैं प्रणाम करता हूं।”

## \* गुरु का कर्तव्य \*

शिष्य का सर्वांगीण विकास करना गुरु का परम कर्तव्य  
माना गया है। एक बार प्रतापी राजा ने अपने इकलौते  
राजकुमार को गुरुकूल के आचार्य को सौंपकर कहा कि  
इसे आप श्रेष्ठ बना दें।

ऋषि, कुमार को आश्रम ले गए। पांच वर्षों तक परिवर्त से  
मिलने की अनुमति नहीं थी। शिक्षण पूरा होने पर कुमार को वे  
राज दरबार में लाए। कुमार के सिर पर गढ़री लदी थी तथा  
उसकी वेशभूषा फटीचर जैसी थी। राजा ने कुमार को देखा तो  
उन्हें हरानी हुई। वे ऋषि से बोले अपने मेरे पुत्र की क्या हालत  
बना दी है। असहज माहौल में कुमार राजा की प्रणाम करना भूल  
गया। ऋषि जे अपनी बेट का इतनी जोर से प्रहार किया कि  
राजकुमार की चीख निकल गई। राजा ने कहा कि बहुत ही चुका  
आप हमें इसे सुपुर्द कर दें। मंत्री बोले “शाम को इसकी  
शिक्षा-दीक्षा पूर्ण होगी। तब तक यह राजकुमार नहीं मेरा शिष्य  
है। आगे का शासन उस शिक्षा के आधार पर चलेगा जो मैंने इसे  
पांच वर्षों में दी है।”

अपने व्यवहार को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि  
मान-प्रपान, कष-कठिनाइयाँ, अपना-पराया, कठिन-  
सरल तथा उचित-अनुचित का यदि राजकुमार को पता नहीं  
चला तो वह क्या राजा बनेगा और न्याय करेगा? वही  
राजकुमार शिखिरथ्यज के रूप में प्रसिद्ध हुआ। \*



'5'

सदगुरुदेव ने अपने प्रवचनों में बार-बार शिष्यों को यह एहसास दिलाया है कि तुम एक जीवन्त व्यक्तित्व हो और अपने छोटे से जीवन में भी वह सब कुछ कर सकते हो जो अब तक नहीं कर पाए अथवा आपके पूर्वज नहीं कर पाए। जीवन अमृत्यु है और जीवन का प्रत्येक क्षण सार्थकता से मनुष्यत्व से देवत्व की ओर ने जाने की क्रिया से जीना है। दिलों में राज्याभिधेक दीक्षा के समय दिया गया उनका यह महान प्रवचन शिष्यों के लिए एक उद्घोष है-

पृष्ठेन्दु सहश भवतां सदैव

ब्रह्म स्वरूपाय विराट रूपं

चेतन्य देव भवतां भव पूर्ण चिन्त्यं

सिद्धाश्रमाय परितां भवदेव नित्यं ॥

एक उच्चकोटि के उपनिषद ऐताखेतोपनिषद में से यह श्लोक लिया गया है। और इसी श्लोक की, इसी भाव को शंकराचार्य ने भी अपने शंकरभाष्य में उद्घृत किया है। शंकराचार्य, एक बहुत बड़ी बात कह रहे हैं और आनं भी आप जो कहे हैं वहां पर यह अपने आप में एक सामान्य बात नहीं है। इसलिए नहीं कि नुमे आपकी प्रशंसा करनी है, हमलिए भी नहीं कि आपको रत्नतियां छूटी शान दिखाना है। आप शिष्य हैं और जिन्दगी में एक अच्छे शिष्य बन जाएं

यह भी  
मग  
चेतन्य  
आप में  
वेह था  
करने दे  
ओर दे  
जब ह  
महीने  
संसक  
महीने  
अपने  
ही हो  
त्यो है  
मुपल  
मुपल  
कि न  
कि न  
जबर  
दोप  
ग  
ये। उ  
माहत  
लगा  
श  
के भा  
निनद  
स  
उसक  
पैदा।

यह भी बहुत बड़ी बात है, मैं तो चाहता हूं जीवन में आप गुरु बनें, ज्ञान का प्रकाश फैलाएं।

मगर ऐसे गुरु बनें जो अपने आप में सार्थक हों, ऐसे गुरु बनें सूर्य के समान देवियमान हों, ऐसे गुरु बनें जो वैतन्य हों, ऐसे गुरु बनें जो अपने आप में पूर्ण सिद्धिप्रद हों, ऐसे व्यक्तित्व बनें जो अपने आप में सिद्धि पूर्ण हों और उस व्येतापवेतापनिषद में कहा गया है कि मनुष्य या तो देह धारण करता है या अवतार लेता है, मगर देह धारण करने के बाद भी वह अवतारी पुरुष बन सकता है। अवतारी और देह धारण में अन्तर यह है कि गर्भ धारण करने के बाद जब हम उत्पन्न होते हैं और गर्भ धारण के समय जब तीन महीने सत्ताइस दिन का गर्भ हो जाता है, तब उसमें जीव संस्कार होता है और उस समय से लगाकर के ९ महीने और २ दिन या ५ दिन या १० दिन तक बालक अपने आप में पूर्ण ब्रह्म स्वरूप बनता है, ब्रह्म स्वरूप ही होता है। उसके बाद जोगे ही वह जन्म लेता है। त्यों ही उसकी एक जाति बन जाती है, तू हिन्दू है, तू मुसलमान है, मुसलमान के घर जन्म ले लिया, तो मुसलमान जन्म गया भाटे मेटिक। उसकी इच्छा थी कि नहीं थी, मगर जबरदस्ती उसके ऊपर धोप दिया कि तू हिन्दू है, जबरदस्ती धोप दिया कि तू ईसाई है क्योंकि भी जगह जन्म लेने की वज़़ड़ी उसको उस जगह धोप दिया गया।

जाकराचार्य कह रहे हैं कि यह धोपने की किया तो मेरे घर ब्राह्मण की फि वे उस भग्नदाय से सम्बंधित थे। और यदि केरल का रहने वाला, वृक्षण का रहने वाला यक ब्राह्मण शक्ति जो शिशुक था, जो अन् अज के लिये मोहनान रहने वाला था वह अवतारी पुरुष बन सकता है तो आप भी बन सकते हैं। यब उसने कहा कि मात्रै सन्यास लगा तो मात्र कहा - थटा। तू एक ही बेटा है और सन्यास लगा तो मैं किसके भरोसे जीवित रहूँगी।

जाकराचार्य ने कहा कोई किसी के भरोसे नीरित नहीं रहता। व्यक्ति अपने खुद के भरोसे ही जीवित रहता है। अन्यथा के भरोसे ही जिन्दा रहता है। जीवित रहने का मतलब है सन्यास लेना। आप उसको जीवन कहते हैं, मात्र उसको जिन्दा कहते हैं, जिन्दा है कि यह सारे ले रहा है। यह लेने को तो नह कहते हैं और नर

उसको कहते हैं जो अपने समान एक और चीज पैदा कर दे, उसको नर कहते हैं।

का पुरुष हो।

उस समय र  
लड़की को होवें  
बदलता है, या  
है। हम कलियु  
पैदा होते थे, और  
गुरु भी पैदा ह  
को इवेताश्वेते  
कहेंगे कि ये :

मगर कह  
हो जायेगा वि

श्वेताश्वेते

मैं आपके

श्वेताश्वेतोप

सही ढंग से

कोई विशेष

शंकराचार्य

पहले की व

प्रश्न है कि

शास्त्र का

अद्वैत क्या

है? अद्वैत

चाहता क्य

मगर व

वही शिष्य

रहे हुए हो

लेकर उ

शंकराचा

व्यक्तित्व

नहीं

मैं अपने समान एक और लड़के को पैदा कर दूं तो मैं नर हूं। इसलिए दो शब्द बने नर और नारायण। और आप भी नर हैं।

तो शंकराचार्य कह रहे हैं कि कोई व्यक्ति किसी के भरोसे जीवित नहीं है, यह हमारा भ्रम है कि मेरा पिता मेरा रहा है, कि मेरी पत्नी मेरी पालन पोषण कर रही है, कि मेरा पति मेरा रहा है कि एकस-वाई-जेड, मेरा पालन पोषण कर रहा है, ये तो हमारा अपने आप मैं सेन्ट्रल हूं, अपने आपमें पूर्ण हूं। न उसमें कोई स्वाइंडन है, कोई एड किया जा सकता है।

एक गर्भ में पैदा होने वाला बालक अवतारी पुरुष बन सकता है, बनता है, क्योंकि जिस प्रकार से आप पैदा हुए, तो किसी प्रकार से राम भी पैदा हुए थे, उसी प्रकार से कृष्ण भी पैदा हुए थे। उसी प्रकार से बुद्ध भी पैदा हुए थे। वही किया थीं और उस समय का कोई

वातावरण बहुत ज्यादा उनमकोटि का हो ऐसा भी नहीं था। जिसको हम राम राज्य कहते हैं उस समय भी लड़ाइयां, झगड़ होते थे, दशरथ के तीन रानीयां थीं आपस में लड़ती थीं केकेयी, कौशल्या और सुभिता।

उस समय भी छल कपट था, केकेयी ने अपने पुत्र भरत को राजगढ़ी दिलाने के लिए छल किया। उनना छल किया कि ये राम कहीं गधी पर न बैठ जाए, तो अपने पति को मोहित करके उसको (राम को) चौदह साल के लिए बन में भेज दिया तो ये छल, ये झूठ, ये कपट, ये व्यापार, ये असत्य ब्रेतायुग में थीं थे, द्वापर युग में थे और इतना था, कि भरी समा में भीष्म जैसा व्यक्तित्व बैठा है, दुर्योधन जैसा बैठा है और द्रोपदी नंगी की जारी है, अपने समूर के सामने, और किसी के मुह में बोल नहीं निकल रहा है और कृष्ण जब उसका चीर बढ़ाते हैं तो भीष्म को फटकारते हुए कहते हैं कि मुझे दुख है कि एक ग्रसर के सामने एक बहु नंगी की जा रही है, तुम बोल नहीं पा रहे हो, तुम कैसे कायर पुरुष हो, कैसे कायर हो, कैसे अपने जापमें शक्ति होन हो या अपने आप में

कापुरव हो।

उस समय रामराज्य में कोई बहुत उच्चकोटि का वातावरण नहीं था, आज किर भी लों आर्द्धर है आप किसी स्त्री, लड़की को छेड़ने तो जरूर पुलिस जेल करेगी ही करेगी। उस समय तो यह भी नहीं था। इस लिए कोई युग नहीं बदलता है, युग तो वैता युग, द्वापर युग और कलियुग एक जैसे ही थे मगर आप ये सोचते हैं कि हम क्या कर सकते हैं। हम कलियुग में पैदा हुए हैं। उस समय भी ऐसे वृथोधन पैदा होते ही थे, दुश्यन पैदा होते ही थे। कृष्ण जैसे भी पैदा होते थे, द्राघाचार्य जैसे गुरु भी पैदा होते थे। वशिष्ठ जैसे और विश्वामित्र जैसे गुरु भी पैदा होते थे। सांदीपन जैसे गुरु भी पैदा हुए। मगर शंकराचार्य जिस पंक्ति को बोले वह अपने आपमें महन्वपूर्ण पंक्ति है, क्योंकि उसने इस पंक्ति को श्वेताश्वेतोपनिषद से उठाया। आपको ध्यान है कि यार वेद है, और मैं कहूँगा कि हकीकत में आठ वेद हैं तो आप कहेंगे कि ये आप तो नई बात बता रहे हैं, ये तो कोई नहीं कहता, आप मत मानिये, आपकी मर्जी है।

मगर कई शंख, कई वेद तुम हो गये, जान येता युक ही नहीं रहे। खैर यह तो एक अलग प्रबन्धन का टापिक हो जायेगा कि वे आठ वेद कौन से थे, क्या थे। वह तो एक दूसरा विषय है। वह ज्ञान का दूसरा चिन्तन है।

श्वेताश्वेतोपनिषद में भी इस को यजुर्वेद के मंत्र से उठाया, इस श्लोक को।

मैं आपको बता रहा हूँ कि मूल क्रष्ण ने जो कहा, जो वाणी उच्चरित की, उसको सरल करने के लिए श्वेताश्वेतोपनिषद बनाया। ये १०८ उपनिषद बने उन आठ वेदों को सरल माया में लिखने के लिए, सही ढंग से समझाने के लिए। और वहाँ से शंकराचार्य ने लिखा इसका मतलब इस श्लोक में जरूर कोई विशेषता है। शंकराचार्य जैसे विद्वान को उस श्लोक को उठाने की क्या जरूरत थी। और शंकराचार्य आज से २५ सी वर्षों पहले पैदा हुए, कोई बहुत बड़ी घटना, कोई दस हजार वर्ष पहले की घटना थी नहीं। चाहे कल की बीती हुई घटना हो या '३ हजार पहले की घटना हो। प्रश्न है कि जीवन क्या है। मैं आपको उस उपदेश में भी नहीं जाने देना चाहता कि यह शास्त्र का विषय है या विद्वानों का विषय है कि जीवन का मर्म क्या है और द्वैत क्या है अद्वैत क्या है? क्या माया और ब्रह्म अलग-अलग है, माया क्या चीज है, ब्रह्म क्या चीज है? अद्वैत सिद्धान्त क्या है? द्वैत सिद्धान्त क्या है? मैं आपको उसमें उलझाना नहीं चाहता क्योंकि वह उच्चकोटि के ज्ञान की चिन्तन की बात है।

मगर शंकराचार्य कह रह है कि उच्च कोटि के गुरु के पास मैं वही शिष्य डकड़े होते हैं, एकत्र होते हैं जो किसी समय वेवता रहे हुए होते हैं या जिसमें देवता का अंश होता है वही जन्म लेकर उनके पास होते हैं। तो शंकराचार्य जैसा व्यक्तित्व गलत नहीं होता है।

सकता। इसलिए गलत नहीं हो सकता कि जब मां ने कहा कि बेटा मैं विष्णुके भरोसे जीवित रहूँ। उसने कहा-मां अपने आप के भरोसे जीवित रहा। मैं भी अपने भरोसे जीवित रहूँगा। हर आदमी अपने भरोसे जीवित है। कोई किसी का है नहीं। हम केवल एक नर हैं, क्योंकि जो पिता ने किया वहा हमने आगे कर लिया और पिता वे भी कह रहे हैं बेटा मैं मर जाऊँ। एक पाता गोद में खिला दी। तो बस मेरी तुमि ही जाएगी। और आप शोशश करते हैं कि पोता जल्दी से जल्दी ही ही जाए और प्रवान कर देते हैं क्योंकि समाज का एक ढांचा ही गया।

शंकराचार्य कह रहे हैं कि व्यक्ति गुरु के साथ रहे और उससे उच्च कोटि का शान प्राप्त करे। वह कृष्ण सांदीपन के आश्रम में क्यों गया, मधुरा में गुरु ये नहीं क्या? वृन्दावन में गुरु नहीं थे? वृन्दावन में हरिनाथ गुरु थे उस समय। वह अपने आप में अछिनीय थे। विद्वल सम्प्रदाय चल रहा था, जो उत्तम कोटि के गुरु थे, रामानन्द सम्प्रदाय चल रहा था। कोई गुरु की कमी नहीं थी, उत्तम कोटि के गुरु थे। फिर सांदीपन के आश्रम में क्यों गये? उन्नेन क्यों गये कृष्ण? क्यों लकड़ीयां ढोई, क्यों जंगल में से लकड़ियां काट कर लाये? एक राजा का बेटा जंगल में जाकर लकड़ियां काट कर लाता है, गुरु यह देखना चाहता है कि यह शिष्य है या फोलोवर है, या केवल भीड़ में चलने वाला व्यक्तित्व है।

जेर भीड़ में नहीं चल सकता, जेर तो जंगल में अकेला होता है, अकेला ही चलता है। बस भेड़ों की भीड़ ही सकती है, बगुलों की भीड़ ही सकती है, गोदड़ों और सियारों की भीड़ ही सकती है, सियार जाएंगे तो बीस दून्ह में जाएंगे। जेर बीस के दुन्ह में नहीं होते बीस जेर एक साथ नहीं मिल पाएंगे। हस बीस एक साथ नहीं मिल पाएंगे।

शंकराचार्य ने कहा कि व्यक्ति को जीवन जैसा भी प्राप्त हो गया, जन्म ही गया, अब उसको तुम बबल नहीं सकते, अब या तो मृत्यु को प्राप्त हो जाओगे, या किर इस जीवन में कुछ पेसा ही जाएगा कि तुम अवतारी व्यक्तित्व बन जाओगे। वह अवतारी व्यक्तित्व बनना बहुत ज्यादा जरूरी है, क्योंकि जीवन की सार्थकता वह है। और फिर प्रश्न उसी झलक में करते हैं उसी पंक्ति में कहते हैं कि एक नर जो मल मूत्र धरी वेह से पैदा हुआ। क्या वह उच्चता को प्राप्त कर सकता है? अभी ५ मिनट पहले समझाया कि इस शरीर में मल मूत्र, थूक, लार, विष्णु पंचों के सिवाय छठी कोई चीज़ है नहीं। बहुत अच्छी प्रेमिका कहाँ है कि तुम्हारे बिना जिन्दा रह ही नहीं सकती। और ज्योंहि उसका एक्सीडेन्ट होता है, उसकी धीरकाड़ होती है तो कोई देखना ही पसन्द नहीं करता और एक दम से सोचता है कि जला दो। अब तुम कह रहे थे कि तुम्हारे बिना जिन्दा नहीं रह सकता मर जाऊँगा, तुम्हें पांच मिनट नहीं देखता हूँ तो

मैं ऐसा  
निकला,  
पांक  
मणर वह  
मैं बेबत्व  
उसके नि  
कार्य है  
प्रत्यक्ष  
महिने मैं  
कार्तिक  
जात्म  
जाने हैं।  
होता है  
नाना है  
तो खड़ा  
और हम  
गये, वये  
हमसे नह  
ऐसा ह  
ले लिया,  
क्योंकि उ  
नहीं लेते  
मणर आ  
परिवर्तित  
एक नर है  
एक बकीत  
नहीं है, वे  
सकते हैं।  
का, आप  
इसलिए है  
भी जल्दी  
नहीं हो पा  
अवनारी प  
देखता साम  
सी के,  
इधर आओ

है ऐसा हो जाता है। फिर क्या हो गया उस शरीर में से निकला क्या, मल निकला, मूत्र निकला, विषा निकली, तो हमारे शरीर में यही सब कुछ है।

शंकराचार्य कह रहे हैं कि जो जन्म हो गया हो गया। हमारे अंदर देवतन्त्र है, मगर वह जागृत नहीं है, नरत्व जागृत है। दोनों चीज अलग हैं। एक आपके शरीर में देवत्व है, एक आपके शरीर में नरत्व है, नरत्व का तुम उपयोग कर रहे हो, उसके लिए धूनीवर्सिटी में कोई एनूकेशन लेने की जरूरत नहीं है, उसके लिए कोई कार्तिक महिने में ही गर्भ धारण करती है मतलब सन्तान उत्पन्न करती है। गर्भ है रामी कानिक माझेन मैं अपने बछड़े को जन्म देनी है। एक उनका टाइम फिक्स है।

आदमी के लिए कोई टाइम फिक्स है नहीं। कभी भी बच्चा पैदा कर ही लेते हैं, ही जाते हैं। कोई उनका अनु का और जीवन का सम्बन्ध नहीं है। गाय का बछड़ा पैदा होता है और पैदा होने के तीन घंटे के बाद पैरों पर खड़ा हो जाता है, दीठे लग जाता है केवल तीन घण्टों बाद और एक नर का बालक पैदा होता है नी महिने तक सो छड़ा होना बहुत लंबा विस्थान करके भी नहीं चल पाता। हम वितने कमज़ोर हैं, और हमें देवत्व कहा रख गया। हम पशुओं ने भी कमज़ोर गये, बीते व्यक्तित्व बन गये, क्योंकि तीन घण्टे बाद खड़े हो जाने की क्षमता गाय में है, जो मैस के बच्चे में है हमें नहीं है, कभी हमने सोचा भी नहीं।

ऐसा क्यों है? शंकराचार्य उस पंक्ति में कह रहे हैं कि जो जन्म ले लिया हमने वह ले लिया, जो मां बाप ने जन्म दे दिया, दे दिया उनका अण माने, न मानें। मानते हैं, क्योंकि उन्होंने हमें जन्म दिया। प्लान से दिया, अन प्लान से दिया। यहाँ जन्म नहीं लेते तो कहीं और जन्म लेरो, जहाँ आत्मा भटक रही होती वहाँ जन्म लेते। मगर आपके उस जन्म को देवत्व में कैसे परिवर्तित किया जाए? जब तक देवत्व में परिवर्तित नहीं हो जाएगा जीवन तो जीवन नहीं कहलाएगा एक फिर नरत्व कहलाएगा। एक नर है, एक लामान्य मनुष्य है, एक व्यापारी है एक विजेतामेन है, एक जन है, एक वकील है, एक नौकरी पेशा आदमी है आप कुछ है मगर आप सही अर्थों में देवत्व नहीं हैं, देवत्व नहीं हैं, आप ढोंग कर सकते हैं माला फेरने का। आप एक ढोंग कर सकते हैं शिक्षी की पूजा करने का, आप ढोंग कर सकते हैं हँसामसीह का क्रास पहनने का, आप ढोंग कर सकते हैं कुरान से अल्लाहो अकबर करने का, ये सब ढोंग हैं। ढोंग इसलिए है कि इतना करने के बाद भी शिव के दर्शन नहीं कर पाये, आप इतना करने के बाद भी अल्लाह के दर्शन नहीं कर पाये, इतना करने के बाद भी इसा मसीह आपके सामने प्रगट नहीं हो पाए। कहा कमा थी, क्या गलती थी तुम्हें क्या कर्मी है? तुम केवल एक नर हो, तुम अवतारी पुरुष बन नहीं पाए। ये तुम्हें कर्मी हुई। ऐसा कैसे हो सकता है तुम मंत्र पटी आप देवता सामने उपस्थित न हो। ऐसा तो हो ही नहीं सकता। ऐसा संभव ही नहीं है।

सी.के. चतुर्वेदी इधर आना। बस एक सेकेण्ड। अब देखिये मैंने मंत्र पढ़ा सी.के. चतुर्वेदी इधर आओ। देखिए बीच

मगर है  
उपर है  
हूँ कि  
वह है  
नर है  
भवत है,  
दे  
बनेगा  
देवत है।  
वर्षों  
जिन  
यह  
सक

जीव  
फिर  
किए  
कर  
सर  
आ  
जि  
क  
नि  
म  
ल  
श

मैं से आवा कि नहीं आया। मंत्र में ताकत है कि नहीं है आपके सामने उदाहरण है।

तुम कह रहे हो शब्दों में ताकत ढोती ही नहीं। मैं कह रहा हूँ कि केवल वही मंत्र पढ़ा और वही व्यक्ति उठा, दूसरे उठे नहीं। इसने लोग बैठे थे। केवल वही व्यक्ति उठा और मेरे मंत्रों में बिलकुल शमता थी, मेरे शब्दों में क्षमता थी और शब्द को ही मंत्र कहते हैं। और मैंने मंत्र उच्चारण किया। चाहे हीं बोला, चाहे कली बोला, चाहे श्री बोला, बोला और चाहे सी.के., चतुर्वेदी एक शब्द बोला, बोला और वह व्यक्ति उठ कर मेरे पास आया। फिर मैं शिव की आशंका करता हूँ, शिव का मंत्र करता हूँ, शिव को बुलाता हूँ, शिव वर्षों नहीं आते? जब सी.के., चतुर्वेदी आ सकता है तो फिर शिव को आना ही चाहिए। या फिर हमने कोई कमी है।

मैं तो आपके सामने प्रत्यक्ष उदाहरण देकर समझा रहा हूँ। न आप उठ कर आए, न वे उठकर आये। केवल जिसको मैंने याद किया, जिसको बुलाया वही व्यक्ति आया। इसलिए आप नर हैं शंकरचार्य कह रहे हैं कि यह जीवन व्यर्थ हो जाएगा, आपका एक दोंग हो जाएगा, एक पाखण्ड हो जायेगा, आप सांस लेने की किया कर देंग और सांस भी आपको लेनी आती नहीं। आप एक छोटे से बालक को देखें, उठ महिले के बालक को-

आपके घर में बालक हो आप देखिए बह सो रहा है और सांस ले रहा है तो उसकी नाभी बिलकुल फड़फड़ा रही है ज्यों ही सांस ली जाई तो बहुत दूर पेट इतना बढ़ा हुआ है कि नाभी वहीं के वहीं पढ़ी है। हिल नहीं सकती क्योंकि पेट को इतना भर दिया आपने कि सांस थांस तक आया और

फिर वापिस बाहर आ गया।

अब प्राणायाम होगा कहा से, कहां से जीवित रहेंगे, कहा से तुम योगी बन सकोगे, कहां से मुलाघार जायेत होगा, कहां से कृष्णलिनी जायेत होगी, सांस लेने की किया ही तुम्हें जात नहीं है।

बालक को जात है क्योंकि ब्रह्म से निकला हुआ वह आया है और उसने ज्यों ही सांस ली सीधे नाभी में स्पन्दन हुआ और आप देखेंग को उसकी नाभी बिलकुल धड़ कती हुई होती है। नाभी अपने आप में धड़कती रहती है।

मगर दो चार साल के बालक में नाभी धड़कना बन्द हो जाती है, आपको नाभी धड़क नहीं सकती क्योंकि नाभी के ऊपर आपने इतना हलवा लगा दिया है, पुणिया लगा ही है कि पेट हिले पामिल ही नहीं है। इसलिए मैं कह रहा हूँ कि आपको सास लेने की किया का भी जान नहीं है। शंकराचार्य कह रहे हैं कि गुरु का कर्तव्य, धर्म यह है कि वह व्यक्ति को यह एहसास करा दें कि तुम नर हो और तुम्हें अवतार प्राप्त करना है, अवतारी पुरुष बनना है, देवत्व बनना है, देवत्व बनना है और जब देवत्व बनेंगे तो देवत्व की मृत्यु नहीं हो सकती, देवता मर नहीं सकता यह सम्भव नहीं है। नर मर सकता है इस लिए मर सकता है क्योंकि उसने उप जीवन का अर्थ समझा नहीं, कैसे जिन्दा रहा जा सकता है यह जात नहीं है। अगर मुझे यह जात नहीं है कि यहां से कनाट प्लेस कैसे जाया जा सकता है, मैं नहीं जा सकता।

इसलिए इस श्लोक में बताया गया है कि बहुत छोटा सा जीवन मिलता है। पचास साल तो आपने बीता दिए पढ़ाई करने में, फिर पचीस साल के बाद ही गई शादी, फिर चालिस साल तक आपने किसी और काम में लगा दिए। फिर पचास साल में आपने व्यापार सेटींग कर लिया। फिर चौसठ साल में आप मर गये। पचास साल, साठ साल, सत्तर साल के ही गये और पैसठ साल के बाद आप जिन्दा रहे तो लोग आश्चर्य करते हैं कि यह जिन्दा है, आप पैसठ साल के ही गये। अभी तक जिन्दा है अच्छा चलो, राम जी की मर्जी।

सत्तर साल के ही गये तो लोग धूर-धूर के बेलते हैं सत्तर, सत्तर के ही गये क्या, और भई नहीं मरे, सत्तर के ही गये और अस्मी साल के हुए तो आपको चिड़िया घर में खड़े कर देते हैं। यह साहब अस्मी साल के व्यक्ति हैं जो अभी मरा नहीं ऐसे पूरे भारत वर्ष में दो चार, दस, पचास, पचास निलंगे। किनारा छोटा सा हमारा जीवन है, जीवन निम्ने डम कहते हैं कुछ साल है और शंकराचार्य कहते हैं क्या इस जीवन को हम हजार साल का नहीं बना सकते।

बास सकते हैं, उस नर से, देवत्व की ओर जा सकते हैं। आपके पिता नर थे आपके माँ नर थी नारी थी। आपके दादा लेसी ही थे, आपकी परदादा भी ऐसे ही थे। उनके पास भी कोई प्लान नहीं था। आपके पास भी आज तक कोई प्लान नहीं हुआ। मगर वे हमारे कोई काम के हैं नहीं क्योंकि - "अप्यो दीपो भव" मैं हूँ तो सब है, भगव आप नहीं रहेंगे तो क्या रहेंगा, पत्नी चार छह महिने रोधेंगी, साल भर रोधेंगी। आद में फिर हलवा पूँडी खा लेंगी, किसी शादी में जायेंगी तो खालेंगी। फिर बेटे अपने काम में लग जाएंगे। फिर धर में शादियां ही जाएंगी। फिर शाढ़ आ जाएंगा तो आपको याद करेंगे कि मेरे पिता जी बहुत अच्छे थे आज उनकी मृत्यु हो गई थी बरस बात खत्म, सर्वगवासी ही गये थे। आपने किया क्या

नहीं पा  
कृष्ण  
महत्वपूर्ण  
लिखवा  
जैन  
न है  
वास  
गुहा  
तथा  
नव  
कप

दूसरा  
को पूर  
कि का  
यह है  
दी जा  
कृष्ण  
मधुरा  
युद्ध से  
राम  
में जंग  
बुद्ध  
गई।

ईस  
गया।  
सुव  
पिला  
शंभु  
पिला  
हम  
करते  
जिन्द  
पूजा  
को शु  
उक्तल  
बेटा

### जिन्दगी में ?

शंकराचार्य कह रहे हैं कि व्यक्ति की सबसे बड़ी विशेषता है देवत्व की ओर अगस्त छोड़ा और अगर समझदार व्यक्ति है... समझदार व्यक्ति वह जो विवेक से काम लेता है। मूर्ख व्यक्ति विवेक से काम ले ही नहीं सकते क्योंकि उनकी जिन्दगी में क्षण आ ही नहीं सकते। पहले शिष्य गुरु के चरणों में भहुचन्द्र था, हजार मील की पैदल यात्रा करके। उस समय गाड़ी या ट्राम, टेक्सीयां, कारें, बसें थीं नहीं। उस वासुदेव के बेटे के पास भी नहीं थीं जो राजा का बेटा था। उसको पैदल जाना पड़ा। सांदीपन आश्रम में जा करके उसने किस प्रकार से एक नर से देवत्व बना जाए ये किया सारखी और उस समय बेता युग में केवल वो व्यक्तियों को ज्ञान था, अत्रि को और विश्वमित्र को। द्वापर युग में केवल एक व्यक्ति को ज्ञान था जिसको सांदीपन कहते हैं। और आज भी वहां सांदीपन आश्रम है उज्जीन के पास नदी किंप्रा के ऊपर पार।

छोटी किया नहीं है। एक पूरे शरीर को परिवर्तित करने की किया है। इनना परिवर्तित करने की किया कि एक सामान्य मलमूत से भरी हुई देह को अपने आप में अमृतमय बना देने की किया है। आपको तुच्छ व्यक्ति से देवतत्व बना देने की किया है, अपने आप को एक घटिया व्यक्ति से उल्लंघ लगाने की किया है, ऐसी किया कि बूढ़े से पूरे समुद्र बन जाएं, एक ऐसी किया की जहां अपने आप में समपूर्णता प्राप्त हो जाती है, 'पूर्ण सद्गुरु पूर्ण मित्र' कहा जाये वह बन जाने की किया। अगर ऐसी किया तुम्हारे पास नहीं है नहीं आ पाई, नहीं बन पाये तो यह जीवन व्यर्थ है, क्षण भंगुर है, समाप्त है और उस जीवन का कोई अर्थ, कोई मकसद है ही नहीं। मगर यह आपका सीमान्त है कि नदी, समुद्र के पास जाती है, हजारों मील दूर दौड़ती हुई, जंगोत्री के पास हिमालय से होती हुई, लहराती हुई, छलांग लगाती हुई, दौड़ती हुई, पेड़ों को तोड़ती हुई, चटुनों को तोड़ती हुई और यहां तो समुद्र खुद तुम्हारे पास आ करके बैठा हुआ है, तुम्हें पूर्णता देने के लिए।

आप पूछेंगे कि क्या ऐसा हो सकता है ? मैं पूछूँगा कि आपके प्रश्न अगणित हैं, करोड़ों हैं। क्या सांस लेने से कुछ होता है, क्या सांस नहीं लेने से कुछ होता है, क्या आपके पास बैठने से कुछ होगा, क्या खाना खाने से कुछ होगा, या नहीं खाने से कुछ होगा, अब आपके हरि क्या "हरि कथा अनन्ता" आपके प्रश्न तो अगणित है ही। मगर इस जीवन में जो जीवन आपको भिला है वह मैंने कहा कि नाश वान है, आप खुद भी समझते हैं कि नाशवान है शरीर समाप्त हो जाएगा। ये आपको मालूम है। और मैं आज वह किया समझाना चाहता हूँ कि इस नाशवान शरीर को अपने आप में अपर अद्वितीय बना सकते हो, गरंटी के साथ बना सकते हो, ईश्वर के साक्षी के रूप में बना सकते हों। और नहीं बनाया तो धिक्कार है। आपको भी, और मुझको भी। मैं अपने आप को धिक्कार देता हूँ, इसलिए कि मैं आप में वह प्रेरणा पैदा नहीं कर पाया। आप इस चीज को समझते हुए समझ

नहीं पाये।

कृष्ण ने श्री गीता में शंकराचार्य के इसी श्लोक को लिया। मैंने कहा कि, इस गीता से आषावक्तु गीता बहुत महत्वपूर्ण है, कभी आप उसको पढ़ें और इस गीता के इस तथ्य पर जो मैंने बताया पूरा एक अध्याय लिखा है अषावक्तु ने। गीता में तो केवल एक श्लोक लिखा है।

तेन छिन्नन्ति शस्त्राणि, नीनंदृष्टि पावकः ।

न चेन् वज्रेदयन्त्यापे न शोषय ति मासतः ॥

वासांसि जीणान्नि यथा विहाय नवानि

गृष्णाति नरो उपराणि ।

तथा शरीराणि विहाय जीणन्यन्यानि संयाति

नवानिदेही ॥

कपड़ा फट जाता है तो दूसरा कपड़ा पहन लेते हैं, वैसे शरीर नाशवान हो जाएगा तो हम दूसरा ढोला धारण कर लेंगे। गीता में श्रीकृष्ण ने इतना ही कहा। पर अषावक्तु ने इस बात को पूरा समझाया, इतनी सी चीज में समझ नहीं आएगी आता। क्यों समझ नहीं आयेगी कि कृष्ण को समझा ही नहीं गया और हमारे यहां पर भारत वर्ष में सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है, कि जिन्दा गुरु को समझा ही नहीं जा सकता, कोई नहीं समझता। उसे भालियां दो जा सकती हैं, उसको फटकारा जा सकता है।

कृष्ण को भालियां दी, फटकारा, इतना उसको प्रताड़ित किया गया कि वहां से मशुरा से भाग कर डारिका में जाना पड़ा और रणछोड़ जैसा कलेक लगाना पड़ा। युद्ध से भागने वाला।

राम को इतना प्रताड़ित किया गया कि चीदह साल तक पत्नी के विवेग में जंगल में दर-दर भटकना पड़ा।

बुद्ध को इतना प्रताड़ित किया गया कि उसके कानों में कीले ठोक दी गई।

इसा भसीह को इतना प्रताड़ित किया गया कि सूली पर टांग दिया गया।

सुकरात को इतना प्रताड़ित किया गया कि उसको जबदस्ती जहर पिला दिया गया।

शंकराचार्य को इतना प्रताड़ित किया गया कि उसको कांच घोट कर पिला दिया गया।

हम जीवित गुरु को पहचान ही नहीं पाये और मरने के बावजूद उसकी पूजा करते रहते हैं। चित्र लगाते हैं, अगरबत्ती लगाते हैं, धूप लगाते हैं। कृष्ण जिन्हा हीने और धूप, अगरबत्ती लगाते तो वे क्षण आते नहीं। हम मुर्दों के पूजा करने वाले हैं जीवित व्यक्तियों की पूजा करने वाले नहीं हैं। हम बुढ़े बाप को शुद्ध धी खिलाने की चिन्ता नहीं करते। मरने के बाद चिना में पूरे पीणा उड़ेलते हैं, लोग देखें कि कितना सपूत बेटा है पूरे असली धी के पीपे डालो वो बेटा बहुत सपूत है। और पहले असली धी खिलाने तो मरता ही क्यों थे। और

पहले चिलते नहीं, हम मुर्दा पूजक हैं नहीं, क्योंकि जिन्हा गुरु के पास रहना उतना ही कठिन है जितना चलाए के ऊपर चलता। वे आज्ञान काम नहीं हैं, क्योंकि वे हर समय आपको टोकता रहेगा, टोकता रहेगा तुम ऐसा भत बनो, जो कुछ हो इससे अपने आप में उच्चकोटि के बनो, मधितीय बनो और यहाँ तुम गलती कर रहे हो। वह बार-बार आपको टोकेगा, रोकेगा, और आपको बरबर चोट पहुँचेगी कि ऐसा गुरु क्या काम का कोई प्रशंसा नहीं करता, मैंने सी रुपये का नोट चढ़ाया छोड़ी इसको। वे मोटा ताजा गुरु बहुत अच्छा है लाल, सुख बस ये अच्छा है। बस उसकी शरण में चले जाओ।

हमारे यहाँ तो जिन्हा व्यक्तियों की पूजा नहीं होती, उनकी गालियाँ दी जाती हैं, तड़पाया जाता है, परेशान किया जाता है, मारा जाता है और उसको मरने के लिए बाध्य कर दिया जाता है। या तो छोड़ करके जंगल में चला जाता है या सन्दासी बन जाता है या अगर उच्चकोटि का व्यक्तित्व है तो किसी और लोक में चला जाता है या सिद्धाश्रम में चला जाता है। मगर मैं ऐसा नहीं करूँगा.... गरंटी के साथ नहीं करूँगा आपके बीच में ही रहूँगा गरंटी है....आप बीजिए गालियाँ, कितनी देंगे, कितना प्रताड़ित करेंगे, कितनी आलोचना करेंगे। मैं छोल लूँगा।

लीक-लीक सब हूँ चले... सभी लीक पे चलते हैं। बिना लीक तीनों चले, सायर सिंह सपूत् ॥ शेर कोई पगड़ण्डी पर चलता ही नहीं जंगल में, पहाड़ में कोई रास्ते पर नहीं चलता और जो सही अर्थों में घोगी है वह किसी के रास्ते पर नहीं चलता, बिलकुल नए रास्ता खोजता है, नये रास्ते पर चलता है। मैं उस रास्ते पर चलूँगा जिस रास्ते पर आज तक घोगी यति सन्दासी नहीं चले, उस रास्ते पर चलूँगा और सांदीपन का युग और विश्वामित्र का युग लाकर खड़ा करूँगा तुम्हारे सामने....।

कृष्ण अर्जुन को यही समझा रहे हैं कि अर्जुन तुम्हें पहिचान ही नहीं पा पाए है, मैं एक धोती पीताम्बर पहना हुआ साधारण व्यक्ति नहीं हूँ, तुम मुझे सामान्य सारथी समझ रहे हों, मैं तुम्हारा द्वाइवर नहीं हूँ इस रथ को चलाने वाला। मैं सामान्य आवामी नहीं हूँ, तुम मुझे पहचानो कि मुझमें ईश्वरत्व है, मैं अवतारी हूँ, क्योंकि मैंने सांदीपन से वह जान प्राप्त किया है। उससे वह दीक्षा, वह जान, वह चेतना वह प्रयोग मैंने लिया है। अर्जुन फिर भी गाँड़ीब नीचे रखा हुआ बैठा है।

कृष्ण कह रहा है - मैं तुम्हारा मित्र नहीं हूँ। तुम मुझे पहले पहचानो। पहचानो की मैं अपने आप में ईश्वरत्व हूँ। और दशम अध्याय तक कृष्ण उसको बार-बार यह समझा रहे हैं कि तुम मुझे पहचान लो। नहीं पहचानता तो दरवंद अध्याय में समझाते हैं कि यूं समझ ले कि मैं पहाड़ों में हिमालय हूँ। यूं समझ ले मैं नदियों में गंगा नहीं हूँ। तू यूं समझ ले कि पशुओं में गाय हूँ। यूं समझ ले कि अपने आप मैं शेर हूँ। यह समझ ले पेड़ में धीपल का पेड़ हूँ। यह कहने के पीछे उसका कोई अहंकार नहीं था। वह समझ रहा था

कि तुम मु  
तो मुद्दे के  
कब ऐ  
सुकरात  
दुब के मर  
कानों में ब  
करें, कर  
आक्रोश है  
जब ना  
पहचान ले  
समाया हु  
सीना दिर  
द्रोणाचार्य  
अर्जुन भ  
विल्कुल  
में कहा क  
तुझे मालू  
मित्र नहीं  
आप मैं पू  
अन्दर सम  
उसी क्षण  
जगह पहुँच  
प्राप्ति होने  
सांदीपन स  
करने की  
बने कि उन  
में जोड़ लि  
जान था ही  
वह विश्वा  
शक्ति

में देवन्य वै  
विराटना क  
भर दे और  
जायेगा तो  
आपसे छिप  
कहा क्या

कि तम नुस्खे पहचान लो और आयमी पहचानता नहीं है, जीवित व्यक्ति को पहचानता ही नहीं है क्योंकि हम नुर्दे हैं, तो नुर्दे की पूजा करेंगे। जीवित गुरा की पूजा नहीं कर पाने हम ये हमारी कमी है।

बब ऐसा एक क्षण आयेगा, क्या एक बार किस तरह इसा मर्मीह को सूली पर टांग दिया जायेगा, किर एक बार सूखनाल को जहर दे दिया जायेगा। किर राम को सरयू में डूबने के लिए मानवूर कर दिया जायेगा कि इड के मर जाए, किर कृष्ण को तीर मार करके समाप्त कर दिया जायेगा, किर बुद्ध के जनों में कील ठोक दी जायेगी, किर वह वपिस युग आ जायेगा। ऐसा कब तक हम करेंगे, कब तक महापुरुषों को, उन विद्वानों को कब तक प्रताडित करते रहेंगे। एक आङ्गोश है, आङ्गोश इसलिए है कि आपमें नरन्व है, मगर देवन्व नहीं है।

जब नहीं समझा अर्जुन तो कृष्ण ने एकदम से अपना विराट रूप दिखाया अब पहचान ले, अब देख ले, अब देख ले कि मेरा विराट रूप है, ये पूरा ब्रह्माण्ड मुझमें समाया हुआ है। ये देख ले कि ये सामने महाभारत युद्ध हो रहा है, खोल करके दीना दिखा दिया और अर्जुन ने देखा कि उसमें भीष्म है, कृष्णचार्य है,

ब्रोणचार्य है, अश्वत्थामा है, उसमें दुर्योधन भी है, दुश्मासन भी है।

अर्जुन भी बैठा है रथ पर और सारा दृश्य चल रहा है

बिल्कुल... उसने कहा कि ये सब ब्रह्माण्ड ही नहीं, सारे ब्रह्माण्ड

में कहाँ क्या घटनाएं घट रही हैं न् यहाँ देख ले क्योंकि अब

तुझे मालूम पड़ना चाहिए कि मैं तुम्हारा सारथी, तुम्हारा

मिशन ही हूं। मैं अपने आप में एक अवतार हूं, मैं अपने

आप में पूर्ण पुरुष हूं। मैं अपने आप में पूरा ब्रह्माण्ड

अन्दर समेटे हुए हूं और इसलिए तू मुझे पहचान।

उसी क्षण अर्जुन का मोष्ट समाप्त हुआ और वह उस

जगह पहुंचा, जहाँ अपने आप में एक पूर्णता की

प्राप्ति होने की देखा होती है, क्योंकि कृष्ण ने उस

रांदीपन से अन्दर के पूरे ब्रह्माण्ड को जाग्रत

करने की किया सौख्य नहीं थी। इसलिए राम

भने कि उन्होंने अपने आपको पूर्ण विश्वाभिव

से जोड़ दिया था। विशिष्ट नहीं, विशिष्ट को

जान था ही नहीं निश्चये उसको जात हो सके,

वह विराट पुरुष बन सके।

जोकराचार्य कह रहे हैं कि प्रत्येक व्यक्ति  
में देवन्व है। मगर मुझ वह है जो उसमें  
विराटता को जागृत कर दे। पूरा ब्रह्माण्ड  
भर दे और जब पूरा ब्रह्माण्ड भर दिया  
जायेगा तो संसार की कोई भी घटना  
आपसे छिपी नहीं रह सकती। संसार में  
कहाँ क्या घटना हो रही है अपने आपके

ज्ञात हो जायेगी। अपने अन्दर पूरा विराट रूप दृश्य होगा। फिर अपने आपमें विराट पुरुष बनेगे, आप अवतारी पुरुष बन जाएंगे, नर नहीं रहेंगे। तब आपके शरीर से एक नुगन्ध प्रवाहित होगा।

कहते हैं कृष्ण के शरीर से अष्टगन्ध प्रवाहित होती थी, तो आपके शरीर से

अष्टगन्ध प्रवाहित हो सकती है, अवतार बनने के लिए जरूरी है कि आपको

बह किया, वह चिन्तन, वह विचारधारा और वह प्रयोग समझाया जाए।

कोई सांदीपन बने, कोई पिश्वामित्र बने। वह समझा सकता है। अगर वह

नहीं समझा सकता तो आप एक नर हैं, नर से थोड़ा थेषु बन जायेंगे मगर

अवतार नहीं बन सकते। अवतार नहीं बने तो जीवन का अर्थ ही क्या?

फिर यहां मेरे पास बैठने से फायदा भी क्या हुआ। मैं आपके सामने

बैठा उसका मतलब ही क्या हुआ। मैं भी आपकी प्रसन्ना करके

चला जाऊँगा होगा क्या उससे, फिर मेरे

जीवन का अर्थ मेरा धर्म, मेरा कर्तव्य

क्या होगा अगर मैं आपको नहीं समझा

सकूँगा। मैं जीवन का धर्म, कर्तव्य यह

है कि मैं समझाऊँ बास्तविकता क्या है और

वास्तविकता यह है कि आप निश्चित रूप

में भासान्वय मनुष्य नहीं है यह उतना ही भन्य है जितना

मंगा नहीं सत्य है, हिमालय सत्य है। आपमें देवता ऐ सब गोप खाला बन

गये और उनके चारों तरफ उद्धा हुए। कोई सुवामा बना, कोई

बलराम, कोई राधा बना और खाला बल रूप से जन्म लेकर

उनके चारों तरफ धूमसे रहे, क्योंकि कृष्ण को वे देखता छाड़

नहीं सकते थे। उन्होंने गोप के रूप में जन्म लिया, गोपिका भी

के रूप में जन्म लिया। आपने भी जन्म लिया। एक शिष्य के

रूप में चाहे व्यापारी बने, चाले नीकरी पेशा बने, और

मेरे चारों तरफ बैठा हुए। यूँ मेरे चारों तरफ और डसमें

मैं अपना कोई अंहंकार, अपना कोई बड़प्पन नहीं

दिखा रहा हूँ।

अ.

जी ज्ञान यह कह रहा है तू मुझे पहचान लो कृष्ण कोई अहंकार नहीं बना रहे थे । यदि मैं भी कह रहा हूँ कि हम क्या हैं तो कोई अपना बहुप्रयत्न नहीं दिखा रखा है । आपसे भी ज्ञाना नम्र है । आपसे ज्ञाना सामान्य है । नन्द इस बात को मैं जानता हूँ कि नर को मैं पूर्ण अवतार केवे बना सकता हूँ, यह मैं जानता हूँ । मैं यह जान नकाना हूँ कि आप मैं विश्वासा केरे प्रदर्शित कर दूँ कि आप सीना खोल के दिना सकें, ये पूरा बन्धाएँ मेरे अन्दर समाहित हैं, ये किंवा मैं आपको समझा सकता हूँ । गणेशी के साथ समझा सकता हूँ, ये छोटी बात नहीं है, यह सामान्य बात नहीं है कि एक पानी जिलास पो लिया । वह एक अपने आप मैं एक अद्वितीय घटना है, ऐसी घटना है जो आपके चित्तनी पचास पीढ़ीयों में नहीं हो पाई, ऐसी घटना है अगली पचास पीढ़ीयों द्वारा जारी करने कि आपके अन्दर वह पूर्ण रूप से देवतत्व जागृत हो जायेगा । होश ही और कृष्ण के भी आपके और मेरी तरह ही इष्ट दो ऐसे ही थे दो जांचे थे । कमाक था, डो काम थे । वह अपने आप मैं पचास हाथ बाले नहीं थे ।

हम श्री कृष्ण को कहने हैं, विष्णु ओ कहते हैं चार हाथ थे, चार हाथ का मतलब दो हाथ ना थे, दो और मलाहकार थे । इसलिए चार हाथ मेरे पास भी दो हैं उस साइर होने चाहिए थे बड़ुन अच्छे नियमे कि मैं और उपादा काम कर रहूँ । तोगो ने उनके चार हाथ बना दिये । हमगान जी की एक नानि थी, उसकी एक पूँछ बना दी गयी वह हमगान जी बन गया । और, ऐसा कैसे हो जाय, ऐसा तो कही बाल्मीकि रमायण ने निया नहीं है । बन एक जीति थी, अक्षिक जाति थी, उनम् गाया हुआ मन जी बन्दू द्वारा है, उनका बनना लिया ।

विष्णु इह एक

घटना



चौबि  
नहीं  
दिखा  
करोड  
उस  
रहना  
आप  
टोकत  
का का  
में जान  
होगी  
या मन्त्र  
बात व  
से एक  
और उ  
पूर्णात  
पूर्णता  
प्राप्त व  
कलश  
जिससे  
के सिल  
ही नहीं  
होंगे, वे  
होगा उ  
से नहीं  
आप  
व्यक्तित  
उस व्या  
हो, आ  
नया राम  
आशिक

है, मगर मैं उस प्रसंग पर आ रहा था कि शंकराचार्य इलोक मैं कह रहा था कि गुरु का धर्म कर्तव्य है जीवन मैं एक बार उस शिष्य को एहसास करवा देना चाहिए कि तुम गीदड़ नहीं हो, सही अर्थों मैं शेर हो, सिंह हो, यह तुम्हें बता देना चाहता हूं और तुम अपने आपको गीदड़ समझ रहे हो, डर रहे हो, दुंगा हुंआ कर रहे हो, चुप हो, सब कहते हैं जाते हो, तुम सही अर्थों परें पिंजड़े के तोते हो, जो अन्दर बैठे हो बोल मिठु 'राम राम' और तुम 'राम-राम' बोलते हो, इसलिए कि तुम्हें हरी मिर्च खाने को मिल जाती है, अनार के दाने खाने को मिल जाते हैं।

आपने हवा मैं उहना सीखा नहीं। उस आकाश मैं कैसे उड़ते हैं वैसे तोते आप नहीं बन पाये। उड़ते हुए मानसरोवर तक कैसे पहुंचते हैं वह आप नहीं देख पाये। मानसरोवर का जल पीने लायक कैसा है वह आप नहीं देख पाय, क्योंकि आपके पंखों मैं वह ताकत यी नहीं पिंजड़ों मैं बन्द रहने की बजह से। पंख मर गये और पिंजड़ मैं कोई तोता हो और पांच साल बाद उसे पिंजड़ से बाहर निकालते हैं, फिर एक सेकेण्ट के बाद अन्दर घुस जायेगा। क्योंकि उसमें इतना डर समागया है कि कोई बिल्ली मुझे खा जायेगी और आप भी डर गये हैं कि मैं मर जाऊंगा तो घर मैं घुस कर बैठ गये क्योंकि घर मैं इनार का दाना मिल जाता है, हरी मिर्च मिल जाती है, एक पत्नी मिल जाती है, दो तीन बेटे मिल जाते हैं। और सब चाहते हैं ये पिंजड़े के अंदर रहे तो अच्छा, नहीं तो उठ जायेगा बहुत मुश्किल कर देगा। पिंजड़ मैं ही ठीक है, मैं बोलूंगा बोल मिठू राम राम, राम राम बोलता रहेगा।

उन्होंने भी आपको कैद कर दिया है और आप भी कैद मैं बहुत खुश हैं जैसे नोता उस पिंजड़े मैं वापिस जल्दी घुस जाता है वैसे ही मैं यहां आपको छोड़ूंगा वापिस पिंजड़े मैं घुस जाएगे। शंकराचार्य कह रहे हैं ऐसा जीवन कब तक चलता रहेगा तुम्हारा, क्यों चलता रहेगा। अगर ऐसा कोई गुरु तुम्हारे पास नहीं हो या सांदीपन नहीं हो, विश्वामित्र नहीं हो तो वह जान आपको नहीं दे पायेगा। क्योंकि जब उसको खुद वह जान नहीं है तो वह दूसरों को कहां से देगा। मगर जीवन का आनन्द वहां है कि आपके शरीर से सुगन्ध प्रवाहित हो, पास मैं से निकले तो एहसास करै कि इसमें यह सुगन्ध क्या है, ये हीना, ये शुलाब, ये केवड़ा ये सबका मिला हुआ अष्टगन्ध सा है, पास मैं निकलो तो एक अनीब सी सुगन्ध महसूस होती है। आप के खेड़े से अपूर्व आभा निकलती है, आपके नेत्रों मैं ज्वाला सी बनती है। आप कोधित होतो सामने बाला भस्म हो जाता है। आप आखों से गोर से बखते हों तो पाणल की तरह खींचा हुआ चला आता है, एक सम्मोहन सा बन जाता है, आखों मैं ऐसा अकर्षण हो जाता है कि वह आपके पास लिपट जाता है, ये क्या चीज़ है, उस अन्दर के ब्रह्माण्ड के स्वर का एक बिन्दु है। कृष्ण

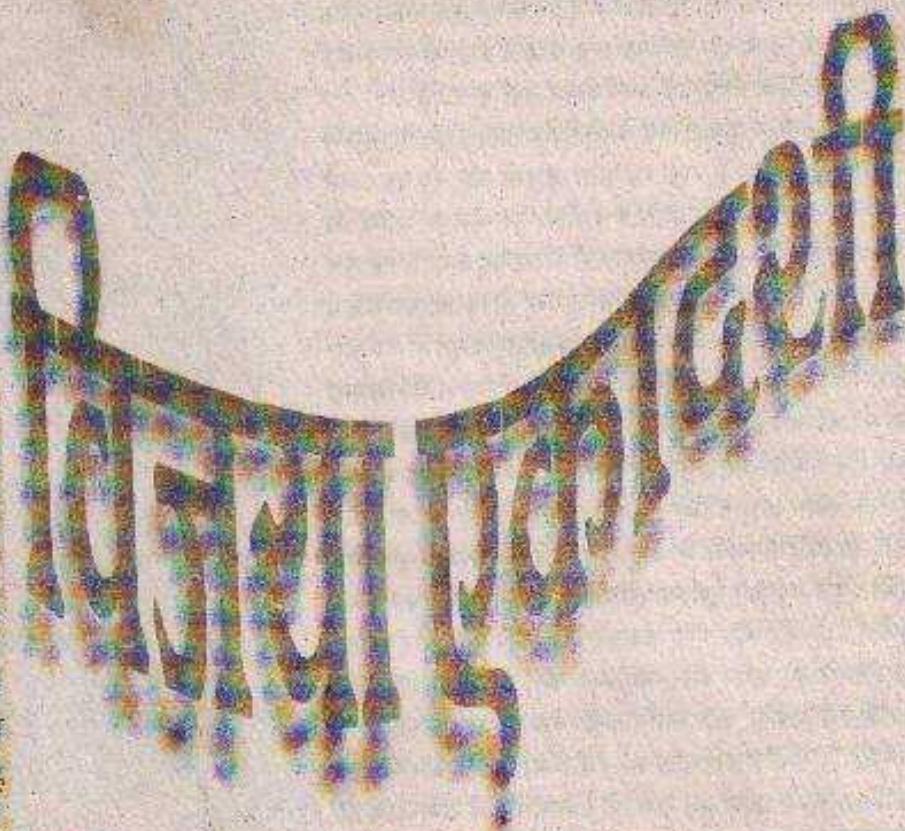
देविम घण्टे ब्रह्माण्ड सूप लेकर नहीं धूमते रहे। वह तो अर्जुन  
नहीं माना तो बताया। ये नहीं कि वे हर बार खोल खोल करके  
दिल्लाले रहे कि ये रहा ब्रह्माण्ड सूप, देख ले ब्रह्माण्ड सूप। कोई  
करोड़पति होता तो करोड़ सूपये लेकर नहीं धूमता है।

उस इलोक में जाकर आचार्य कहते हैं कि जीवित गुरु के पास में  
रहना बहुत कठिन है, नहीं रह पाता आदमी और रहे वह अपने  
आप में सौभाग्यशाली होता है क्योंकि गुरु बराबर शिष्य को  
ठोकता रहता है क्योंकि उसको उस जगह पहुंचाना है वह गुरु  
का कर्तव्य धर्म है। जब उस जगह पहुंचेगा तो विराट अपने आप  
में जागृत हो जायेगा। आपके अन्दर विराटता जागृत हो जायेगी,  
होगी मंत्रों के माध्यम से। मैंने मंत्रों की अभी परिभाषा दी। साधना  
या मंत्र का अर्थ है कि हम किसी देवता को आंखों से देख सकेंगे,  
बात कर सकेंगे। देवता जीवित जागृत है, हम भी उन देवताओं में  
से एक देवता बनें और बनें, पूर्ण ब्रह्म बनें और पूर्णता प्राप्त करें  
और जो श्लोक यजुर्वेद के अंत में कहा है कि 'पूर्णमव पूर्ण भिरं  
पूर्णत् पूर्ण मदुच्चते पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवा शिष्यते॥' वह  
पूर्णता प्राप्त करें और पूर्ण अवतारी बनें। नर पेदा और पूर्णता  
प्राप्त करते हुए अमर बनें। अमृतमय बनें, हमारे अन्दर अमृत  
कलश स्थापित हों, और हमारे अन्दर ब्रह्माण्ड स्थापित हो जाएं  
जिससे कि हम बिना हिचकिचाहट के बिना, किसी की सहायता  
के सिद्धांशम में प्रवेश कर सकें और बीच में कोई ठोक-ठोक हो  
ही नहीं। आप नर नहीं होंगे उस समय, आप उस समय देवत्व  
होंगे, देवता होंगे, उस समय आपके अन्दर एक ब्रह्माण्ड जागृत  
होगा और होगा मंत्रों के माध्यम से। कोई लकड़ी को ठोकर मारने  
से नहीं होगा या नाच गाने से नहीं होगा।

आप में वह जान, वह चेतना आये कि आप एक जीवित जागृत  
व्यक्तित्व को पहचान सको, उसे अपने अन्दर समाहित कर सको,  
उस व्यक्तित्व के साथ पूर्ण आकाश मण्डल में एक विराटता जागृत  
हो, आप मैं एक सुगन्ध प्रवाहित हो, आगे आने वाले पीढ़ी को  
नया रास्ता दिखा सको, ऐसा ही मेरा आप सभी के लिए इवय से  
आशिर्वाद है।

-सदगुरु देव परमहंस निखिलेश्वानन्द जी

मानव कई छोटी-बड़ी प्रेशालियों में उलझकर अपने महत्वपूर्ण क्षणों को व्यर्थ गंवा देता है, जिस कारण वह डिक्षावादी, भीरस व अभाव सुन्न जीवन जीने पर मजबूर हो जाता है। विजया एकादशी प्रथों को बद्धजन कर ल्यक्ति अपने जीवन के समस्त स्तरों को पूर्ण करने में सक्षम एवं समर्थ हो जाता है,



विजया एकादशी यानि विजय प्राप्ति पर्व, जो देता है उत्तिः, सम्पन्नता, पूर्णता और श्रेष्ठता। आज के युग में प्रत्येक व्यक्ति का जीवन विभिन्न समस्याओं, बाधाओं, कष्टों आदि से घिरा रहता है। वह हर क्षण परेशान, चिन्तित व दुखी सा दिखाई देता है, और उन दुखों से मुक्ति पाने के लिए वह अनेकोंके उपाय कर डालता है, परंतु किसी भी कार्य को करने से पूर्व वह हर क्षण आशंकित सा विश्वाद देना है, उसके मन में किसी भी कार्य को सम्पन्न करने से पहले यह विचार अवश्य आता है- क्या वह कार्य सम्पन्न होगा? क्या इस कार्य में मुझे सफलता मिलेगी? ऐसे अनेक प्रश्न उसके मानस-पटल पर अपना आधिपत्य पहले से ही जमा कर देते जाते हैं,

जिसका परिणाम यह होता है कि वह कार्य प्रारंभ करने से पूर्व ही निराश हो जाने के कारण उसमें पूर्णरूप न्यूफलन नहीं कर पाता।

धन, वैभव, मान, प्रतिष्ठा, व्यापार आदि सभी क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति हर क्षण प्रयत्नरत रहता है, किन्तु सफलता उसके हाथ नहीं लगती। साधारणतः आम जीवन में तो प्रत्येक व्यक्ति ऐसी ही समस्याओं व बाधाओं से घर्षन रहता है, किन्तु इन सभी कष्टों से, इन सभी बाधाओं से उसे छुटकारा मिल सकता है, यदि उसे उस क्षण विशेष में उस दुर्लभ साधना का ज्ञान हो, जिसे 'विजया एकादशी प्रथों' कहते हैं।

वह जीवन के सभी क्षेत्रों में विजय प्राप्त करने

का उत्तमात्म प्रयोग है, यदि व्यक्ति को इस प्रयोग का ज्ञान हो, तो वह अपने अभावयुक्त जीवन से बचने की जिजीत पा सकता है। यह एक दुर्लभ एवं अहंकारी प्रयोग है, जिसे प्रत्येक व्यक्ति को सम्भव नहीं हो सकता।

जीवन का महत्वात्म सुख और शांति के साथ भवन्नय उत्तीत करना होता है, हम अपने जीवन में जितना अधिकतम करें उतना कला हम प्राप्त हो जाते, पर अधिकतर ऐसा नहीं होता, हम अपने जीवन में जीतने हैं कि बहुत अधिक प्रशिक्षण करने पर भी उन्हीं अधिक सफलता हमें प्राप्त नहीं हो पाती।

ज्ञापाल में हम दिन-रात महनत करते रहते हैं, और समय अपने पर उसका जो कुछ लाभ प्राप्त होना चाहिए, वह प्राप्त नहीं हो पाता; हम अपने लक्ष्य से परिवार में कठोर कल्पना मन-मुट्ठी नहीं बाहने, परन्तु प्रयत्न करने के बावजूद भी परिवार में जो सुख, शांति और आनन्द होना चाहिए, वह नहीं हो पाता।

विजय एकादशी प्रयोग को सम्पन्न कर व्यक्ति अपने जीवन के सम्पूर्ण मनोरथों को पूर्ण करने में सक्षम एवं समर्थ हो पाता है। यथों के अनुसार यदि व्यक्ति विजय एकादशी के दिन इस प्रयोग को सम्पन्न कर लेता है, तो उसे सफलता मिलती ही है, क्योंकि विजय एकादशी अपने भाग में ऐसा ही श्रेष्ठ क्षण है, जिसका नाम कोई भी व्यक्ति या साधक पूर्णतः उत्तम सकता है।

आज मानव कई छोटी-बड़ी परेशानियों में उलझकर अपने महत्वपूर्ण क्षणों को व्यर्थ गंवा बैठता है, जिस कारण वह निराशावादी, नीरस व अभाव युक्त जीवन जीने पर मजबूर हो जाता है, जैसे-

१. यदि व्यक्ति निधन हो तथा आर्थिक दृष्टि से तुऱही व पीड़ित हो।

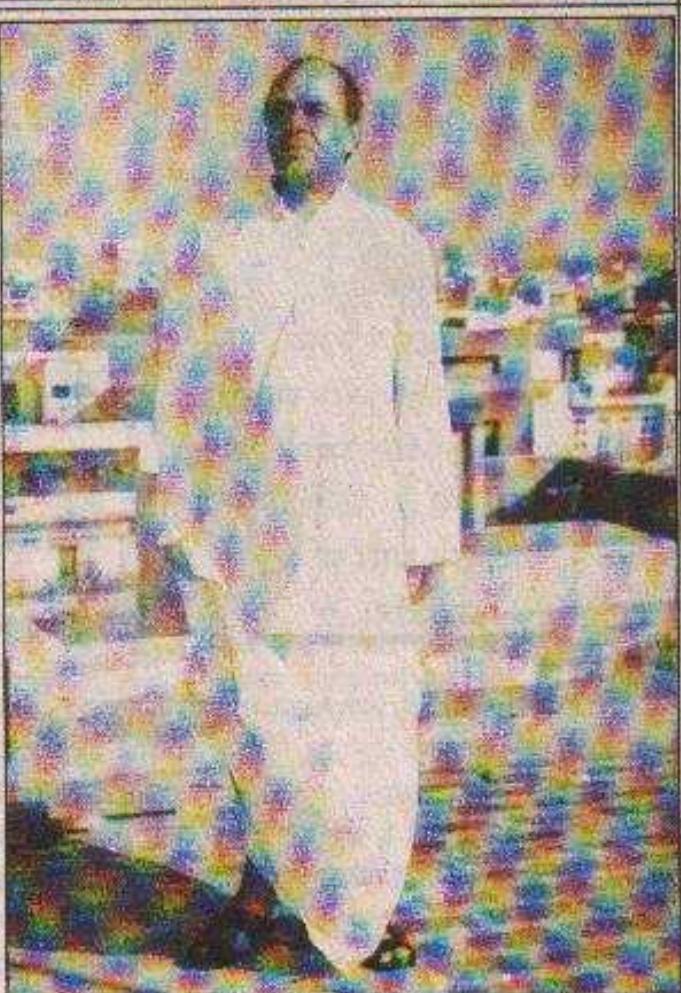
२. यदि वह दीमार हो, उसका स्वास्थ्य टीक न रहता हो।

३. किसी तनाव से चिन्नाग्रस्त होने के कारण यदि व्यक्ति

आर-बार आत्महत्या करने की सोच रहा हो।

४. यदि विवाह सम्पन्न न हो रहा हो।

५. विवाह सम्पन्न करने के पश्चात् यदि सन्नान उत्पन्न न हो रहा हो।



६. यदि परीक्षा में या जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त न हो रही हो।

७. पुत्र या पुत्री आजाकारी न हो।

८. यदि आपका कोई शत्रु या अकाशण ही किसी से शत्रुता बढ़ जाए अथवा हर समय शत्रुभय बना रहता हो।

९. यदि समाज में कोई सम्माननीय स्थान प्राप्त न हो रहा हो।

१०. यदि मकान, नर्मान-जायदाद आदि के लिए किसी विपन्नी परेशानी का सामना करना पड़ रहा हो।

११. यदि बहुत प्रयत्न करने पर भी आपके कार्य सफल नहीं हो रहे हों।

१२. यदि राज्य की तरफ से बगबर अड़चने आ रही हों, और प्रयत्न करने पर भी अधिकारियों से मनमेन दूर नहीं हो रहे हों।

१३. यदि नोकरी में उच्चति व प्रमोशन न मिल रही हो।

जीवन के प्रत्येक पक्ष,  
 प्रत्येक शेत्र में विजय प्राप्त कर  
 सुख-तैभत, पद-प्राप्तेषा  
 प्राप्त करना प्रत्येक साधक  
 का आधिकार है...  
 लकिल यह सम्भव है  
 उस विशेष क्षण को पकड़  
 कर उस साधना को संपल कर लेठे  
 के द्वारा जो कि है सभी प्रकार से  
 विजय प्राप्त कर  
 लेते वैं...

१४. जीवन में बहुत बड़ा भाग व्यनीत करने पर भी भाव्यवय नहीं हो रहा हो, हर क्षण बाधाओं का सामना करना पड़ रहा हो।

इस प्रकार की समस्त बाधाओं, अड्चनों का निराकरण इस विजया एकादशी प्रयोग से ही सम्भव है, जो धन, यश, मान, पुत्र, पौत्र, व्यापार, नौकरी, विवाह आदि समस्याओं को दूर करने में सक्षम है।

वास्तव में ही यह एक अद्वितीय एवं अचूक प्रयोग है, जिसे सम्पन्न कर व्यक्ति शीघ्र ही लाभ प्राप्त कर सकता है। यह प्रयोग पूर्ण, प्रामाणिक है, क्योंकि पूर्ण गुरुदेव द्वारा अपने कुछ शिष्यों को दिया गया यह अद्वितीय प्रयोग अपनी प्रामाणिकता को सिद्ध करता है, जिसे सम्पन्न कर उन शिष्यों या साधकों ने महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की, और आज भी जीवन के प्रत्येक पक्ष, प्रत्येक शेत्र में विजय प्राप्त कर वे सुख-तैभत, पद-प्राप्ति, पुत्र-पौत्र सभी कुछ प्राप्त कर एक श्रेष्ठ व पूर्ण सम्पन्नता तुल्य जीवन का निर्माण करने में सक्षम हो सके हैं।

विजया एकादशी तो समस्त कार्यों में विजय प्रदान करने वाली एकादशी है। यह सोभाग्यवायक विपर २३.२.२००२ को एक विशेष एवं के रूप में आपके सामने उपस्थित हो रहा है, यदि उसका राधनात्मक दृष्टि से उचित प्रयोग किया जाए, तो यह प्रयोग विशेष उत्तमिदायक एवं सफलतादायक है।

इस प्रयोग को कोई भी व्यक्ति अपने घर पर बैठकर सम्पन्न

कर सकता है। यह एक सहज सफलतादायक प्रयोग है, जिससे साधक जीवन के प्रत्येक पक्ष, प्रत्येक समस्या पर विजय प्राप्त कर एक सुखी जीवन का निर्माण कर सकता है।

#### प्रयोग विधि

इस प्रयोग को सम्पन्न करने के लिए श्रेष्ठ तिथि फाल्गुन कृष्ण पक्ष की एकादशी, तदनुसार २३.२.२००२ है। यह राशिकालीन साधना है, इसमें साधक या साधिका स्नान कर, शुद्ध पीले वस्त्र धारण कर, पीले आसन पर पश्चिम की ओर मुख कर बैठ जाएं, इसके पश्चात ब्राजीट के ऊपर पीला वस्त्र बिछाकर, उस पर कुंकुम से अष्टश्ल कमल अंकित कर विजया यंत्र को उस पर रख दें, फिर उस यंत्र पर अष्टश्ल से ११ विन्दियां लगाएं तथा ११ घुंघचियों को अर्द्धचन्द्राकार रूप में यंत्र के सामने रख दें, इसके बाद कुंकुम, अक्षत व ११ पीले पुष्प उस यंत्र व घुंघचियों के समक्ष अर्पित कर दें, तथा एक धी का दीपक यंत्र के सामने प्रज्वलित कर दें, ध्यान रखें कि दीपक पूरे साधनाकाल में जलता रहे, फिर इसके पश्चात् बेसन से बने भोग को नैवेद्य के रूप में समर्पित करें।

इस प्रयोग को सम्पन्न करने के लिए किसी भी प्रकार के माला की कोई आवश्यकता नहीं है, केवल ३० मिनट तक शांतचित्त होकर मिन मंत्र का जप करें-

#### मंत्र

ॐ श्री हौं विजयाय नमः

मंत्र-जप करने के पश्चात् गुरु आरती सम्पन्न करें तथा बेसन से बना प्रसाद वितरित करें।

इस प्रकार पूर्ण विधि-विधान पूर्वक पूजन सम्पन्न कर, पूरे परिवार के साथ प्रसाद श्रान्ति कर भोजन कर लें। अगले दिन प्रातःकाल उठकर साधक उस यंत्र का पुनः संक्षिप्त पूजन करें, जिस वस्त्र पर यंत्र स्थापित किया है, उसी में यंत्र और घुंघचों को लपेटकर उसे मौली से बांध दें, फिर किसी नदी में या किसी पवित्र सरोवर में उस पोटली को विसर्जित कर दें।

आप अपनेदो मित्रों को पत्रिका सदस्य बनाए तथा कार्ड के पर अपने दोनों मित्र का पता लिखकर श्रेष्ठो कार्ड मिलने पर रु. ४१०/- की वी.पी.पी. द्वारा आपको इस साधना की मंत्र सिद्ध प्राप्ति भास्त्री भ्रेज देंगे तथा दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पत्रिका भेजी जाएगी।

# धर्म विषय में व्यवसाय भाव

धनवान होकर भी दुखा, नेधन और झापड़ा में रहकर भी आमदनों के सबध में शो सप्तम भाव से विचार किया जाता है। नुखों। कारण प्रकृति में धूले हुए सुख-दुख की अनुभूति से अष्टमभाव रिश्वत, लाटरी छारा धन लाभ, गढ़ हुए धन का नानव का मन भी अचूता नहीं है। कठोपनिषद यही कहता है। लाभ अथवा पग्स्त्री आदि से होने वाले धन-लाभ की सूचना व्यक्ति को व्यापार या नीकरी किसमें सफलता मिलेगी? देता है। नवम भाव भाग्यशाली होने के बारे में तथा दशम भाव व्यवसाय का चुनाव करते समय वह आम समस्या होती है। ऐश्वर्य, सत्ताधिकार, राज सम्मान, उपजीविका, धन्धे, नीकरी नीकरी करने वाला व्यक्ति उच्च अधिकारी तो हो सकता है के संबंध में जानकारी देता है। धन-हानि के संबंध में द्वावश परंतु आमदनों निवित होती है। जबकि व्यापारी हनारों, लाखों भाव से विचार करना चाहिए। एक ही समय में कमा लेता है। व्यापार की सफलता के लिए लग्न तथा चंद्रमा इन दोनों के मध्य में जो बली हो एवं द्वितीय, पंचम, नवम, दशम और एकादश भाव तथा उन भावों उससे जो दशम स्थान हो वह कर्म या व्यवसाय का घर है उसी में यहाँ की स्थिति राग्यपति की सूचक है। जिनके उपरोक्त पांचों के स्वभाव के समान मनुष्य कर्म करता है। दशम भाव के स्वामी भाव निर्बल हों तो उन्हें नीकरी मिलती है।

द्वितीय भाव जातक की आर्थिक स्थिति को विशेष रूप से कर्म स्थान अपने स्वामी तथा शुभग्रह से युक्त य दृष्ट हो तो उस स्पष्ट करता है। द्वितीय भाव की स्थिति से विशेष जानकारी मनुष्य की सुखजनक जीविका होती है। प्राप की जाती है। धन लाभ का तरीका क्या होगा? एकादश लग्न व चंद्रमा से दशम में भूर्यादि ग्रह हो तो पिना से या माव से विचार करना चाहिए। एकादश भाव आय (आमदनी) पिना के व्यवसाय से धन की प्राप्ति होती है। उसी प्रकार चंद्र को बताता है। सप्तमभाव जातक की दैनिक आमदनी तथा डो तो माता से, भौम हो तो शत्रु से, बुध डो तो मित्र से, गुरु हो लाजेश्वारी के विषय में प्रकाश ढालता है तथा नवम भाव जातक तो भाई से, शुक्र हो तो स्त्री से, शनि हो तो नीकर से धन की के भाग्यशाली अथवा भाग्यहीन होने की सूचना देता है। प्राप्ति होती है। लग्न चंद्र तथा सूर्य इन तीनों के मध्य जो अधिक आकस्मिक लाभ के संबंध में विचार करते समय चतुर्थ, पंचम बली हो उससे दशम में जो राशि हो उसका स्वामी जिस ग्रह के तथा अष्टम भाव की स्थितियों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। नवांश में हो उसकी वृत्ति अनुसार जीविका होती है। अर्थात्

चतुर्थ भाव जातक की स्थायी, पैतृक संपत्ति के संबंध में सूर्य की वृत्ति से चिकित्सा, इगड़ा, जल, धान्य, सुवर्ण, मोती, बताता है। पंचम भाव लाटरी, आकस्मिक धन-लाभ के विषय मंत्रोपदेश, मनोरंजन आदि से। चंद्रमा की वृत्ति से वस्त्र, राजा में सूचित करता है। सप्तमभाव साङ्केतिक के व्यवसाय तथा तथा स्त्रियों के आश्रय ये, मिठ्ठी के काम, खेती के कार्य से सरुरात द्वारा होने वाले धन लाभ का सूचक है। दैनिक जीविका होती है। मंगल की वृत्ति से दूष तथा प्रहर, अग्नि,

साहस, धनु, कलह की वृत्ति, चोर वृत्ति का पता लगता है। बृद्ध की वृत्ति से काव्यज्ञान, शास्त्र, वेदान्तमार्ग, पुरोहितादि, जप, वेदपाठ, शिल्प कलादि। गुरु की वृत्ति से पुराण, शास्त्र, नीति, धर्मपवित्र, अध्यापन मार्ग द्वारा जीविका होती है। शुक्र के नवांश में मणिनय, वाहन, चावल, तमक, स्त्री, गाय आदि। शनि की वृत्ति में घूमने-फिलने, नीचे कार्य, लकड़ी, शिल्प, परिश्रम, चार वहन से जीविका होती है।

व्यवसाय या कर्म, आज्ञा, कृषि, वित्त, आजीविका, वश, व्यापार, पत्ता प्राप्ति, पद प्राप्ति, भान, वश, संन्यास, आज्ञम्, आकाश, प्रवास ऋण, विज्ञान, विद्या, वस्त्र, राज-सम्मान, दास आदि इन सभी का विचार दशम भाव द्वारा करें। उपरोक्त सभी बातों का विचार करने से मात्र बृद्ध, गुरु, रवि तथा दशमेश से भी विचार करें। मंगल स्वराजि सेष या वृश्चिक का हो, वह शुक्र बृद्ध से युक्त हो एवं दशम स्थान उस मंगल से दृष्ट हो तो अपने कमंकल की स्वल्पता होनी चाहिए। पष्टम, द्वादश या अष्टम में शुक्र, बृद्ध, गुरु हो और वे पाप ग्रह से दृष्ट हो तो उक्त योगों में नित अमों का नाश होता है।

शहों का फल विचारते समय ग्रह के अंश उच्च राशि व नीच राशि का भी ध्यान रखना चाहिए। जो ग्रह सूर्य के साथ हो सामान्यतः उन्हें अस्त ही भाना जाता है। पवित्रा में वर्तमान में दशा, अन्नदेशा तथा प्रयन्तरदेश का भी ध्यान रखना चाहिए। क्योंकि ग्रह अपनी वशा तथा अन्तर्देश में अधिक कल्पवायी होते हैं।

राशियां तीन प्रकार की होती हैं। चर राशियां-मेष, कर्क, तुला, मकर। स्थिर राशियां-वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ। डिस्त्रिब्याव राशियां-मिथुन, कन्या, धनु, मीन। इन राशियों से हम व्यवसाय आदि की गणना करते हैं।

यदि जन्मकुंडली में चर राशियां ग्रह अधिक संख्या में हो तो जातक कोई स्वतंत्र व्यवसाय करने वाला, महत्वाकांक्षी होता है। वह अपनी योग्यता, व्यवहार एवं कृशलताओं के आधार पर अपने भ्रते में सर्वोच्च स्थान पाने के लिए प्रयत्नशील रहता है। जिस व्यवसाय में सदब्यवहार, विनम्रता, युक्ति आदि की विशेष आवश्यकता पड़ती हो, वे उसके लिए लाभवादी सिद्ध होते हैं।

यदि जन्मकुंडली में स्थिर राशियां ग्रह अधिक संख्या में हो तो जातक धैर्यवान, सहनशील तथा दृढ़-विचरों का होता है। नीति नौकरी में इन सब गुणों की अधिक आवश्यकता पड़ती है। चिकित्सा कार्य, सरकारी नौकरी आदि, उनमें पेसे शहों जातक को विशेष सफलता मिलती है।

यदि जन्मकुंडली में डिस्त्रिब्याव राशियां ग्रह अधिक संख्या में हो तो जातक को व्यवसाय की उपेक्षा अध्यापकी, सूनीमी, एजेंसी आदि के कार्यों तथा नौकरियों में अधिक सफलता मिलती है क्योंकि डिस्त्रिब्याव राशियां ग्रहों में चर एवं स्थिर दोनों प्रकार के शहों के सम्मिलित गुण दाये जाते हैं।

यदि नीनों प्रकार की राशियों में नो दो में वरावर की संख्या में शह हो तथा तीसरी प्रकार की राशि में कम यह हो तो अधिक शहों वाली दोनों राशियों के बलाबल को ऐसकर ही जातक के व्यवसाय अथवा नौकरी आदि के स्वधर्म में विचार करना चाहिए।

यदि लग्न तथा चन्द्र राशि दोनों अलग-अलग हों तो मिश्रित कल प्राप्त होगा। लग्न पर निस ग्रह की दृष्टि हो उसका प्रभाव भी दृष्टिगोचर होगा। राशि तथा शहों के बलाबल भी फलदेश में अतर ला देते हैं।

यदि दशम स्थान में कोई ग्रह न हो तो दशमेश के नवाशेश द्वारा धन प्राप्ति के संबंध में विचार करना चाहिए। दशमेश के नवाशेश विभिन्न शहों का फल, यदि सूर्य हो तो व्यवसाय, चिकित्सा युद्ध कार्य ठेकदारी से। यदि चन्द्रमा हो तो जलीय पदार्थ, वस्त्र आदि के व्यवसाय से। यदि मंगल हो तो धान, शहव, मधोनरी से। यदि बृद्ध हो तो लेखन, व्याख्यान, शिल्प से। यदि गुरु हो तो धार्मिक अध्यवाच्याय संबंधी कार्य से। यदि शुक्र हो तो पशु वाहन, स्त्री से। यदि शनि हो तो मंजदूर, मनकूरी आम से।

### शहों के आधार पर आजीविका

सूर्य: सब शहों का तेजस्वी सूर्य राजा है। यदि सूर्य व्यवसाय का कारक हो तो जातक उच्च पद सेवा का व्यवसाय करना है। सूर्य का संबंध राज्य से है, उसका संबंध दूरवर्ती ज्यान से भी है। ऐसा जातक अधिक पूजी लगाकर व्यवसाय करता है। जातक शासनाधिकारी या उच्च पद पर प्रतिष्ठित होता है। सूर्य-शनि या राहु से संबंध रखता हो तो चिकित्सक बनता है यदि सूर्य का संबंध गुरु से हो तो धमान्नार्य, पुरारी आदि होता है।

चन्द्र: जल तत्व प्रधान ग्रह है इससे संबंधित जीविका, पेय पदार्थ, जल, नाविक आदि होती है। चन्द्र का संबंध राहु से होने पर शराब या मालक औषधियां। यदि चन्द्र का संबंध शुक्र से हो तो सुगंध व तेल। चन्द्र का बृद्ध से संबंध होने पर खाद्य पदार्थ का व्यवसाय होता है। चन्द्र गुरु का संबंध चीनी, निराई आदि से होता है। चन्द्र स्त्री ग्रह है, शुक्र-शनि-बृद्ध स्त्री ग्रह से संबंध होने के कारण जातक फिल्म लाइन से जुड़ जाता है। चन्द्र अध्याव जैसे चन्द्र का संबंध होने पर जातक नीचे अमर्त से धन उपजेन करता है।

शेष पृष्ठ 79 पर

जहाँ  
स्वरूप  
विशेष  
कि सा  
बहुत  
साधना  
के कार  
है, जिस  
जीव  
प्राप्त रहे  
मानसि  
इसका  
धार्य क  
लीन हो  
साधना  
जो क  
रता है

वीरता, तेज, बल, पराक्रम की प्राप्ति

# हनुमान साधना

के

## होती ही है

जो कबलतम कप के अवधि की जा सकती है  
प्रत्येक व्यक्ति के लिए अत्यन्त श्रेष्ठ, उपयोगी  
तथा अनिवार्य काश्मा

जहां भक्ति है, वहीं ज्ञान का प्रकाश ही है, वहीं जागना का है, क्योंकि उसमें अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की चाहत बन रखत्य भी है, साधना किस रूप में की जाएः इस विषय में जाती है, और जिसकी साधना करता है उसे प्रसन्न होना ही विशेष मत मतान्तर हो सकते हैं, लेकिन इतना तो सिद्ध है, पड़ता है।

कि साधना का बाण जब छूटता है तो वह लक्ष्य की ओर ही बढ़ता है, यह तो साधक की भावना, उसकी भक्ति, उसकी साधना, गुरु-कृपा पर निर्भर करता है, कि वह अपनी साधना के कारण, अपने साधना ब्राणों में कितनी तीव्रता ला सकता है, जिससे उसका लक्ष्य शीघ्र प्राप्त हो।

जीवन में हर कोई चाहता है, कि उसे ऐसा शक्ति अवधार प्राप्त रहे- जिससे कि हर संकट के समय उसे सहायता चाहे मानसिक हो अथवा किसी अन्य माध्यम से प्राप्त हो, और इसका सबसे बड़ा उपाय साधना ही है, तथा साधना में सेवा-

भाव का होना आवश्यक है, जब तक आप अपनी साधना में

लीन होने का भाव उत्पन्न नहीं कर देते, शक्ति के वातावरण में

साधना करते हैं- तो किर सफलता कैसे मिल सकती है?

जो सेवा भाव से कार्य करता है, भक्ति करता है, साधना

करता है वह अपने आपको सामान्य स्तर से ऊपर उठा देता

यदि यह कहा जाए कि पूरे भारतवर्ष में देवी-देवताओं के मंदिर और उनके स्थानों की भरभार ही है, तो कोई अनिश्चयोक्ति नहीं होगी, कुछ मंदिर तो इतने अधिक प्राचीन हैं, कि उस समय की सभ्यता, जीवन-धारा, आदर्श एवं उनके सुख और वैभव को देख कर आश्चर्य ही होता है, लेकिन आज स्थिति

बिलकुल विपरीत होती जा रही है, मंदिरों की जगह एक प्रकार से दिखावटी महलों का निर्माण किया जाता है, ऐसे स्थानों पर पूजा कर क्या साधना के परमत्व की अनुभूति ही सकती है?

पूर्वजों को कम बुद्धिमान मानने वाले, आज के तर्क बुद्धि रखने वाले व्यक्ति स्वयं ही वास्तविक रूप से मूर्ख हैं, भारत लीन होने का भाव उत्पन्न नहीं कर देते, शक्ति के वातावरण में वर्ष के प्रत्येक गांव में शिव मंदिर के साथ-साथ हनुमान मंदिर अथवा हनुमान जी का स्थान अवश्य ही मिलता है, लोक जीवन में हनुमान जी को ज्यान प्राप्त है, वह किसी अन्य देवी-

देवता की प्राप्त नहीं है, इसका कारण यह है, कि हनुमान देव



इतने अधिक भरत, सन्ति, कृपालु, बल, बुद्धि औरींगिक निरोगन के देव हैं जिन्हें हर साधक हर व्यक्ति अपने जीवन में सहन हीं आदर्श बना सकता है।

हनुमान जी के बारे में दो चारों विशेष सिद्ध हैं, सर्वप्रथम तो हनुमान-सद्गुर्भास्तुति द्वारा के अवतार है और दूसरा यह पवन पुत्र है, हनुमान पूजन साधना से सद्गुरु द्वारा दी गयी है, श्री हनुमान यीश्वर, पराक्रम, दक्षता के प्रतीक हैं, बार शक्ति, बल, वीर्य, ओज, स्फुर्ति, वैद्य, उत्तम, निर्भयता, विरोधता, विवेक, वाक्पटुना हल्लादि महाशणों के प्रदाता हैं, इन कालणों जो साधक, जो व्यक्ति चाहे उसे शास्त्रों का ज्ञान हो या न हो, अपनी बुद्धि के अनुसार पूर्ण सेवा भाव से यदि हनुमान साधना भक्तिरम्भन स्वरूप हो तो उसे ये सभी गुण निश्चय ही प्राप्त होते हैं, शक्ति कितनी है, वह समर्पण भाव ही साधक की इस विशेष साधना बाहर से प्राप्त नहीं की जा सकती और न ही बाहर में मिलती है, शक्ति-स्रोत तो आपके स्वरूप के भीतर हुआ है, उसे जानन करने की आवश्यकता है, निससे मन के साथ-साथ शरीर भी

सम्पूर्ण गुण 'हनुमत उपासना कल्पद्रुम' है, जिसमें हनुमान साधना विधि विधान जादि से सम्बोधित सम्पूर्ण विवरण सर्वोन्म स्वरूप से लिखा गया है, पवन-पुत्र होने के कारण हनुमान

जी की इनियाँ भन्नन्त विशाल एवं प्रबल मानी जाती हैं, और यहो पवन स्वरूप को अपनी साधना में प्राप्त होता है। अन्य-अलग शास्त्रों में इस विशेष साधना का अलग-अलग स्वरूप मिलता है, इस सम्बंध में वास्तविक स्वरूप पाठकों के लिए सम्पूर्ण स्वरूप से प्रस्तुत किया जा रहा है।

### हनुमान पूजा विधान

हनुमान पूजा साधना में सबसे विशेष बात यह है कि साधक, साधना में भावना केरी सखना है, और उसमें समर्पण भाव करता है, शक्ति कितनी है, वह समर्पण भाव ही साधक की इस विशेष साधना में तत्काल फल प्रदान करता है, क्योंकि हनुमान-कृपा, भैवा है, शक्ति-स्रोत तो आपके स्वरूप के भीतर हुआ है, उसे जानन और समर्पण से ही प्राप्त होता है।

ऐसा नेतृत्वी, बलवान और निरोगी हो जाए कि आत्मविद्वास्त्र का अमृत प्याला, शक्ति का सीन्दर्य, जान की गंगा, वैर्य का समावर, सररवती का सिद्धि आपमें छलकने लगे-यही तो भक्ति, साधना का परन्तु स्वरूप है।

### हनुमत देव-मूल स्वरूप

हनुमान मूल रूप से भगवान शंकर के अवतार हैं, क्योंकि जब भगवान विष्णु द्वारा राम का स्वरूप घटान कर अवतार लिया गया तो भगवान शंकर ने हनुमान के रूप में अवतार लिया, इस प्रकार विष्णु एवं ऋषि के प्रसाद से ही विशेष माया क्रियाएं पूर्ण हो सकीं, मूलतः हनुमान वीर भाव के साथ-साथ सेवा तथा आदर्श का स्वरूप मूल्य स्वरूप से है, ऐसा अपने कार्यों में पूर्णांत्र प्राप्त करने के लिए निस समर्पण भाव का हनुमान स्वरूप में वर्णन मिलता है, वही समर्पण-स्वरूप साधक द्वारा घटान के ही पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है। हनुमान साधना जादि के सम्बंध में

नहीं साथ हजार उम्बु उर कभी में ही का व विपर देसा है, अं हनुम आन जाती में त हनुम ल समय विलम नियम जाग विहार नयोज घोड़ ड ल सोलह कर्म में १२ (६) दिलव नेवा प्रदान क दिन स्नान रवाना

जहाँ-जो हनुमान साधना से दूर न हो सके, हनुमान  
साधना में पिछि और हनुमान का इष्ट प्राप्त साधक  
हवाले शब्दों के बोच से निकल जाए तो भी शत्रु  
उम्मका कुछ भी नहीं विगड़ सकते, भूत-विशाच का  
दूर भय और हानि हनुमान साधना सिद्ध साधक को  
कभी नहीं हो सकती, चाहे वह आवीं रात को श्वशान  
में ही जाकर क्यों न बैठ जाए, भूत-प्रेत, पिशाच सभी  
का बल हनुमान के अगे नष्ट हो जाता है।

जहां तक गहरी का प्रश्न है, हनुमान साधना ये विपरीत गहर पूर्ण रूप से शान्त होते हैं, और शास्त्रों में ऐसा लिखा है कि हनुमान और सूर्य एक दृष्टि के स्वरूप हैं, और इनकी परम्परा में भी अन्यन्य प्रबल है, इसीलिये हनुमान साधना करने वाले साधक में सूर्य ताव अथात् आन्मविद्वान्, और तेजस्विना विशेष रूप से आ जाती है, यह तेज डॉ तो साधक को सामान्य व्यक्तियों से अलग करता है।

हनुमान-मूल साधना

इन चिह्नों साधना को यहि बोलि विधि-विधान सहित सम्पूर्ण विद्या जाए सो साधना में फल पासि शीघ्र होती है। विद्यों भवति इसका दोष न रहने से स्वयं तत्त्व की प्राप्ति बिना विषय के, उच्छानुसार प्राप्त होती है, पूजा जिस विधि से की जाए, उसका प्रलभ सिर्तंत्र लक्ष्यक है, कोई भी पूजा-साधना निरोधक ल हनुमान साधना तो मनाक के तौर पर आश्रय केवल प्रयोग से नहीं पर जाता बल्कि विधिपूर्वक होता है।

શોઇશોપચાર પજા

इस पूँजी में मूल रूप ने सभी साधनाओं ने आवश्यक सालह न-ख विभागों हैं और कमबख्त रूप से इन्हें सम्पन्न करने के लिए साधन पूँजी हानी है, यह घोड़ापचार पूजन क्रम में (१) इवान (२) आवाहन (३) आसन (४) पाद (५) अर्च (६) ब्राचमन (७) रसन (८) वस्त्र (९) दण्डोपदीत (१०) निशेक वैक्षण (११) सालन्दपीण (१२) धूप (१३) दीप (१४) जैवध कल, आचमन (१५) ताम्बूल (१६) दक्षिणा आरती, प्रदक्षिणा, सम्पन्न करना चाहिए, हनुमन साधना मंगलवार के दिन ही प्रारंभ की जानी चाहिए, और हम दिन प्रातः साधक स्थान कर, गुरु वस्त्र धारण कर, अपने पूजा स्थान में सर्वायम हनुमानी की मूर्ति अथवा चित्र स्थापित करें, साथ

लोक जीवन में हनुमान  
जी को जो स्थान प्राप्त है, वह  
किसी अन्य देवी-देवता को प्राप्त  
नहीं है, इसका कारण यह है, कि  
हनुमान देव इतने अधिक सरल,  
सात्त्विक, कृपालु, बल, बुद्धि  
शारीरिक निरोगता के देव हैं-  
जिन्हें हर साधक, हर त्यक्ति अपने  
जीवन में सहज ही आदर्श बना  
सकता है।

मी नियुक्त 'हनुमान यंत्र', 'हनुमान गुटिका', अपने सामने लाल  
वर्जन चिठ्ठा का स्वयं पित करें, सरोबरथम साधक, सिन्हूर से स्वयं  
को तिळक करें, और हनुमान मुसि (चित्र), हनुमान गटिका  
तथा यंत्र पर भी सिन्हूर अवश्य चढ़ाएं। हनुमान साधना में  
सिन्हूर का जो कि तेज मिश्रित हो, विशेष विधान है, एक ओर  
तेज का दीपक तथा तूष्णी और धूप जलाएं।

सबं प्रवनं पवामृतं से हनुमान मुटिका तथा यत्र को स्नान कराएं, फिर शुद्ध जल से स्नान कराएं और उसके पश्चात् सिंह अपीन कर बनात का आङ्गम करें।

120

बालकायुत तेजसं विभूवन प्रक्षीभक्त सुन्दरम् ।  
सुरीयादिसमस्तवानर गणः संसेव्यापादाम्बुजम् ।  
नादेनेव समस्तशाश्वसणान्संत्रासयन्तं प्रभ् ।  
रीत्यापादाम्बुज वर्णपरिचयं इत्यार्थम् वाचात्प्रत्ययम् ॥

अर्थात् 'बुद्धिमान्, सूर्य जैसी आपना बाले, तीनों लोकों को  
वित करने वाले, प्रबल, अपने हुकार से सम्पूर्ण भृत-प्रति  
आओं को दूर करने वाले, भगवान् राम के परमतत्त्व स्वरूप  
हनुमान जी मेरे पूजा स्थान में आसन ग्रहण करे, और मुझे  
न का अभिष्ट फल प्रदान करे।'

इसके पश्चात् साधक को सिन्दूर लेपन कर, सामने एक जल वात्र में जल अपित कर स्वयं भी घोड़ा जल ग्रहण करना चाहिए और हनुमान यंत्र और गुटिका को मौली, अबीर-गुलाल,

अक्षत, पुष्प सुपारी तथा गुड़ का प्रसाद समर्पित करना चाहिए।

इसके पश्चात् दोनों हाथों जोड़ कर श्री हनुमान के विभिन्न स्वरूपों का ध्यान करते हुए नमन करना चाहिए।

ॐ राम भवताय नमः । ॐ महानेजसे नमः ।

ॐ पिराजाय नमः । ॐ महाबलाय नमः ।

ॐ द्रोणाद्विहरकाय नमः । ॐ मेसपीठकार्चनाय नमः ।

ॐ वक्षिणाशा भ्रास्कराय नमः । ॐ कारकाय नमः ।

ॐ सर्व विद्धन निवारकाय नमः ।

इस प्रकार से पूजन में आठ सुपारी एक-एक करके प्रत्येक नमरकार के साथ सिन्दूर में घिमो कर अपने सामने स्थापित करनी चाहिए।

हनुमान साधना के विभिन्न स्वरूप होने हुए भी मूल साधना मंत्र एक ही है, और इस प्रकार विधि-विधान सहित पूजन करने के पश्चात् मंत्र सिद्ध 'भूग्रा माला' से उसी स्थान पर बेठे-बेठे ग्यारह माला मंत्र जप करना चाहिए।

### हनुमान बीज मंत्र

ॐ हृष्फें खें दृष्टी हृष्टें दृष्टी हृष्टमते नमः ॥

यह बीज मंत्र प्रबल शक्तियुक्त, द्वादश अक्षर मंत्र है, जिसके प्रत्येक वर्ण में स्थित शक्ति नत्य है, इसमें इन्द्र, सूर्य, अग्नि, चन्द्र, सूर्य, शक्तिपूज हनुमान तत्त्व विद्यमान है।

प्रत्येक माला मंत्र जप के पश्चात् अपने दोनों हाथों में पुष्प लेकर, अपने सामने हनुमान यंत्र तथा गुटिका पर अर्पित करने चाहिए, इस प्रकार का ग्यारह माला मंत्र जप सम्पन्न करना आवश्यक है।

मंत्र जप के पश्चात् साधक हनुमान गुटिका को धारण कर सकता है, और यंत्र को पूजा स्थान में ही रहने दें, किसी भी विशेष कार्य हेतु अथवा बाहर जाते समय हनुमान ध्यान कर आहर निकलने से किसी प्रकार कट संकट नहीं रहता।

विभिन्न कार्यों में, विभिन्न मंत्र जप का विधान है, कुछ विशेष मंत्र नीचे स्पष्ट किये जा रहे हैं-

१- शत्रु संकट निवारण प्रयोग- इस विशेष हनुमान साधना में पूजा विधान तो वही रहता है, निम्न-लिखित मंत्र की ५१ माला तीन मंगलवार तक नियमित रूप से जप करने से किसी

श्री प्रकार के शत्रु का भय समाप्त हो जाता है, और शत्रु शान्त होकर साधक के वश में हो जाता है-

### मंत्र

॥ ॐ पूर्वकपिमुखाय पञ्चमुखहनुमते दं दं दं सकल शत्रु संहारणाय स्त्रादा ॥

२. बीमारी, संकट, गह वोष निवारण हनुमान प्रयोग- इस विशेष प्रयोग को मंगलवार की अद्यरात्रि को सम्पन्न करना चाहिए, उस दिन साधना दिन गह उपवास रखें तथा रात्रि को उत्तर दिये गये पूर्ण विधान से यंत्र तथा गुटिका समर्पित कर, अपने सामने एक साफ कागज पर बीमारी बाधा इत्यादि का विवरण लिख कर गुटिका के नीचे रखें, और फिर इस मंत्र का नप १०८ बार अवश्य सम्पन्न करें।

### मंत्र

ॐ ऐं हीं श्रीं हां हीं हूं हैं हीं हा, ॐ

नमो भगवते महाबल पराक्रमाय भूत-प्रेत-पिशाच ब्रह्मराक्षस शाकिनी डाकिनी यशिणी पूजना मारी-महामारी-राक्षस भैरव-वैताल ग्रहराक्षसादिकान् क्षणेन हन् हन् भंजय अंजय मारय मारय शिक्षय शिक्षय महामादेश्वर-रुद्रायतार ॐ हुं फट स्वादा । ॐ नमो भगवते हनुमदाख्याय रुद्राय सर्वदुष्टजनमुख स्तम्भनं कुरु कुरु स्वादा । ॐ हीं हीं हूं दं दं दं फटस्वादा ॥

इसके पश्चात् उस कागज की जला कर, भर्म एक पुढ़िया में बांध कर घर से दूर फेंक दें, तो साधक को कुछ ही समय में प्रत्यक्ष परिणाम प्राप्त होता है।

वस्तुतः हनुमान साधना प्रत्येक ही साधक के लिए आवश्यक साधना है, जिसको सम्पन्न करने से कभी भी किसी प्रकार का विपरीत प्रभाव नहीं मिलता, अपितु लाभ ही है, आवश्यकता के बल विश्वास और श्रद्धा की है, और विशेष तो क्या कहा जाए-यदि साधक एक बार विधि-विधान सहित हनुमान सिद्धि प्राप्त कर, प्रति मंगलवार को केवल हनुमान चालीसा का ही पठ सम्पन्न करे-तो उसके जीवन में रोग, भय, बाधाओं तथा शत्रुओं का प्रवेश हो ही नहीं सकता। हनुमान साधना तो एक सिद्ध ब्रह्म कवच है जो कि साधक के चारों ओर एक रक्षा कवच बना देती है, और गुरु-भक्ति से साधक अपने सभी कार्यों को सरलतापूर्वक सम्पन्न करने में समर्थ रहता है।

साधना सामग्री - ३६०/-

# तांत्रिक गणपति साधना

भगवान् श्री गणपति का नाम एक ऐसा पावन उच्चारण है सकता है।

जिससे स्वतः दी सर्वत्र मंगलमयता प्रतीत होने लग जाती है। यह लोक परंपराओं में विद्यमान कथाओं को एक बार हम उनका स्वरूप इतना नेजल्दी है, कि उसके स्मरण मात्र से विस्मृत कर दें, तब जात होता है, कि प्राचीन साहित्य में उन्हें जीवन के विविध अंधकार समाप्त होने लग जाने हैं सच्च उनकी केवल शिव-पार्वती का पुत्र ही नहीं, साक्षात् ब्रह्म स्वरूप ही साधना से तो किसी अशुद्ध का स्थिर रहना असंभव ही है, माना गया है। जिस प्रकार 'शक्ति' में भूत, रज एवं तम तीनों किन्तु यह किसी भी व्यक्ति से पूछा जाए, तो वह दो कथाओं गुणों की धारणा की नहीं है, ठीक उसी प्रकार से मात्र प्रथम के अनिरिक्ष शायद ही तीसरी कथा उनके विषय में बना सके। स्मरणीय देव के रूप में भी तीनों हीं गुणों की धारणा की नहीं है। प्रथम तो वह कथा जिसमें उनकी उत्पत्ति एवं उनके गजानन होने का रहस्य निहित है तथा द्वितीय वह जिसमें उन्हें माता-पिता की परिदृश्या करने वाला वर्णित किया गया है। यद्यपि काल चक्र में वे किस प्रकार से मात्र प्रथम स्मरणीय देव के रूप में ही सीमित हो गए, यह शीघ्र का विषय है।

मंगल मूर्ति श्री गणेश का केवल इतना ही परिचय नहीं है, वरन् इससे कहीं अधिक विस्तार से उनका पावन चरित्र विख्यात पड़ा है। उनके नीला स्वरूपों का वर्णन तो यद्यपि विस्तार से प्राप्त नहीं होता है, किन्तु साधकों के मध्य उनके अनेक रूपों की साधना पद्धतियों से जात होता है, कि किस प्रकार से वे नाक्षात् जान स्वरूप होने के साथ ही साथ प्रचंड तांत्रोक्त रूप में भी विद्यमान हैं। आख्य स्वरूप से सर्वथा शांत होने के साथ ही साथ उनके भीतर जिस प्रकार का दावानल छिपा है, उसका दुख का साधी स्वीकार कर लेना एवं उसके समक्ष सब कुछ साक्षात् तो केवल साधक हो साधना के किसी चरण में कर निवेदित कर देना, उसे अपने जीवन का आधार बना लेना।

यदि लोक परंपराओं में विद्यमान कथाओं को एक बार हम विस्मृत कर दें, तब जात होता है, कि प्राचीन साहित्य में उन्हें जीवन के विविध अंधकार समाप्त होने लग जाने हैं सच्च उनकी केवल शिव-पार्वती का पुत्र ही नहीं, साक्षात् ब्रह्म स्वरूप ही साधना से तो किसी अशुद्ध का स्थिर रहना असंभव ही है, माना गया है। जिस प्रकार 'शक्ति' में भूत, रज एवं तम तीनों गुणों की धारणा की नहीं है, ठीक उसी प्रकार से मात्र प्रथम के अनिरिक्ष शायद ही तीसरी कथा उनके विषय में बना सके। स्मरणीय देव के रूप में भी तीनों हीं गुणों की धारणा की नहीं है। यद्यपि काल चक्र में वे किस प्रकार से मात्र प्रथम स्मरणीय देव के रूप में ही सीमित हो गए, यह शीघ्र का विषय है।

भगवान् श्री गणपति की साधना, साधना जगत में अत्यन्त सौम्य, श्रेष्ठ एवं सर्वोच्च मानी जाई है, यद्यपि ऐसे साधकों का बाहुल्य नहीं है, जिन्होंने गणपति साधना को ही अपने जीवन का आधार बनाया हो। विशेषकर पश्चिम भारत में भगवान् श्री गणपति की उपासना सर्वाधिक प्रचल रूप से होती है, तेथिन उपासना एवं साधना में पर्याप्त धैर्य होता है, इस तथ्य से कोई भी विद्यान उसहमत नहीं हो सकता।

उपासना का सीधा सा अर्थ देव विशेष को अपने सुख-ही साथ उनके भीतर जिस प्रकार का दावानल छिपा है, उसका दुख का साधी स्वीकार कर लेना एवं उसके समक्ष सब कुछ साक्षात् तो केवल साधक हो साधना के किसी चरण में कर निवेदित कर देना, उसे अपने जीवन का आधार बना लेना।

जबकि साधना में अंतर यह होता है, कि साधना उस देव होता है, इसको रघुदेखने के लिए एक पश्चाती की चोटी पर विशेष के गुणों, तत्त्वों से परिचय प्राप्त कर तबनुकूल अपने पढ़ी एक चट्ठान को लुढ़का दीजिए और एक ऐसा चट्ठान को आपमें ही पात्रता बनाने की किया होती है। इस प्रकार से उसे लुढ़का दीजिए जो भूमि तल के पास ही पड़ा हो। चोटी से आवाहित किया जाता है, कि वह साधक की इच्छानुसार रवरूप लुढ़कने वाली चट्ठान चूर-चूर हो जाती है, समाप्त हो जाती है, में आकर उसके शरीर में समाहित हो जाये तथा उसका जबकि भूमि तल के पास पड़ा या कुछ उंगाई से लुढ़कने वाली अशीष प्रदान करें। चट्ठान यथावत ही बनी रहती है। इसी कारणवश योग की साधनाओं में साधारण पूजन से काम नहीं चलना वरन् उन

### विशिष्ट अवसरः विशिष्ट स्वरूप

भगवान् श्री गणपति का रवरूप सर्व प्रकारण विद्यहर्ता ही उपायों को प्राप्त करना पड़ता है जिसमें सुरक्षा चक्र की दृष्टा है, इसमें किसी को भी असाहमनि नहीं हो रखती, किन्तु उनके निर्मित हो सके। एक प्रकार ने कोई विक्र शक्ति ही द्वारे किस स्वरूप का किस अवसर पर ध्यान करें, उसमें मतभेद अन्दर समाहित हो जाए और वह पग-पग पर न केवल हमें है। उदाहरण के लिए उनके जिस स्वरूप का ध्यान विवाह मानसिक रूप से सचेत ही करती रहे, वरन् आवश्यकता पड़ने भाड़ि मंगल कार्यों में किया जाता है, कोई आवश्यक नहीं, कि पर स्वयं भी गतिशील होकर अंगुष्ठ का संहार कर दे।

उसी स्वरूप का ध्यान शत्रु संहार एवं अरिष्ट निवारण में भी यह पूर्णतया सौम्य चक्र है

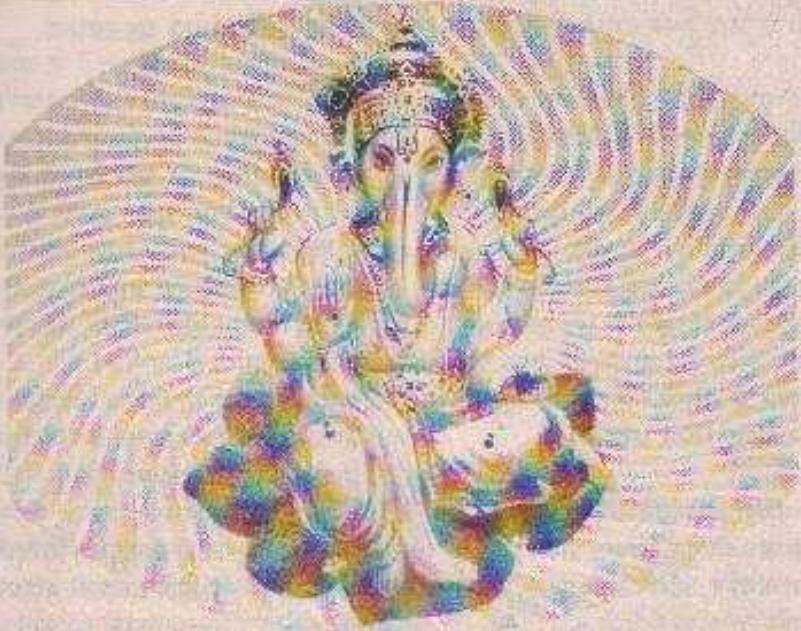
किया जाए, क्योंकि विवाह आदि मंगल कार्यों में वे तेवत्व की गरिमा से आपूर्ति स्वरूप में एक प्रकार से अत्यन्त आहार को एक जिजासा हो सकती है, कि प्रत्येक साधना के पूर्व में एवं अधिभावकत्व के भावों से भरे हुए उपरिष्ठत होते हैं, जबकि रक्षा चक्र निर्मित करने समय भैरव स्तुति एवं संक्षिप्त भैरव गन्तु मंहार में वे अत्यन्त विकट एवं भ्रयानक स्वरूप में प्रकट साधना तो की ही जाती है, इसके उपरांत भी गणपति साधना होते हैं। उच्चकोटि के गणपति साधक जानते हैं, कि किस प्रकार को तांत्रोक्त रूप से सम्पन्न करने की आवश्यकता ही क्या ? से भगवान् श्री गणपति का तांत्रोक्त एवं नीत्र स्वरूप भी होता यह जिजासा सही है, किन्तु इस तथ्य का निवारण करते है। वस्तुतः उच्चकोटि के साधक भगवान् श्री गणपति के उसी समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जाना आवश्यक है, कि नीत्र एवं उच्चमन स्वरूप का ही आवाहन अपनी साधनाओं में भैरव साधना मूलतः तमोगुण प्रधान साधना हो है। सत एवं करते हैं।

साथक जब साधना के कुछ क्रम को पूर्ण करने की स्थिति में होता है अर्थात् वह अष्टादश सिद्धियों की प्राप्ति में सफलता श्री गणपति सतोगुण प्रधान देव है एवं इसी कारणवश सात्त्विक प्राप्त करने के अत्यन्त सत्त्विकट होता है, तब कुछ ऐसी बाधाएँ साधनाओं के अवसर पर उनकी ही तम शक्ति का आश्रम लेना आती है, जिनसे धैर्य समाप्त होने लगता है तथा साधना भे मन उचित माना गया है। इसके अनिरुद्ध वह प्रत्येक साधक की उचाट होने लगता है। किसी भी साधक के लिए यह स्थिति क्षमता भी नहीं होती, कि वह भैरव को रक्षाभारक देव के रूप अत्यन्त शोकवायक होती है, किन्तु उच्च स्थिति पर आसु ऐसे आवाहित कर सके। यद्यपि उनकी कृपा की याचना करना साधक के लिए तो साक्षात् मरणनुस्य ही होती है। अनेक और उसका प्राप्त हो जाना एक अन्य बात है।

कुविचारों, शंकाओं के साथ-साथ चार्यात्मिक पतन का भय भी सात्त्विक साधनाओं यथा अष्टादश सिद्धियों, ब्रह्मलत साधना, इसी दशा में सर्वाधिक हो जाता है, क्योंकि जो साधक अष्टावश गुरु साधना, कुण्डलिनी जागरण साधना आदि को सम्पन्न करते सिद्धियों में से किसी भी एक सिद्धि को प्राप्त कर लेगा, वह समय साधक का सारा शरीर एक विशेष प्रकार की व्यवस्था प्रकृति पर विजय प्राप्त करने की स्थिति में आ जायेगा और वह में आवद्ध हो जाता है और उस दशा में वह रनोगुण अथवा भी सत्य है कि जो साधक इन सिद्धियों में से किसी भी एक तमोगुण को सहन ही नहीं कर सकता। इन दोनों गुणों में से सिद्धि को प्राप्त कर लेता है, व अत्यन्त शीघ्र शेष सभी सिद्धियों किसी का भी सम्पर्क उसे विचलित एवं व्यथित कर देता है।

उच्च स्थिति पर आसु भावक का पतन कैसा विनाशक बाह्य रूप से वे गुण प्रमाव न ढान सकें। भैरव साधना के

मध्याम ५  
जीवन  
भगवान्  
साधक  
की आवश्यकता  
एक चारों  
में अन्य  
करना। इस  
पक्ष की  
में इसे न  
है। वह  
साधना  
को मंग  
जून  
अधिक  
क्योंकि  
सप्तलता  
ध्यान  
हुआ है  
ग्रन्थावा  
में द्व्यावा



स्वयम पर गणपति साधना का वही महत्व है।

### जीवन क्रम में परिवर्तन आवश्यक नहीं

भगवान गणपति की तांत्रोक्त साधना सम्पन्न करने के लिए भगवान को अपने साधना क्रम में बहुत अधिक परिवर्तन करने की आवश्यकता नहीं होती। इस महत्वपूर्ण साधना को केवल एक बार एक विधि-विधान से सम्पन्न करना होता है तथा अविष्ट ने अन्य साधनाओं में प्रवृत्त होते समय इस साधना का समरण करना ही पर्याप्त होता है। यह साधना किसी भी माह की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को सम्पन्न की जा सकती है। विशेष स्थितियों है। यह साधना रात्रिकालीन साधना ही है। मंगलवार का इस साधना में विशेष रूप से विशेष है, अतः साधक इस साधना को मंगलवार के दिन करावि न सम्पन्न करें।

इस साधना में सम्बन्धित मंत्र जप पर्व साधना विधि से भी अधिक महत्वपूर्ण है। भगवान श्री गणपति के इवरूप का ऋण, वर्योकि इसी 'ऋण' के माध्यम से ही आगामी जीवन में भनेक सफलताएं प्राप्त की जा सकती हैं। भगवान श्री गणपति का ऋण, अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग रूप से वर्णित हुआ है तथा उनका स्वर्वमान्य रूप अत्यन्त गीरवणीय अथवा उन्हें गल सिंहासन पर बैठे हुए चतुर्मुख रूप रूप से वर्णित है। उन्हें गल सिंहासन पर बैठे हुए चतुर्मुख रूप से वर्णित है, किन्तु तांत्रोक्त रूपरूप में उन्हें इन सम्बन्धित हैं।

सभी धारणाओं के विपरीत धूमर वर्ण का नृत्य मुद्रा में ध्यायित किया जाता है, जिनके नेत्र क्रोध एवं उन्माद से पीत वर्ण के हो गए हैं।

### ध्यान की महता ही सर्वोच्च

भगवान गणपति के तांत्रोक्त ध्यान में उनका वर्ण हस्ति चर्म के सदृश माना गया है तथा वे किसी रत्नजडित सिंहासन पर आसीन न होकर भगवान शिव की भाँति श्मशान में तांडव मुद्रा में वर्णित हैं। सभव है, कुछ साधकों को उनका यह स्वरूप सचिकर न प्रतीत हो अथवा उन्हें इस रूप में भगवान शिव का ध्यान हो आता है, किन्तु सत्यता यही है।

यह उनका वास्तविक स्वरूप नहीं है, इसको अस्वीकार करने के उपरान्त भी यह प्रश्न तो शेष ही रह जाता है, कि कोई योद्धा जब राजधृति में जाता है, तो वह गुलाब के छार पहने हीता है या अल्लू-अल्लू धारणा किए होता है? इसी भावना से अस्वीकार करने पर भगवान श्री गणपति के तांत्रोक्त स्वरूप का अर्थ समझ दियोकि इसी 'ऋण' के माध्यम से ही आगामी जीवन में भनेक में आ सकता है। जहां तक उनके इस स्वरूप की, भगवान शिव की मुद्रा से नादत्वय की बात है, उसके विषय में इतना ही कहना पर्याप्त होगा, कि भगवान शिव की नृत्य मुद्राओं का जहां सृष्टि के नियम से सम्बन्ध है, वही भगवान गणपति की नृत्य स्वर्णवर्णीय है। उनके नाड़व मुद्रा का सम्बन्ध उनके अधिकार भाव से में ध्यायित किया जाता है, किन्तु तांत्रोक्त स्वरूप में उन्हें इन सम्बन्धित हैं।

इमशान में तांडव नृत्य में रस होने का यही अर्थ है, कि वे समस्त अशुभ शक्तियों के ऊपर अपने प्रधुत्व का विस्तार कर रहे हैं।

यूं भी उनकी संज्ञा 'गणपति' ही है, जिसका सीधा सा तात्पर्य है, कि वे समस्त 'गणों' के स्वामी हैं। उनके इसी स्वरूप में उनकी बारों भुजाओं में क्रमशः परशु, विशुल, गजदन्त एवं चक्र की धारणा की गई है, अर्थात् वे पूर्णतया संहार मुद्रा में हैं।

यही रहस्य उनके पीत वर्णीय नेत्रों का भी है। पीत वर्ण का सम्बन्ध साधनाओं में विष से माना गया है और यह पीत वर्ण उज्ज्वल आभायुक्त नहीं वरन् मलिनता से दुक्त रक्ताभ पीत वर्ण है, जिसका तात्पर्य है, कि भगवान् श्री गणपति ने उन समस्त अशुभ वस्तुओं को अपने में समाहित कर लिया है, जो कि अन्यथा साधक के प्रति अनिष्ट घटित करती हैं।

### मूल साधना क्रम

इस प्रकार भगवान् गणपति की छवि अपने मानस में स्थिर करने के उपरांत ही इस क्षेत्र की मूल साधना प्रारंभ होती है-

-साधक को लाल रंग के वस्त्र, आसन आदि का प्रयोग करना चाहिए अथवा किसी गहरे रंग के वस्त्र आदि का।

-किसी अन्य पूजन सामग्री की अपेक्षा साधक के पास तांत्रिक पद्धति से निर्भित एवं तासपत्र पर अंकित मङ्गागणपति यंत्र एवं १०८ धूमाश्रों का होना ही अधिक आवश्यक है।

-इसके अतिरिक्त केवल तेल के दीपक की ही आवश्यकता वोध रह जाती है।

-साधना में प्रवृत्त होने से पूर्व साधक उपरोक्त विधि से भगवान् श्री गणपति के स्वरूप को अपने नेत्रों के समक्ष स्पष्ट करे तथा इस कार्य में डडुबट्ठी न कर, इसे दत्तचित्र भाव से सम्पन्न करे। जब उसे प्रतीत हो, कि वह भगवान् गणपति के तांत्रिक स्वरूप में नितांत एकाकी भाव से रम गया है, तब तेल का दीपक प्रज्वलित कर अपने समाह रखे।

महागणपति यंत्र पर एक-एक धूमाश्र निम्न मंत्र के साथ समर्पित करते रहें-

### तांत्रिक गणपति मंत्र

॥ गणाध्यक्षो कृष्ण पिंगलाकाश नमः ॥

साधना इस के मध्य साधक को नीबू अनुभूतियों हो सकती है और ऐसा प्रतीत हो सकता है, कि कोई साधना कला में उपस्थित हो गया है, किन्तु वह सर्ववा भय रहित अनुभूति होनी और साधक के मन में एक विशेष प्रकार का आह्वाद लाने में समर्थ होती। यह अन्यन्त शुभ संकेत होता है और यह इस बात का प्रमाण होता है, कि साधक को आगमी जीवन में निश्चित भगवान् श्री गणपति के इस विशिष्ट वरदायक स्वरूप का लाभ मिलता रहता।

साधना के उपरांत यद्यों १०८ धूमाश्रों तथा यंत्र को किसी लाल कपड़े में बांध कर यथासंभव इमशान अथवा निर्जन स्थान

पर रख दें।

### अष्टावश सिद्धियां एवं यह साधना

अष्टावश सिद्धियां आज के युग में भी सत्य ही हैं, किन्तु युग की प्रवृत्तियों के अनुसार उन्हें संशोधित करके प्रयुक्त किये जाने की आवश्यकता है। प्रस्तुत साधना इसी प्रकृति की साधना है, जो अष्टावश सिद्धियों को आज के युग में भी प्रासंगिक बना सकती है। आज का युग अनेक कारणों से इस प्रकार दृष्टित हो गया है, कि साधक अपने समस्त प्रयासों के बाद भी केवल अपनी ही शक्ति से इन्हें नहीं प्राप्त कर सकता, क्योंकि जो शक्ति मूल साधना में प्रयुक्त होनी चाहिए, वह तो अनेक विसंगतियों से लड़ने में ही समाप्त हो जाती है।

अष्टावश साधनाएं तो निरंतर सूक्ष्म से सूक्ष्मनर की ओर जाने की किया है और जब साधक इस प्रकार की किया में सतत होता है, तो ऐसी अनेक अशुभ शक्तियों भी चैतन्य होने तकरी हैं, जिन्हे सामान्य बोलचाल में इनर थोनियां, भूत-प्रेत कह सकते हैं। यही कारण है, कि अष्टावश सिद्धियों को सम्पन्न करने समय साधक को भय विशेष रूप से गुस्तिल कर नेता है तथा काम-क्रोध की प्रवृत्ति सामान्य से कई गुना बढ़ जाती है।

सामान्य रूप में इसकी व्याख्या इस प्रकार से कर दी जाती है, कि ये साधक की ही कबी हुई भावनाएं निकल रही हैं, किन्तु ऐसा कहना केवल आंशिक सत्य ही है, क्योंकि इसके पीछे निहित इस तथ्य का सामान्य व्यक्तियों को जान ही नहीं होता और वे अटपटी व्याख्या कर देते हैं। इसका दोहरा विपरीत परिणाम होता है-

प्रथम तो यह, कि साधक की साधना अवरुद्ध हो जाती है, कभी-कभी तो समाप्त भी हो जाती है।

द्वितीय यह, कि साधक एक प्रकार के अपराध बोध से गुस्तिल हो जाता है। यही कारण है, कि उच्चकोटि की साधनाओं को करते समय मूरु का निश्चित भाव वर्य अनिवार्य कहा गया है अन्यथा साधक घोर पीड़ा में जा पड़ता है।

### पूर्ण सफलता का रहस्य

यह साधक को जान नहीं होता, कि किस बाधा से किस प्रकार मुक्ति पाए, किन्तु वहि उसने प्रस्तुत पद्धति से तांत्रिक गणपति साधना सम्पन्न कर रखी होती है, तो वह अनुभव करता है, कि आधारे जिस प्रकार से अचानक आ रही है, उसी प्रकार से अचानक समाप्ती होती जा रही है। साधक को ऐसा अनुभव करके भगवान् श्री गणपति के साथ-साथ अपने गुरुदेव के प्रति भी मानसिक रूप से कृतज्ञ होना चाहिए, कि उसे न केवल जीवन की श्रेष्ठतम साधनाएं मिलीं, बरन उनकी सहयोगी साधनाएं भी मिल सकीं, जिनसे वह समाज में श्रेष्ठ व्यक्तित्व बनने में सक्षम हो सका।

साधना सामग्री न्यौत्तावर- ३००/-

# श्रीयंत्र

की वर्चा तो पूरे विश्व में है  
न्यौकि यह ताम्री-आषद्ध की प्रेषणम् प्रक्रिया है

पर

सर्वांगि विद्वि है

# षाठ्ड श्रीयंत्र

जो न देख्या न सुना

पत्रिका काल्यानन्द ने समय-समय पर अद्भुत तेजस्वी और प्रभावकारी यंत्र पत्रिका पाठकों, साधकों और शिष्यों को प्रदान में ही श्रीयंत्र अपने आप में एक जटिल प्रक्रिया है, पर इसके

साथ ही साथ यह उन्नति का सर्वोत्तम साधन भी है।

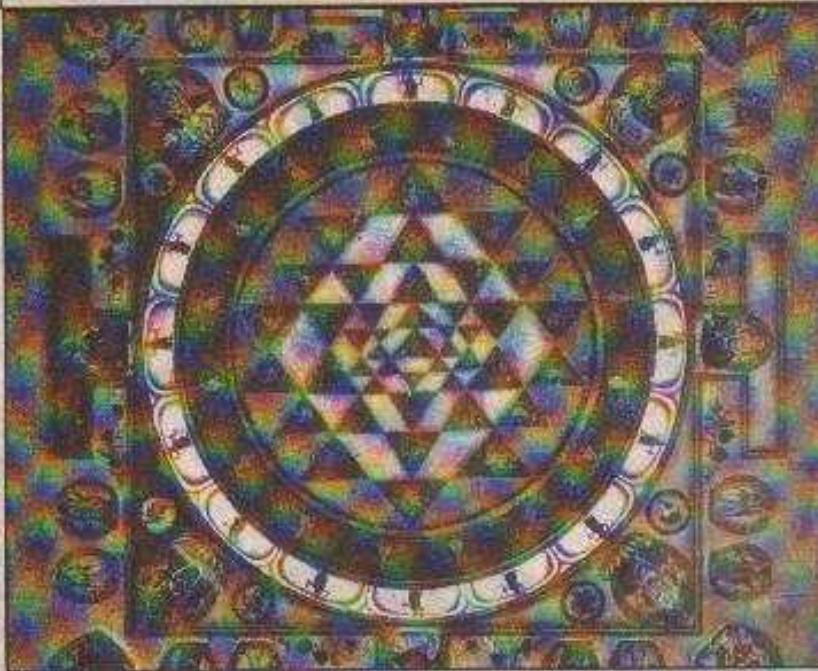
किये हैं, परंतु इन सब में श्रीयंत्र तो अपने आपमें ही भव्य और इन्हेण्ड में लगभग सभी घरों में श्रीयंत्र स्थापित हो रहा है, अद्वितीय माना जाता है, इसलिए कि इसका प्रभाव तुरंत और केवल भारतीय ही नहीं अपितु विदेशी भी अपने घरों में श्रीयंत्र अचूक होता है, इसलिए कि जिस घर में भी श्री यंत्र होता है, स्थापित करने लगे हैं, और उन्होंने वो टृक शब्दों में स्वीकार उस घर में गरीबी रह ही नहीं सकती, जिस घर में श्रीयंत्र किया है, कि जीवन की समस्याओं के समाधान के लिए यह यंत्र स्थापित होता है, उसके घर में क्राण की समस्या संभव नहीं है,

जिस घर में अपनी भव्यता के साथ श्रीयंत्र स्थापित है, उसके घर में आठों लक्षितयों अपने सम्पूर्ण वेग के साथ आश्रम रहती है।

## पूरे विश्व में चर्चा

वैज्ञानिक पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाएं इस बात की साक्षी हैं, हैं, अमेरिका में कई भारतीय व्यक्तियों के घरों में तो श्रीयंत्र को कि केवल भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में श्रीयंत्र की चर्चा स्थापित देख कर मन ही मन विचार हुआ है, कि वास्तव में ही है, लगभग सौ से ज्यादा ग्रन्थ विश्व की कई भाषाओं में श्रीयंत्र श्रीयंत्र में कोई ऐसी शक्ति अवश्य है जिससे पूरा विश्व इसके पर लिखे गये हैं, और इस बात को अनुभव किया है, कि वास्तव पीछे पागल है, जिससे विश्व के बुद्धिजीवों और वैज्ञानिक इस

इस यह उन घर उन नहीं व्य आ आ है लग यह यह दुष्ट है, उप घर इस लिं वर का मं क या अ उ अ अ क ल ल सा



## श्रीयंत्रों में सर्वथेष्ठ-पारद

### श्रीयंत्र

श्रीयंत्रों में विभिन्न प्रकारों के बाबजूद भी अधीर तक तांत्रिक ग्रन्थों और शास्त्रों में पारद शिवलिंग और पारद श्रीयंत्र की चर्चा तो सुनी थी, एक दो स्थानों पर पारद शिवलिंग देखा भी है, परंतु पारद श्रीयन्त्र अधीर तक न तो देखा गया है, और न सुना गया है।

यह संभव कैसे है कि तरल पारे को ठोस बना कर उससे श्रीयंत्र का निर्माण किया जाए, और फिर इसमें भव्यता, श्रेष्ठता और प्रभावकरता प्रदान की जाए, क्योंकि पारद श्रीयंत्र तो अपने आपमें ही सर्वोच्च भव्यता है, पारा

यंत्र की महत्ता को अनुभव करने लगे हैं, अपने घरों में स्थापित भगवान शिव का विग्रह कहलाता है, समस्त देवताओं का पुजीभूत करने लगे हैं और यह अनुभव करने लगे हैं कि वास्तव में ही स्वरूप पारे को माना जाया है, और लक्ष्मी ने स्वयं स्वीकार किया है, श्रीयंत्र के माध्यम से हम अपने जीवन की भीतिक समस्याओं कि "पारद ही मैं हूँ और मेरा ही वृम्मरा स्वरूप पारद है"।

### श्रीयंत्र के प्रकार

श्रीयंत्र कई प्रकारों में मिलता है, चन्दन पर अंकित श्रीयंत्र, सफेद आक पर अंकित श्रीयंत्र, पंच धातु पर अंकित श्रीयंत्र और यति गणना की जाए तो लगभग १०८ तरीकों से श्रीयंत्र अंकित दिखाई देते हैं, सब का अलग-अलग महत्व है, अलग-अलग विधान है।

इसके अलावा श्रीयंत्र के प्रकार भी कई हैं, उदाहरण के लिए नया मकान बनाने समय भूगर्भ श्रीयंत्र, मकान के चारों कोनों में स्थापित करने से मकान में निरंतर उच्चति होती रहती है, दुकान में व्यापार श्रीयंत्र स्थापित करने से व्यापार में बेतहाशा वृद्धि होने लगती है, छोटे बालकों के गले में लघु श्रीयंत्र पहिनाने से उनके स्वास्थ्य में अनुकूलता प्राप्त होती है।

ताबे पर निर्मित श्रीयंत्र घर के रोगों को भगाने में पूर्ण रूप से सहायक है, पंच धातु पर उत्कीर्ण श्रीयंत्र घर की उच्चति के लिए अनुकूल है और इस प्रकार श्रीयंत्र पर जितनी भी शोध हुई है उन सब ने एक स्वर से स्वीकार किया है, कि वास्तव में ही श्रीयंत्र की भव्यता और महत्ता अपने आपमें अद्वितीय है।

भगवान शिव का विग्रह कहलाता है, समस्त देवताओं का पुजीभूत हमने इस बार ऐसे ही पारद श्रीयंत्र का निर्माण किया है, जो अपने आपमें ही भव्यता और श्रेष्ठता लिये हुए हैं। यह परिका पाठकों का सोभास्य होगा, कि उन्हें इस युग में ऐसी भव्य और अद्वितीय वरन् सहज रुलम है, पर यह पारद श्रीयंत्र केवल परिका के सदस्यों को प्रदान किया जा सकता है, क्योंकि इस

प्रकार के श्रीयंत्र का निर्माण अपने आप में कठिन श्रम साध्य और व्यवस्थित है, हकीकत में देखा जाए तो एक पारद श्रीयंत्र पर लगभग ३० सौ रुपये से भी ज्यादा व्यय आ जाता है। परंतु प्रश्न तो मूल्य का नहीं है, प्रश्न हम पर होने वाले व्यय और परिश्रम का नहीं है, प्रश्न तो ऐसी दुर्लभ वस्तु प्राप्त होने का है, और इस बार पिछले पांच वर्षों की कठिन चुनीती को स्वीकार

कर परिश्रम के बाद इस प्रकार के श्रीयंत्र का निर्माण करने में सफलता पाई है, और फिर जब हमने इसका प्रयोग किया है तो इसके माध्यम से शत-प्रतिशत सफलता प्राप्त हुई है।

पारद श्रीयंत्र की कोई विशेष पूजा पद्धति नहीं होती, न इसके लिए किसी मंत्र जप की जरूरत है और न वह जावश्यक है कि

इसके सामने दीपक जलाया जाए, अथवा अनुष्ठान किया जाए, यह तो जिस घर में स्थापित होता है वहाँ स्वतः ही आर्थिक उच्चति होने लग जाती है।

जिस प्रकार से बाजार से अगरबत्ती ला कर जिसके भी घर में जलाई जाएगी उसी घर में सुगन्धि प्रवाहित होने लगेगी, उस अगरबत्ती की सुगन्धि के लिए मंत्र जप या प्रयोग आवश्यक नहीं है, ठीक इसी प्रकार इस श्रीयंत्र के लिए भी सामान्य व्यक्तियों के लिए कोई विशेष प्रयोग या अनुष्ठान आदि की आवश्यकता नहीं है, यह तो घर में स्थापित होने पर अपने आप में ही अनुकूलता प्रदान करने वाला जान्वर्ण्यमान रत्न है, जिसके प्रभाव से पूरा घर उच्चति की ओर अग्रसर होने लगता है।

इस प्रकार के दुर्लभ पारद श्रीयंत्र को स्थापित करते हैं, तो यह अपने आपमें ही एक महत्वपूर्ण उपलब्धि बन सकती है, यदि हम विधि-विधान के साथ पारद श्रीयंत्र को अपने घर में, दुकान में, कार्यालय में या व्यापारिक प्रतिष्ठान में स्थापित करते हैं, तो यह अपने आपमें श्रेष्ठता, भव्यता और पूर्णता की ही उपलब्धि है।

और लक्ष्मीसूक्त के अनुसार इस पारद श्रीयंत्र को अपने घर में हम स्थापित कर इसके दर्शन करें, और श्रद्धा के साथ इसको अपने घर में प्रतिष्ठापित करें, तो निश्चय ही यह आपके लिए इस वर्ष की महत्वपूर्ण घटना मानी जाएगी क्योंकि अन्य वर्षों तो अन्य स्थानों पर सहज संभव है, परंतु इस प्रकार का दुर्लभ श्रीयंत्र आसानी से प्राप्त नहीं होता।

#### मंत्र सिद्ध

श्रेष्ठ पर्डिलो द्वारा प्रत्येक श्री यंत्र को विशेष मुहूर्त में निर्मित कर लक्ष्मी सूक्त के मंत्रों द्वारा भिल्द, वैतन्य एवं प्राण प्रतिष्ठा युक्त बनाया है, हमने यह प्रयत्न किया है कि प्रत्येक श्री यंत्र अपने आपमें तेजस्वी हो, और जिसके श्री घर में स्थापित हो, उसके घर में आर्थिक उच्चति होनी चाहिए, यही नहीं अपितु उसके जीवन की समस्याओं का समाधान होना ही चाहिए।

और किर श्रीयंत्र, विशेष कर पारद श्रीयंत्र के माध्यम से तो आठों प्रकार की लक्ष्मीयां पूर्ण रूप से आबद्ध होकर स्थापित करने वाले व्यक्ति के घर में अपना प्रभाव देती ही है, संतान लक्ष्मी, व्यापार लक्ष्मी, धन लक्ष्मी, स्वास्थ्य लक्ष्मी, राज्य लक्ष्मी, बाह्य लक्ष्मी, कीर्ति लक्ष्मी और आयु लक्ष्मी के साथ-साथ जीवन के अभाव, जीवन की दुरिता और जीवन के कष्ट

दूर करने में इस प्रकार का श्रीयंत्र अपने आपमें ही अनुकूलता और भव्यता प्रदान करता है।

'श्रीसूक्त' के अनुसार जिसके भी घर में पारद श्रीयंत्र स्थापित होता है, स्वतः ही वहाँ पर शणपति और लक्ष्मी का स्थायी वास होता है, जिसके भी घर में पारद श्रीयंत्र होता है, अपने आपमें वह व्यक्ति रोग-रहित एवं क्रृष्ण-मुक्त होकर जीवन में आनन्द एवं पूर्णता प्राप्त करने में सक्षम हो पाता है, इसीलिए हमने इस प्रकार के पारद श्रीयंत्र को शुद्धता, पवित्रता एवं प्रामाणिकता देने का प्रयास किया है।

#### पारद श्रीयंत्र प्रयोग

नेसा कि मैंने बताया कि इस प्रकार का पारद श्रीयंत्र स्थापित करने के लिए किसी प्रकार का प्रयोग, पूजा या मंत्र जप की आवश्यकता नहीं होती, सामान्य व्यक्ति भी पारद श्रीयंत्र का पूरा-पूरा लाभ उठा सकते हैं, पर कई तांत्रिक ग्रन्थों में पारद श्रीयंत्र की साधना पद्धति भी विस्तार से दी है। गुरु गोरखनाथ ने तो 'श्रीयंत्र सप्तर्णी' नामक पूरे ग्रंथ की रचना ही कर दी है, भगवत्पाद शंकराचार्य ने पारद श्रीयंत्र के बारे में लगभग छः सौ पृष्ठों का गंथ लिख कर वह स्वीकार किया है कि यह अपने आपमें तेजस्वी प्रकार है।

उपरोक्त ग्रंथ के अलवा भी कई ग्रन्थों में पारद श्रीयंत्र स्थापना विधि भव्यता के साथ अंकित है, पर दुर्मियवश इनमें से अधिक ग्रन्थ हस्तलिखित हैं, हम उनमें से साधकों के लिए संक्षिप्त पारद प्रयोग मंत्र दे रहे हैं, जिसका उपयोग वे कर सकते हैं।

#### पारद प्रयोग मंत्र

किसी भी बुधवार या शुक्रवार को शुद्धता से स्नान कर पूजा स्थान में पीला वस्त्र बिछा कर उस पर पारद श्रीयंत्र स्थापित करें, सामने अगरबत्ती, दीपक लगाएं, और 'कमलगड़े की माला' से निम्न मंत्र की एक माला करें, इसके बाद भी यदि नित्य पूजा में इस मंत्र का १०८ बार उच्चारण किया जाए, तो वास्तव में ही अपने आपमें अद्वितीयता प्राप्त होती है।

#### मंत्र

॥ॐ ही ही श्रीं श्रीं पारद श्रीयन्नाय श्रीं श्रीं ही ही ॐ॥

यह मंत्र अपने आपमें तेजस्वी और अचूक है, एक हजार कमल बीजों से इस मंत्र के द्वारा आहुति देकर पारद श्रीयंत्र अनुष्ठान सम्पन्न किया जा सकता है। इस पारद श्रीयंत्र की बजह से आपका जीवन जगमगाना हुआ बने, ऐसा ही हमें विश्वास है।

साधना सामग्री - ₹५०/-

# कली कली खिल उठती है

## खरमोहन दीक्षा के

**कली कली खिली, तन की ही नहीं मन की भी, जिस पर  
रिंगड़ियन कुहारें आकर सावन की रक्कर्ही है। छलकने का  
जी ही न चाह रहा हो उन बूँदों का.... यही अवा, यही  
ताणनी तो है।**

### खरमोहन दीक्षा.....

नेपोलियन बोनापार्ट जो कि कद में अन्यन्त ही लघु था, ऐकड़ों ऐसे युवक मुवती देखे होंगे जो कि सौन्दर्य शास्त्र के उसकी एक कथा प्रसिद्ध है। एक बार वह अपनी लायब्रेरी में माप दण्डों के अनुसार तो पूर्ण पुरुष या पूर्ण नारी की संज्ञा पा कोई किताब अपनी शेलफ से निकालना चाह रहा था किन्तु सकते ही लेकिन उनमें कोई ऐसी बात नहीं दिखती कि उन्हें दो ऊँचाई पर होने के कारण उसे बार-बार उचकना सा पड़ रहा था उसकर निङालुलिया जाये यह मन ऐसा चाहे कि ठिक कर व पलट कर एक बार फिर उनको देखें।

यह देखकर उसका जनरल, जो कि उसके पास ही खड़ा था दूसरी ओर कभी-कभी कोई साधारण कद काटी का युवक बोला, 'लाइये मैं वह किताब निकाल देता हूँ, मैं आपसे बढ़ा या कोई सांवली सी लड़की विश्व जाती है और मन एक दम से हूँ।

नेपोलियन ने मुस्करा कर उत्तर दिया, 'बड़े नहीं जनरल, अन्तर नहीं। यदि हम दर्शन की या अध्यात्म की भाषा में कहें तो यह व्यक्ति के अन्दर का प्रकाश होता है जो चेहरे पर आभा लम्बे।'

यह घटना हमें बताती है कि व्यक्ति अपने कद, रंग या आकार सी बन कर बिखर जाता है, लेकिन जब इसी बात को हम प्रकार से ही आकर्षित करने वाला हो, यह आवश्यक नहीं। विज्ञान के रूप में समझाने-समझाने की बात करते हैं तो इसकी वह लम्बा चौड़ा गोरा बलिष्ठ हो सकता है, लेकिन उसमें संपूर्ण विवेचना आवश्यक हो जाती है।

कलिंगा सी भी हो, यह सदैव आवश्यक नहीं। आपने भी अपने व्याधि अध्यात्म और वैज्ञानिक पक्ष में कोई बहुत बड़ा अन्तर दैनिक जीवन में, यात्राओं में आते जाते, सड़कों पर, बसों में नहीं है। जिन बातों को भारतीय शास्त्र सीधी-सादी भाषा में

या क  
तत्त्वो  
विन्द  
जान  
दंगो  
लगते  
सा  
प्रकाश  
है, वि  
जब व  
था व  
बढ़ा  
प्रभाव  
साथ  
चुम्ब  
इत्या  
हम  
भी ह  
आले  
मंच  
सम्म  
जीवन  
ध  
को उ

**आकर्षण, मोहकता, व्यक्तित्व, चुम्बकत्व, मधुरता** ये ही तो कुछ शब्द हैं, जिनमें जीवन का सार सिमटा है। लोग आपके पास ढौढ़ कर आए, आपसे जुड़े रहना चाहें, आपका व्यक्तित्व सैकड़ों के बीच में उन्नत लिखे, यही तो आपकी कामना है और इसकी प्राप्ति कोई असभ्य बात भी तो नहीं। यह तो सहज संभव है, सम्मोहन जीका द्वारा प्रस्तुत लेख इन्हीं सब बातों की एक विवेचना है—

या काव्य की रूपात्मक भाषा में कहते हैं, विज्ञान भी उन्हीं तत्वों को कभी तरंगों का आधार लेकर, तो कभी अणुओं के तो बना, लेकिन मानस में अश्रु अर्थ ही प्रतिबिम्बित करने किन्हीं संयोगन-विघटन को रख अपना पक्ष स्पष्ट करता है, वाला। जनसामान्य इसे प्रेमी-प्रेमिका के आकर्षण-विकर्षण ज्ञान व विज्ञान में कोई मतभेद नहीं है। उनके प्रतिपादन के कोई कीर्तन मात्र समझता है, या सह कि हम अमुक को ढंगों में अन्तर है, जिससे वह एक दूसरे के विरोधी से लगने बाध्य कर उससे ऐसा कार्य बलात् ले सकेंगे। लगते हैं।

सम्मोहन के संदर्भ में भी यही बात है। हम जिसे आत्मा का एक विशिष्ट शीली और कला है अपने आप में ताजगी भरने प्रकाश, आधा प्रण्डल, दैवी आधा कह कर व्याख्यित करती है। इसके द्वारा व्यक्तित्व में आकर्षण, चुम्बकत्व, लपक जैसे हैं, विज्ञान उसी बात को इस रूप में बताता है कि व्यक्ति का गुण तो आने ही है साथ ही यह आन्तरिक रूप से भी उमंग, जब ध्यान शरीर के अमुक स्थान पर होता है, तो कोई अल्फा उत्साह और शीतलता देने का ऐसा सफल प्रयास है कि फिर या जीटा तरंगे निकल कर उसके चारों ओर चुम्बकीयता व्यक्ति की शक्तियाँ गुणात्मक रूप से बढ़ने लगती हैं, हम चाह बढ़ा देती हैं। सामान्य वर्ग ऐसा पढ़कर-सुनकर नहीं ही कर भी अपने स्टीन जीवन को बदल नहीं पाते। प्रभावित भी हो उठता है। प्रति प्रश्न तो इन व्याख्याओं के प्रत्येक व्यक्ति में प्रबल इच्छा होती है कि वह अपने जीवन साथ भी किये जा सकते हैं कि तरंग केसे उत्पन्न होती है? को सवार, उसमें रंग परे-आकर्षण के और उत्साह के। लेकिन चुम्बकीयता क्यों प्रत्येक व्यक्ति में अलग अलग होती है? उसके द्वितीय दिन के प्रयासों के बाद भी जब कुछ नया नहीं इत्यादि।

हमारा उद्देश्य विज्ञान की आलोचना करना नहीं क्योंकि वे लगती हैं, वह फिर सामान्य जीवन क्रम से समझीता कर दिन भी हमारे ही ज्ञान की पुष्टि में ही संलग्न है, और उनके प्रयासों, काटने लगता है। आलोचनाओं, शोध कार्यों से भारतीय ज्ञान को विश्व के समक्ष मंच मिला है। हमारा विवेच्य तो यह है कि हम कैसे के द्वारा जब व्यक्ति के अन्वर ताजगी, खुचाव और कुछ कौधने सम्मोहन विज्ञान को समझें और समझने से भी अधिक अपने जैसा भर जाता है, तब लोग उसके पास खिंच-रिंच कर आने जीवन में उतारें। लगते हैं। उससे बातें करने का प्रयास करने लगते हैं तो स्वतः

भारतीय पक्ष इसी से न्यून सा रह गया, क्योंकि उसने ज्ञान डी उसके मन में आत्म-विश्वास जगता है। को जीवन में उतारने पर अधिक बल दिया, उसकी विवेचना नीवन के प्रति नया उत्साह, नये सपने और उमंग आती है

वह सकारात्मक ढंग से सोचने की दिशा में जीवन में पहली बार बढ़ता है। कल तक उसे यही सम्भार जो अफिस, घर, बार बढ़ता है। कल तक उसे यही सम्भार जो अखबार की हेड लाइन के सिवा कुछ दिखता ही नहीं था, बद्दुत कुछ बबला-बबला सा दिखने लगता गहन व गोपनीय विषय है किन्तु अपने अर्थों में कोई गढ़ विषय है, तब उसे अपने घर के किसी मोड़ पर खिला कोई फूल भी नहीं है। दीक्षा तो सबसे सरल सीधा उपाय है किसी भी जान लुभा सकता है, कोई बच्चा उसका दो क्षण ध्यान को अर्जित करने का। ऐसे वर्षा का जल चारों ओर रो बहना अपनी ओर खींच सकता है और स्त्री उसको नये ढंग से मुन्दर हुआ व्यर्थ जा रहा हो उसे एकत्र कर बांध बना दिया जाए। उस दिख सकती है- जिस ढंग से उसने अभी तक स्त्री को देखा ही। एक दिन जल से बिजली भी बना ली जाए और खेतों में सियाई न हो। जब यह सब अन्दर घटित होता है तब व्यक्ति स्वयं भी कर ली जाए। दीक्षा इसी तरह का प्रयास है।

आकर्षण एवं सौन्दर्य से भर जाता है। वह विश्व का सौन्दर्य निहारता है और विश्व उसका सौन्दर्य।

सम्मोहन कोई ऐसी विद्या नहीं है कि आपकी आंखें खूब बड़ी-बड़ी हो जाएंगी या आप सम्मोहन करने के प्रयास में आंखें काढ़-फाढ़ कर सबको धूरते रहें, या आप रातों रात चालीस के बजाए बाईस के दिखने लगेंगे, किन्तु यह तो अवश्य ही होगा कि आपके शरीर में कुछ ऐसी प्रक्रियाएं आरंभ हो जाएंगी कि आप चालीस के होते हुए भी पच्चीस वर्ष के युवक का उत्साह और क्षमता अपने अन्दर स्वयं अनुभव करने लगेंगे, इस परिवर्तन से आपके अन्दर से उत्साह व आनन्द अग्रसर करें तो व्यक्ति के अन्वर सम्मोहन की अपूर्व दशाएं की जी तरंगें निकलेंगी उससे लोग खिच कर आपके पास जाग्रत हो जाती हैं। बैठेंगे, आनन्द अनुभव करेंगे।

यही सम्मोहन का मूल मूल है कि लोग आपके पास खिच कर बैठें और उनकी उठने की हच्छा न हो।

सम्मोहन यदि इस प्रक्रिया के रूप में अपनाते हैं तो वह भी एक श्रेष्ठ उपाय है किन्तु वह लम्बा मार्ग है।

सम्मोहन शक्ति का अपने शरीर में जागरण एक अन्य उपाय से भी संभव है और वह है कि हम योग्य गुरु से 'सम्मोहन टी.वी.' और अखबार की हेड लाइन के सिवा कुछ दिखता ही 'दीक्षा' प्राप्त करें। दीक्षा अपने आप में प्रक्रिया के रूप में तो नहीं था, बद्दुत कुछ बबला-बबला सा दिखने लगता गहन व गोपनीय विषय है किन्तु अपने अर्थों में कोई गढ़ विषय है, तब उसे अपने घर के किसी मोड़ पर खिला कोई फूल भी नहीं है। दीक्षा तो सबसे सरल सीधा उपाय है किसी भी जान लुभा सकता है, कोई बच्चा उसका दो क्षण ध्यान को अर्जित करने का। ऐसे वर्षा का जल चारों ओर रो बहना अपनी ओर खींच सकता है और स्त्री उसको नये ढंग से मुन्दर हुआ व्यर्थ जा रहा हो उसे एकत्र कर बांध बना दिया जाए। उस दिख सकती है- जिस ढंग से उसने अभी तक स्त्री को देखा ही। एक दिन जल से बिजली भी बना ली जाए और खेतों में सियाई न हो।

जब यह सब अन्दर घटित होता है तब व्यक्ति स्वयं भी कर ली जाए। दीक्षा इसी तरह का प्रयास है। व्यक्ति के अन्वर शक्ति के अणु जो इधर से उधर व्यार्थ से बहते हुए धूमते फिरते हैं उन्हें एक सुसंयोजित ढंग से एक विशिष्ट विश्व में गतिशील करना ही किसी भी दीक्षा का उद्देश्य होता है, इन्हीं को यदि महाकाली दीक्षा से आबद्ध किया जाए तो वे आनंदिक रूप से महाकाली की प्राप्ति की दशाएं निर्भित करते हैं, यदि लक्ष्मी प्राप्ति की ओर अग्रसर करें तो लक्ष्मी प्राप्ति होती है।

इन्हें ही हम यदि सम्मोहन दीक्षा के माध्यम से सम्मोहन प्राप्ति की ओर

शक्ति जाग्रत करने का प्रक्रियात्मक उपाय करते हैं, उन्हें भी एक स्तर पर आकर गुरु कृपा प्राप्त करना अनि आवश्यक हो जाता है, क्योंकि यह तो प्राण विज्ञान का क्षेत्र है और भारतीय शास्त्रों में गुरु को ही 'प्राण' कहा गया है।

# शिष्य धर्म

- गुरु कुछ करता ही नहीं, समुद्र चलकर गंगोत्री के पास नहीं पहुँचता। शिष्य को गुरु के पास जाना पड़ता है और उससे ज्ञान प्राप्त करना होता है।
- सेवा समर्पण और श्रद्धा—ये तीन ही रास्ते हैं जिनके माध्यम से शिष्य अपने खून का शुद्ध कर सकता है।
- जो गुरु कहे वह करे, उसे सेवा कहते हैं। जो तुम्हारी मर्जी हो वह करना सेवा नहीं है।
- शिष्य को ज्ञान देने से पहले उसका अंह गलाना जखरी है। शिष्य का कर्तव्य है कि वह इस कार्य में गुरु का पूरा सहयोग करे।
- शिष्य को चाहिए कि वह पाद पद्म न बने, उसे चाहिए वह विवेकानन्द बने। और उसके लिए सर्वोत्तम उपाय है श्रद्धा एवं समर्पण।
- ज्ञान के पुंज को प्राप्त करने के लिए जखरी है कि शिष्य को कसौटी पर कसा जाए। शिष्य को चाहिए कि वह गुरु की हर कसौटी पर खरा उतरे।
- शिष्य पर गुरु का ऋण है क्योंकि गुरु शिष्य को ज्ञान देता है। ज्ञान केवल गुरु की सेवा से प्राप्त हो सकता है।
- शिष्य के मानस में, चिंतन में, विचार में ज्ञान की गरिमा स्थापित गुरु करता है। इसलिए शिष्य का धर्म है कि वह गुरु सेवा करे और ज्ञान प्राप्त करे।

# गुरुवारी

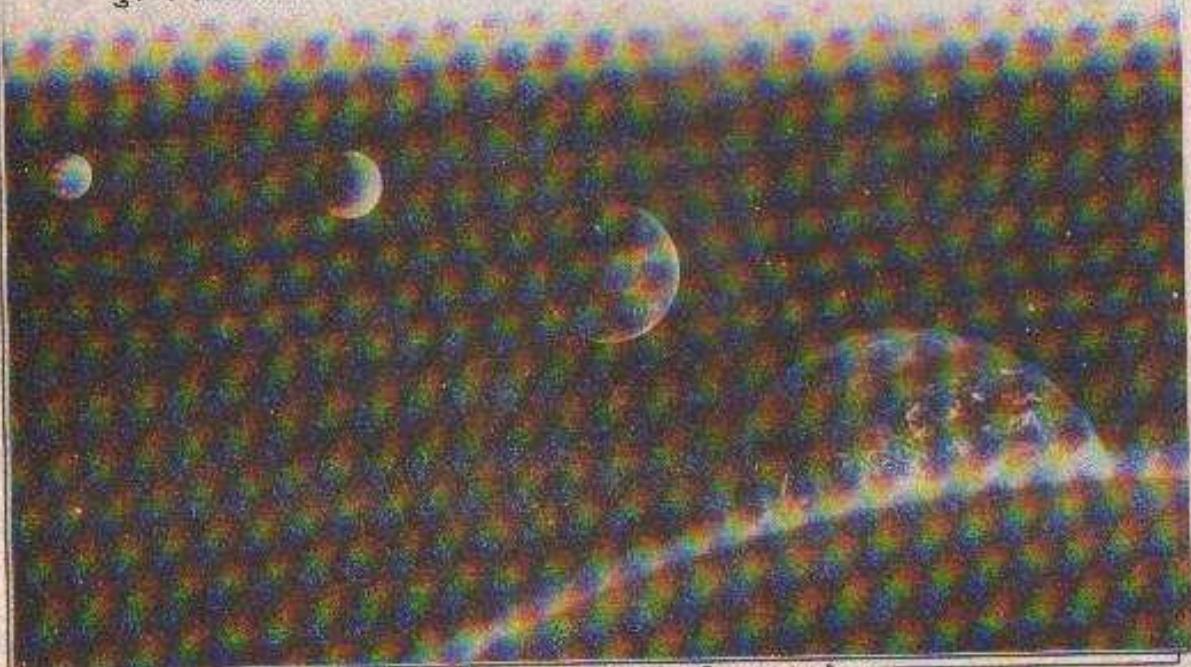
\* सदगुरुदेव के दोनों चरण कठमल पापों एवं तुरत्य से मुक्ति दिलाने वाले हैं। छुन चरणों के उपर्युक्त पूर्ण अग्रनन्द से परिपूर्ण हो जाता है।

\* गुरु ही वह सेहु है जिसके द्वारा शिष्य भव साक्षर को सहजता से पार कर लेता है। गुरु ही शिष्य में गुरुत्व का आलोक भर देते हैं।

\* गुरु स्वयं ही प्रेम की प्रतिमूर्ति हैं, उनके काशण ही संसार में प्रेम, माधुर्य होता है। सांसारिक जड़ पदार्थों में गुरु के काशण ही आगन्द व्याप्त है।

\* लीब पर अहेतु की कृपा करने में गुरु का कोई स्वार्थ नहीं होता। वे शिष्य को देते ही हैं, शिष्य से कुछ भी लेते नहीं।

\* गुरु के प्रसङ्ग हो जाने पर कोई भी कार्य असंभव नहीं रह जाता। अतः गुरु के प्रति समर्पण करना ही चाहिए।

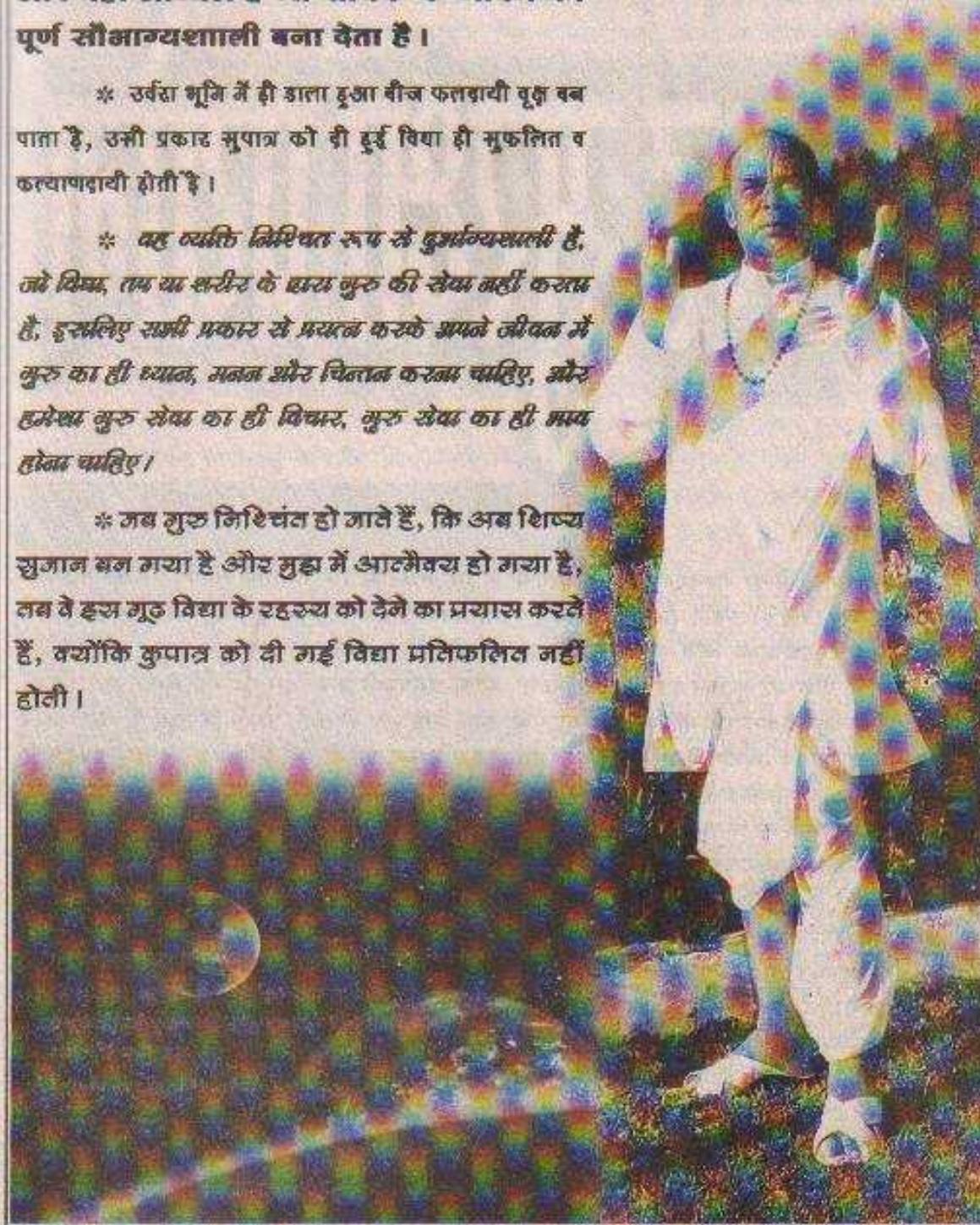


\* साधक को यहाँए कि प्रसन्न मन से  
अद्वा पूर्दक गुरु को ही अपना लक्ष्य बना ले  
और वही गाध्यग है जो साधक के जीवन को  
पूर्ण सौआन्यशाली बना देता है ।

\* उर्वसा भूमि में ही डाला हृषा बीज फलदायी वृक्ष बन  
पाता है, उसी प्रकार हृषाक्र को ही हृषि विद्या ही सूक्षित ए  
क्षत्याणदायी होती है ।

\* क्षु व्यक्ति किसिथा रूप से तुम्हार्यसाही है,  
जो विष्म, तम या कर्त्ता के द्वय गुरु की सेवा कर्त्ता करता  
है, हृषिए तभी प्रकार ये प्रकार करके आपने जीवन में  
गुरु का ही ध्यान, मन और चिन्ता करना चाहिए, और  
हमेशा गुरु सेवा का ही विचार, गुरु सेवा का ही ध्यान  
होना चाहिए ।

\* अब गुरु जिएंचंत हो जाते हैं, कि अब शिष्य  
सुजान बन गया है और मुहा में आत्मैक्य हो गया है,  
तब ते हज गृह विद्या के रहस्य को देने का प्रयास करते  
हैं, क्योंकि कुपात्र को दी गई विद्या प्रतिफलित नहीं  
होती ।



‘जि दिसम्बर’ 2001 मंत्र-लंब-यंत्र विज्ञान ‘45’

लियों की स  
ज्ञानम् सम  
ज्ञान मिथ्याजा  
वर में आग  
है। अपनी ही  
ज्ञान कुमारी  
ज्ञानतम् मंत्र उ  
द्वारा जीन बढ़  
याकृतेन से बढ़  
सकता है। म  
नाथिकारी व  
दम ने अपने  
सभी गुरुओं क  
जागिर मापद  
सब से।

आनन्दगु

# श्रीकृष्णमि

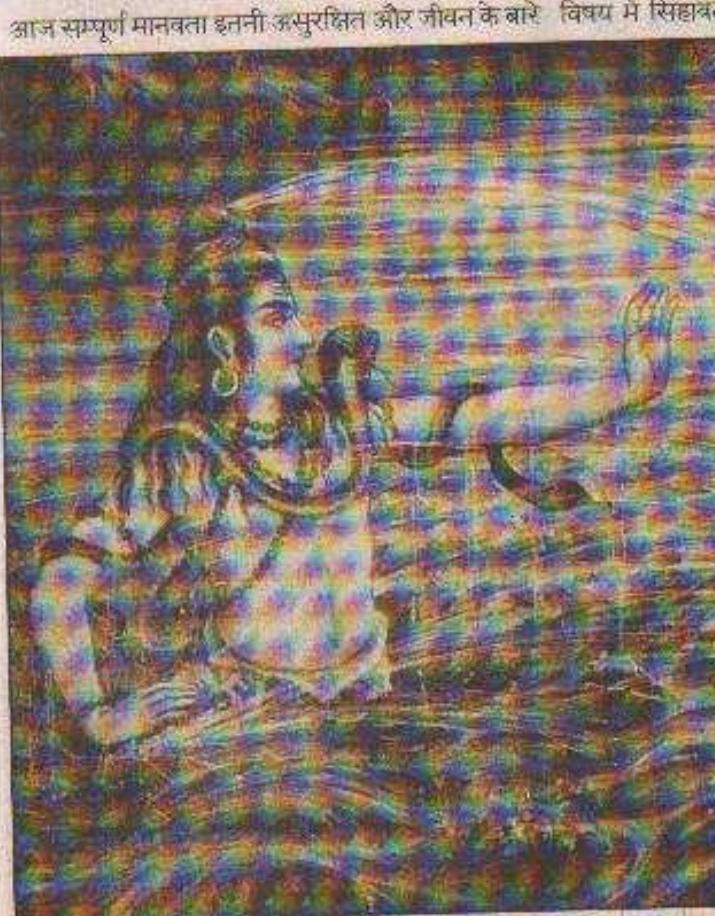
भारतीय मनोविदों का मानव जीवन एवं मावता के विषय में के द्वारा जीवन को उच्चतम बनाया, दीर्घायु और कायाकल्प के चिन्तन बड़ा ही स्पष्ट रहा है। उन्होंने जीवन के मूलस्वरूप माध्यम से इसे अजर तथा अपराजित किया। दैवी साधनाओं को समझने के लिए साधनात्मक विधि को प्रश्रय दिया था, से इसे सुरक्षित करके परमापुरुष तक पहुंचाया जहाँ काल का साधना के द्वारा ही जीवन को सुरक्षित एवं सुखद बनाया जा शौका असमय में आकर इसे उठा नहीं सकता था। वे सभी सकता है। उन्होंने जीवन के दोनों पक्षों भौतिक एवं अध्यात्मिक हमारे कृषि मृत्यु को अपने बश में किये हुए थे, बिना उनकी को समान रूप से जिया एवं उपभोग किया। पहले वे पूर्व पक्ष इच्छा के मृत्यु नहीं आ सकती थी, वे छछा से मृत्यु को वरण में धर्म का उर्पन किया वह उनका प्रात काल था। गृहस्थ जीवन करते थे। कालजीवी महापुरुषों के द्वारा ही यह भारत देश विश्व में प्रवेश करने के बाद अर्थ का चिन्तन किया, संस्कारित एवं गुरु की पदवी प्राप्त कर पाया था। वे काल की हर मनिविधि से उनम संतान को समाज के कल्याणकारी कार्यों के योग्य तैयार परिचित थे उस क्षण विशेष का उपयोग करना जानते थे, करके मोक्ष की ओर अग्रसित ध्यान धारण और समाधि को इसीलिए वे निर्भय एवं निर्झन्दु थे।

लक्ष्य बनाया। ईश्वर प्राप्ति के साथ परमानन्द का अनुभव किया। वे जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए उन्होंने जीवन के मूलभूत रूप को समझने के बाद ही पाया कि देवताओं की साधना करना जानते थे। मंत्र तथा साधनाओं के मानव जीवन पूर्ण है। पूर्णता प्राप्ति के लिए मनुष्य जीवन के द्वारा माध्यम से उन्हें अपने समझ आहूत कर सकते थे। रोग शोक ही सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है, पशु और पक्षी के जीवन को समाप्त करने के लिए उन देवता की अराधना तथा मंत्र साधना से यह संभव नहीं है, वे तो धोग योगि हैं। मनुष्य जीवन में ही करना जानते थे। यही एक विधि है जिसके द्वारा जीवन का आकर राम कृष्ण आदि महापुरुषों ने लीलाएं की तथा समाज अखण्ड सुरक्षित किया जा सकता है।

को दिशा निर्देश दिया। इसीलिए हमारे कृषियों ने मानव जीवन समय ने करवट बदली, उनको अपनी ही संतान ने कृषियों की सुरक्षा के लिए अकाल मृत्यु आदि तथा रोगों से बचने के उस पावन ज्ञान की, साधनाओं को समझने और सोचने से लिए सुरक्षा के अनेक उपाय ढूढ़े। अनेक मंत्र तथा तत्र साधनाओं इन्कार कर दिया। विज्ञान के इस चक्रांगीध में छतना खो गये

जियों की सन्तति कि अपने ही पूर्वज उन्हें बौने लगाने लगे। मैं चिन्मित है, जितना पहले कभी नहीं थी। इनने अब यस्ता जग्यात्म सम्बन्धी त्याग और तपस्या को उन्होंने आहम्नर तथा अणु बम्ब आदि होने के बाद भी सुरक्षित स्थान में रागने और भिष्याचार के कठघरे में ला खड़ा कर दिया। घर का दिया के लिए सर्वेत्र भगदड़ मची हुई है। इतना कुहराम भवा हुआ है, हूँ घर में आज नहा दे तो बाहर से कभी भी खतरा आ सकता जिससे पता लगता है, जीवन की अपेक्षा मृत्यु अधिक बलवटी है। अपनी ही सन्तान जब अपने जान को समझने में अक्षम हो प्रतीत हो रही है। सर्वत्र युद्ध की विभिन्निका तो बनो हुई है, जाए, कुमारी हो जाए तो शब्दा और समर्पण के अभाव में उस उसके साथ-साथ प्राकृतिक आपदा भी भयावह स्थिति उत्पन्न होत्यतम मत्र जान का दिया नहीं जल सकता। कुपात्र का दिया कर रहा है। इतनी संपदा-भी के बाद विज्ञान के सुरक्षा सम्बन्धी हुआ जान बहुत ही भयावह हो सकता है। पागल के हाथ में चिन्मत्तम पर संदेह उत्पन्न ही गया है।

चाकू देने से वह खुद-घायल होगा तथा औरों को भी चोट पहुँचा इस स्थिति से निपटने के लिए आज पुनः भारतीय ऋषियों चक्कता है। भगवत् पाद शंकराचार्य ने अपने अयोग्य और की जीवन संबंधी अनमोल धारणाओं की समझने के लिए सब अनाधिकारी को अपनी उच्चतम सिद्धियों को दिया। उस पाद प्रयत्नशील दियाई दे रहे हैं। चाहे लाख कोशिश कर ले जीवन पदम ने अपने ही गुरु को नहर देकर मार डाला। उसके बाद को सुरक्षित और आनन्दित करने के लिए अन्य उपाय नहीं हैं, ममी गुरुओं को सो दने के लिए विवर होना पड़ा। शिष्यता का ऋषियों की साधना सम्बन्धी उन धारणाओं को आत्मसात करना आखिर मापदण्ड क्षमा है? शिष्यता संवेद के धरे में आ गई ही पढ़ेगा जिन्होंने मानवता के निष्ठव्याङकारी कार्यों के लिए अपने को न्योद्धावर कर दिया। आज पुनः सुरक्षा के तरे से।



विषय में सिंहावलोकन करना ही पढ़ेगा तभी स्थाप्ती सुरक्षा प्राप्त हो सकेगी। अमेरिका और इंग्लैण्ड नेसे देश जो अपने को सबसे अधिक सुरक्षित समझते थे, आज वहीं अपनी सुरक्षा के विषय में मात खा गये, जो सदैव मानवता से खिलबाह करते रहे, अपने स्वार्थ के लिए भारत जैसे शांति प्रिय देश को धोखा देकर बुद्धिमान बनते थे, प्रकृति ने उन्हें भी दण्ड देकर अपनी शक्ति को उन्हें स्परण दिला दिया है।

इसमें सब से बड़ी गलती और अपराध भारतवासियों का रहा है, जिसके पास इतना ज्ञान का भण्डार हो, अपार साड़िल्य हो, उदासाम ऋषि मुनि जिनके पूर्वज ही विकालदर्शी यमराज के द्वार पर दस्तक देकर साक्षात् करने वाले पूर्वजों के रहने, यह इतना कमजोर और निरीह होता रहा है, अपने ही ज्ञान को लेचकर उनके सामने मेमने की तरह अपनी सुरक्षा के लिए भिमयते रहे हैं, आज देश में कोई भी स्वाभिमानी कहे जाने वाले नेता ही नहीं हैं आत्म गौरव गाथा को पुनर्जीवित करके अपनी संतान को बौरता

ठारे अस्ति मृत्यु को अपने देश में किये  
हुए थे, जिनकी हच्छा के मृत्यु बहु  
आ लकड़ी थी, वे हच्छा के मृत्यु को  
वरण करते थे। वे जात की छु गतिविधि  
के परिचित थे उस धरण खिंचाए  
उपयोग करते थे, इसीलिए वे  
दिक्षिण एवं दिर्घबद्ध थे। ऐसा ही उच्चज्ञोटि  
का प्रयोग है अक्षण्ड सुरक्षा प्रयोग।

का पाठ पढ़ा सके। इतना विशाल देश सर्व साधन सम्पन्न होकर  
कटोर लेकर जगह-जगह फिर रहे हैं, अपनी अस्मिन्ना और  
स्वाभिमान को भेरे आम जाजार में नीलाम कर रहे हैं, छोटे-  
छोटे देशों से मात खा रहे हैं। वो कौड़ी के देश जो अपनी सहायता  
से दीज कर रहे हैं, उनके सामने भी शिडिंगिड़ा रहे हैं। बिकाऊ  
और धोखे बाज नेता ही इस देश की शक्ति और गौरव को सेर  
आम नीलाम कर रहे हैं। आज भारत सभसे कमजोर अस्तिहीन  
बन गया है। ऐसा क्यों दुआ, इतने बुजिल इसलिए ही गये कि  
अपनी शिक्षा नीति पराधीन हो गई, हम नकली और नकलची  
हो गये। शिवाजी, महाराणा प्रताप और परशुराम तथा सुभाष करें।

जैसे वीर और स्वाभिमानी देश भक्तों की गाथा की धूरी अपनी  
सन्नातन को नहीं पिलाकर नाचने और गाने वाले हिजड़े बना रहे  
हैं। स्कूल, कॉलेजों में मास्टर और कलंकों तो बनाये, घूसखोर  
और कामचोर बाबू तो बनाये, किन्तु मर्यादित मानव नहीं बना  
पाये, निष्वार्योजन सेवक नहीं बना पाये।

आज क्रांतियों की उस चेतना को पूनः क्रियान्वित करने का  
समय आ गया है, उनकी साधनात्मक प्रक्रिया को उनके चरणों  
में डेटकर आन्वस्त करना चाहिए, उनके ज्ञान और चेतना को  
संचालन के लिए उन गुरुओं की सेवा करनी पड़ेगी, शिष्यत्व के  
मापदण्ड को अपनाना पड़ेगा, समर्पण शक्ता और सेवा उस ज्ञान  
को प्राप्त करने का मूल सूत्र है तभी हम अखण्ड सुरक्षा के विषय  
में पूर्ण आश्वस्त हो सकते हैं। तभी अकाल मृत्यु और मृत्यु के  
भय से मुक्त होकर निर्भय हो सकते हैं भीष्मपिता की तरह हच्छा  
मृत्यु का वरण करने का सामर्थ्य प्राप्त कर सकते हैं, ऐसी ही

निर्भयता एवं संपूर्ण रोगों एवं भय से मुक्ति हेतु है यह अद्वितीय  
प्रयोग। इस प्रयोग में जो सामग्री प्रयुक्त होती है वह इस प्रकार है।

न्यायक्षमारव शिवलिंग, लंद्रेश माला, सुरक्षा गुटिका, अमृत  
साक्षिणी कायाल्प मुद्रिका।

### साधना संबंधी कुछ नियम

१. अनुष्ठान शुभ दिन और शुभ मुहूर्त में शुरू करना चाहिए।
२. अनुष्ठान में पूर्व दिशा की ओर मुख करके बेठें।
३. मंत्र जप निश्चित समय में प्रति दिन करें।
४. धी का दीपक तथा अगरबनी मंत्र जप तक जलते रहना  
चाहिए।
५. पूरे साधनाकाल में ब्रह्मचर्य का व्रत का पालन करें।
६. अनुष्ठानकाल में सात्त्विक चिंतन एवं मनन करना चाहिए।

### साधनाविधि

प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नानादि नित्य किया से निवृत  
होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करें, पूर्व दिशा की ओर मुख करके  
आसन पर बैठें, पूजन की सभी सामग्री को अपने समीप रख लें  
तथा धूप और दीप जला लें, इसके बाद सबसे पहले गुरुपूजन  
करें, दोनों हाथ जोड़ करके प्रार्थना करें-

गरुब्रह्मा गुरुविष्णु गरुदेवो महेश्वरः ।

गुरु साक्षात् पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरु नमः ॥

धूत दीप पुष्पादि से पूजन के बाद २ माला गुरु मंत्र जप करें।

गणपति पूजन दोनों हाथ जोड़कर भगवान गणपति का स्मरण

गजाननं भूत गणाधिसेविनं

कपितथं जन्म्बू फलं चारू भक्षणं

उमासुतं शोक विनाश कारकम् ।

नमामि विघ्नेश्वरं पादं पंकजम् ॥

ॐ गणाधिपतये नमः

इसके बाद न्यायक धंत्र को किसी प्लेट में स्वस्तिक बनाकर  
स्थापित करें, मुद्रिका को पहन लें तथा गुटिका को धंत्र के सामने  
स्थापित करें।

### संकल्प-

दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न संवर्षम को बोलें -

ॐ नम आत्मनः शरीरे सर्वरोग मृत्यु भय

आवि निरशन पूर्वकं आश्रम्य प्राप्ति अर्थम्

महामृत्युंजय देवता प्रीतये मंत्र जप अहं करिष्ये

जल भूमि पर छोड़ दै-

### करन्यास :

ॐ हौं जूः सः भूर्भुवः स्वः ऋग्बकं

ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा अंशुषाभ्यां नमः करें।

ॐ हौं जूः सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय।

अमृत मूर्ति मां जीवाय वद्ध तर्जनीभ्यां नमः;

ॐ हौं जूः सः भूर्भुवः स्वः सुणन्थि पुष्टि वर्धनं.....

ॐ हौं जूः सः भूर्भुवः स्वः उवरुक्मिव बन्धनात्

ॐ नमो भगवते रुद्राय। त्रिपुरुष्टकाय अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ हौं जूः सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मृत्यीय ॐ नमो भगवते  
रुद्राय त्रिलोचनाय क्रण, यजुःसाम मंत्राय  
कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

### हृव्यादि न्यासः:

करन्यास में विये हुए संदर्भों का उसी तरह उच्चारण करें और विभिन्न अंगों को ढाहिने हाथ से स्पष्ट करें-

(१) ॐ शूलपाणये - हृव्याय नमः

(२) ॐ जीवाय - शिरसे स्वाहा

(३) ॐ शिखाये - वृषद्

(४) ॐ कवचाय - हुम्

(५) ॐ नेत्रवयाय - वौषट्

(६) ॐ अधोरास्त्राय - फट्

### ध्यान -

दोनों हाथ जोड़ कर भगवान् मृत्युंजय का ध्यान करें-

हस्ताम्भोज युगस्थ कुम्भ सुगलावृ उधृत्य तोर्य शिरः

सिंचन्ते करयोयुगिन वधतं स्वाक्षे सकुम्भी करो।

अक्ष संगम्य छस्त्रमध्यज गतं मूर्दस्थ अन्दस्थवत्।

पीयूषार्द्ध तनु भजे सगिरिजं यक्षं च मृत्युंजयम्।

### आवाहन -

हाथ में पूष्प और अक्षत लेकर भगवान् शंकर का आवाहन

आवाहामि वेवेशम आदिमध्यान्तवर्जितम्।

आधरं सर्वलोकानां आश्रितार्थ प्रदायिनम्।

ईदम् आवाहनं समर्पयामि नमः;

भगवान् शंकर का शेष पूजन उसी तरह करें जिस प्रकार आप प्रति दिन करते हैं। इसके बाद यंत्र का पूजन, स्नान, तिलक, धूप दीप, पूष्प और अक्षत चढ़ाकर करें। शुटिका का भी कुंकुम और अक्षत से पूजन करें। प्रति दिन इसी प्रकार पूजन के बाद निम्न मंत्र का ५ माला रुद्रेश माला से जप करें। यह ११ दिन की साधना है।

### मंत्र

ॐ हौं जूः सः भूर्भुवः स्वः ऋग्बकं यजामहे सुणन्थि पुष्टि  
वर्धनं उवरुक्मिव बन्धनान् मृत्योर्मृत्यीय मामृतात्।

जप पूरा होने के बाद बायें आश में अक्षत लेकर निम्न संदर्भ को बोलते हुए यंत्र पर प्रति दिन चढ़ावें।

ॐ अधोराय नमः;

ॐ पशुपतये नमः;

ॐ शबायि नमः;

ॐ विरुपाक्षाय नमः;

ॐ विश्वरूपिणे नमः;

ॐ ऋग्बकाय नमः;

ॐ कपदिने नमः;

ॐ धैरवाय नमः;

ॐ शूलपाणये नमः;

ॐ ईशानाय नमः;

अनुष्ठान पूर्ण होने पर निम्न मंत्र से भगवान् मृत्युंजय को जायफल समर्पित करें।

### मंत्र

ॐ हौं हौं जूः सः नमः शिखाय प्रसन्न पारिजाता स्वाहा।

११ दिन के बाद इस मंत्र को एक माला प्रति दिन करें। यह एक वर्ष तक करें, इस प्रकार भगवान् शंकर के प्रसन्न होने पर आप को निश्चित रूप से मृत्युंजय होने का सौभाग्य प्राप्त होगा तथा निर्भय जीवन की प्राप्ति होगी।

एक वर्ष के बाद सभी सामग्री को जल में विसर्जित करें।

साधना सामग्री - ३६०/-

# उच्च रक्तचाप

## ‘हाई ब्लड प्रेसर

### को आयुर्वेदिक उपचार

आयुर्वेद-चिकित्सा प्रणाली में ‘उच्च रक्तचाप’ नाम को कोई फैल जाती है। यह धमनियों की संकुचनशीलता के कारण रोग नहीं है। यह मानना सर्वथा भूल है। इसका वर्णन सम्भव हो सकता है। इस ओर विशेष ध्यान केवल आयुर्वेद में आयुर्वेदशास्त्रों में वातरोगों के अन्तर्गत आता है। इसका ही दिया गया है।

आयुर्वेदिक नाम ‘शिरागत वात’ है। रक्तचाहिनियों नथा धमनियों पर रक्त का अधिक दबाव पड़ना और उनका कठोर होना ही ‘शिरागत वात’ है। शिरा और कोशिकाओं की दीवारों पर भी रक्त के अधिक दबाव के कारण उच्च रक्तचाप होता है। यह दो प्रकार का होता है-

वृक्षसर परिणाम रक्त के कारण धमनियों में एक लहर पैदा होती है, जो प्रारंभ में प्रबल होती है और धीरे-धीरे कोशिकाओं में पहुंचने से पहले अदृश्य हो जाती है। धमनी जितनी कठोर होगी, लहर उतनी ही तीव्र गति से चलेगी। जितनी मकुर्चनशीलता होगी, उतनी ही धीमी गति से चलेगी।

#### उच्च रक्तचाप के लक्षण

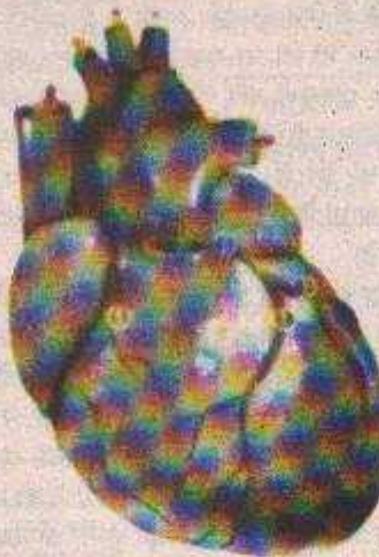
१. उच्च रक्तचाप या शिरागत वात।
२. न्यून रक्तचाप (लो ब्लडप्रेशर)।

यहां पर केवल ‘उच्च रक्तचाप’ पर ही विचार किया जा रहा है।

१. रोगी के सिर में, विशेषकर सिर के पीछे की ओर कनपटियों अर्थात् कान के पीछे के भाग में दर्द होता है। यह सिरदर्द कभी कम अवश्य कभी अधिक होता है।

सम्प्राप्ति-मनुष्य का हृदय लगभग सात तोला रक्त एक बार के संकोचन के समय धमनी में फेंकता है। इससे पहले भी धमनी में रक्त पूर्णरूप से भरा रहता है। धमनी में अतिरिक्त रक्त के फेंके जाने से धमनियों में दबाव पड़ता है और उनकी दीवार

२. रोगी को सुबह और शाम को चक्र आमे लगता है। ३. हृदय की गति (चाल) अधिक हो जाती है। हृदयप्रदेश पर दर्द भी महसूस होता है। यह कभी भी हो सकता है। ४. रोगी का कार्य करने में मन नहीं लगता है। वह स्वभाव



से विद्विदा हो जाता है। शोषा-सा कार्य करने पर भी उसे अकान आ जाती है।

५. रोगी की स्मरणशक्ति धूरि-धीरे कम होने लगती है।

६. रोगी को निद्रा कम आती है और आती भी है तो दृट-दृट कर आती है।

७. मन्दाग्नि हो जाती है अर्थात् भूख कम होने लगती है और खाने में असुविधा होने लगती है।

८. पेशाब की मात्रा कम होने लगती है। जांच करवाने पर पता चलता है कि पेशाब में शक्कर अलब्यूमन अथवा युरिक एसिड बढ़ गया है।

९. उच्च रक्तचाप होने पर नाक और शरीर के अन्य अंगों से 'रक्तसाव' होने लगता है।

१०. मल आदि का अनियमितत्वाग और उसमें बदबू अधिक आती है।

#### आयुर्वेदकी दृष्टि से उच्च रक्तचाप के कारण

१. इसका मूल कारण शरीर में 'बात' की अधिकता है। इससे धमनियां कठोर हो जाती हैं।

२. यह मनुष्य के अनियमित दिनचर्या के कारण हो सकता है। जैसे-समय पर न उठना, समय पर मल-त्याग न करना, व्यायाम न करना, शाकाहारी भोजन न करना, समय पर विश्राम न करना, अनावश्यक परिष्कार करना और समय पर न सोना।

३. स्त्रियों में मासिक धर्म बढ़ होने के समय अनियमितता का होना।

४. अधिक शोष, मानसिक शोष, चिन्ना एवं क्रोध होने से भी रक्तचाप बढ़ सकता है।

#### उच्च रक्तचाप रोग का निर्णय

आयुर्वेद चिकित्सा-पद्धति के अनुसार इस रोगविज्ञान हेतु शक्तिणी नाड़ी के विषय में विशेष ज्ञान होना अनिवार्य है। इसमें निम्नलिखित तीन बातों का समावेश है-

१. नाड़ी-स्पन्दन की संख्या का साप।

२. स्पन्दन की तालबद्धता का ज्ञान।

३. नाड़ी की संकोचनशमता।

आज तो प्रायः अधिकांश परिवारों में स्त्री एवं पुरुषों में उच्च रक्तचाप- रोग देखा जाता है। यदि यह शरीर में एक बार प्रवेश कर जाता है तो इससे स्थायी रूप से पीछा छुड़ाना कठिन हो जाता है। इसलिए एलोपैथी चिकित्सा-पद्धति में यह असाध्य रोगों की श्रेणी में आता है और इसका इलाज रक्तचाप बढ़ जाने पर केवल लक्षणों को दूर करने की ओर ही होता है, जैसे अनिद्रा को दूर करना आदि।

इसके मूल कारण (१) धमनियों की कठोरता को दूर करना और उनमें पुनः संकुचनशीलता लाना (२) हृदय की गति एवं स्पन्दन की ताल में एक-बद्धता लाना। यह केवल आयुर्वेद द्वारा ही सम्भव हो पाया है।

इसके विकारों का उल्लेख महर्षि चरक ने सूत्रस्थान अध्याय २० में ८० प्रकार का किया है। (अशीनिर्वातविकार: २०। १०) इनमें से कुछ एलोपैथिक 'हाई ब्लडप्रेशर' के लक्षणों के समान हैं। जैसे हृदय की घड़ियां, दांतों का दृटना, कण्ठनाद, कलपटी में भेदन के समान पीड़ा, अल्पश्रम में धक्कन आ जाना, कम्पन, नींद का न आना आदि।

यदि आयुर्वेदिक स्वस्थवृत्त का अनुपालन हो तो रोगी को अधिक लाभ औषधि के बिना ही हो सकता है।

#### आयुर्वेदिक चिकित्सा

आयुर्वेद-चिकित्सा के अनुसार 'बात', 'कफ' और 'पित' का सम होना ही स्वस्थ शरीर का लक्षण बताया गया है। सदा स्वस्थ एवं नीरोग रहने के लिए आयुर्वेदिक 'स्वस्थवृत्त' के निम्न नियमों का पालन करना आवश्यक है-

१. कायिक, वाचिक एवं मानसिक रूप से ब्रह्मचर्य का पालन करे।

२. शारीरिक और मानसिक कार्य उतना ही करे, जिससे अधिक श्रम न पड़े।

३. नित्य प्रातः वन अथवा धने पेड़ों वाले स्थान पर घूमने जाए। यहाँ प्रकाश एवं स्वच्छ हवा का अच्छा प्रबंध हो, ऐसे स्थानों का सेवन करें।

४. नित्य तिल के तेल का अध्यंग करके कुनकुने पानी से स्वान करें।

५. रात्रि में सूर्योदय से पहले भोजन करे और निश्चित समय पर सोये।

६. सत्पाहिन्य पढ़ने- लिखने की थोड़ी-थोड़ी आदत अवश्य रखनी चाहिए। मस्तिष्क को यकान न आये, ऐसा मानसिक कार्य करे।

७. प्रातः शीतशुद्धि हो जाने की ओर विशेष ध्यान रखें।

जड़ी-बूटियों अथवा अन्य आयुर्वेदिक क्रियाओं द्वारा निर्धारित आवधियों का प्रयोग

आधुनिक विज्ञान ने हृदयरोग के निदान के लिए बार्डपास संजीवी, पेसमेटर-जैसी अनेक अत्यन्त खर्चीली सुविधाएँ ईजाव की हैं, किन्तु इनका उपयोग साधारण रोगी नहीं कर सकता है और यह भी तथ्य सामने आये हैं कि ऑपरेशन कराने वाले को जीवन भर अनेक अन्य बीमारियों का सामना भी करना पड़ता है।

१. धरणियों की कठोरता दूर करने के लिए सर्वप्रथम वैद्य दस रोग में बनस्पति 'सर्पगन्धा' अर्थात् 'सरपिना' गोलियों या इसके अन्य कम्पाउण्डों का उपयोग करते हैं।

सरपिना उष्ण प्रकृति होने से पित्त प्रकृति वाले व्यक्ति जो उच्च रक्तचाप के रोगी होते हैं, इसका प्रयोग करने पर तुरंत घबराहट तथा बेचीना का अनुभव करते हैं और इस प्रकार की औषधि का पुनः सेवन करने से इन्कार करते हैं।

२. धीया (लौकी) हृदयरोग में रामबाण औषधि सिल्ह हुआ है। अनेक हृदयरोगियों ने इसका उपयोग किया और रोग से छुटकारा पाया है। हृदयरोगियों के लिए इस अनुभूत प्रयोग की विश्विद्धि इस प्रकार है-

धीया को पीसने समय पोदीना के ५-६ पसे तथा तुलसी के ८ पसे उस में ढाल दें। फिर पीसे हुए धीया को कपड़ान करके उसका रस निकाल लें। उस रस की मात्रा १२५-१५० ग्राम होनी चाहिए। इसमें इतना ही स्वच्छ नल मिलाएं। अब यह २५० से ३०० ग्राम रस हो जाएगा। इस रस में चार काली मिठां का चूर्ण तथा एक ग्राम सैधा नमक मिलाएं। अब इस रस को भोजन करने के आधा वा पीन घंटे के पश्चात सुबह बोयहर से पूरी तरह मूँह मिल जाएगी।

एवं रात्रि में तीन बार लें। प्रारंभ में ३-४ दिन तक रस की मात्रा कम भी ली जा सकती है। रस हर बार ताजा लेना चाहिए। प्रारंभ में यदि पेट में कुछ गड़बड़ाहट महसूस हो तो यिन्नित न हों। धीया का यह रस पेट में पल रहे विकारों को भी बुर कर देता है। तीन बार औषधि लेने में कठिनाई हो तो आधा-आधा किलो धीया इसी प्रकार सुबह-शाम लिया जा सकता है।

धीया पहले पांच दिन तक लगातार लेना होगा, फिर २५ दिन का अंतराल देकर, पांच दिन तक लगातार लेना। इसे कम-मेरे कम तीन महीने तक लेना होगा। उपचार के दौरान कोई भी खट्टी वस्तु न लें। न तो खट्टे फल, न टमाटर, न नीबू। इसके साथ एक गोली एकोस्प्रिन की १५० मि.ग्रा. सुबह-शाम को तथा एम्पोलिन की गोली लें। हृदयरोगियों को मांस, मदिरा, धूमपान आदि का पूरा तरह त्याग करना आवश्यक है। चार-पांच किलोमीटर टहलना भी जरूरी है।

### एक और रामबाण नुस्खा

यदि हृदय गड़बड़ करने लगे तो एक अन्य उपचार यह है- एक चम्मच पान का रस, एक चम्मच लहसुन का रस, एक चम्मच अदरक का रस, एक चम्मच शहद-इन चारे रसों को एक साथ मिला ले और पी जाएं। इसमें पानी मिलाने की आवश्यकता नहीं है। इसे दिन में एक बार सुबह और एक बार शाम को पियें। तनाव तथा चिन्ता से मुक्त होकर इसका प्रयोग करें। हृदय में कोई और कठिनाई हो तो जो दवा लेते रहे हैं उसे ले लें। यह नुस्खा २१ दिन का है। अगे चलकर इस दवा को यदि प्रतिदिन सवेरे एक समय लेते रहेंगे तो हृदयरोग कमी नहीं होगा।

एक तोला काली साबूत उड्ड रात को गरम पानी में भिगो दें। सवेरे पानी से उड्ड के दाने निकाल लें तथा उड्ड को छिलके समेत सिल्हड़े पर पीस लें।

एक रामबाण लेप उड्ड की इस पिंडी को एक तोला शुद्ध गुण्गुल के चूर्ण में भिगा लें। इस योग को खल-बटे में डालकर एक तोला अरड़ी का तेल और गोकुञ्ज ये बना एक तोला मक्खन डाल कर उसे हुंग से भिगा लें। काफ़ि देर तक इसे खल बटे में रख दें रहें। स्नान करने के बाद शरीर को पौष्ट कर इस लेप को छाती से पेट के पास तक मल लें। चार घंटे के लिये लेट जाएं। उट-बैठ भी सकते हैं। जब लेप सूख जाए तो स्नान कर लें। यह प्रयोग प्रतिदिन सुबह पांच दिन तक करना चाहिए। एक महीने के अंतराल के बाद फिर पांच दिन तक करें। हृदयरोग से पूरी तरह मूँह मिल जाएगी।

4

# ज्ञाना शास्त्रम्

ॐ

# साक्षर प्रयोग

5

## साक्षर प्रयोग

साक्षर प्रयोग अपनी विधि...

किल्हात है, इनका प्रभाव तुरंत और धीम होता है, जैसे...  
मैं भी साक्षर मंत्रों पर विशेष ध्यान दिया है और इस बात की  
ख्वाक्षार किया है कि ये मंत्र विश्वने में भले ही सीधे-सरल और  
सामान्य प्रतीत द्यें हीं परंतु इनका अचूक प्रभाव होता है।

पूरे जैन साहित्य में सैकड़ों हजारों उदाहरण हिए गये हैं  
जिनसे यह पता चलता है कि उच्च कोटि के योगियों, यतियों  
और मुनियों ने साक्षर मंत्रों के माध्यम से समान का दृष्टि दूर  
किया है और उनके कार्य सुधारे हैं, कई बार इन प्रयोगों को  
आजमाया है और प्रत्येक बार ये प्रयोग सफल नित्य हुए हैं।

नीचे मैं जैन साहित्य में से कुछ महत्वपूर्ण प्रयोग दें रडा हूं  
जो कई बार आजमाये हुए हैं और जिनका असर प्रत्येक बार  
प्रानाणिकता के साथ सफल अनुभव हुआ है।

इस प्रयोग का प्रा...  
मैं अपने

सामने 'श्री गुटिका'

किसी पात्र में रख द...  
ने सामने

विजय माला से २६ माला मंत्र जप करे। इस प्रकार केवल तीन

दिन प्रयोग करें, मंत्र पढ़ने समय सफेद धोती प्रहने, इसके

अन्ताबा शरीर पर अन्य कोई वस्त्र न हो, अपना मुंह पूर्व दिशा

में रखें।

मंत्र

हीं श्री अहं अ सि आ उ सा अनाहत विधेयं अहं नमः।

जब तीन दिन प्रयोग समाप्त हो जाए तब वह विजय माल

गले में धारण कर नें और वह सिद्ध की हुई 'गुटिका' दुकान में

या गल्लो में अध्वा जहां पर लपये पैसे रखते हैं, वहां पर रखें तो

२  
आधिक  
३  
जाप।  
स्थान  
४  
स्नान  
५  
समय  
६  
रखने  
कार्य  
७  
आप  
८  
सर्जि  
की हैं  
और  
जीव  
है।

इस  
या ह  
१  
उच्च  
दब्द  
और  
है।  
छुट  
विरि

८।  
करन  
ग्राम  
यह  
मिन  
को



व्यापार लिना ही रहता है, लक्ष्मी समृद्धि के उत्पत्ति द्वारा यीं, समृद्धि केन भी लक्ष्मी का ही प्रतीक माना गया। २। अतः उस पर आप ज्योग प्रभाणिक रहता है, विजय माला में एक मनका रक्षितक दरपार रक्षाश तीम्बरा मुण्डा का होता है, इस प्रकार से पूरी माला गंधी हुई होती है।

वरनुतः प्रत्येक व्यापारी बंधु का यह प्रयोग करना ही चाहिए।

साधना सामग्री - ३००/-

### रोग लाशक प्रयोग

पर में किसी को व्यार या गदा हो, या किसी प्रकार का रोग हो या ऐसी स्थिति बन गई हो कि वर में कोई न कोह गंभीर बना रहता ही, रोग पर वसावर चर्चा होनी रहती ही और रोग विप्रवण में नहीं आ रहा ही या बीमारी से परेशान हो गया हो तो यह प्रयोग अनुकूल माना है।

किसी भी शुद्धवार के अपने सामने तीन भूजे के टुकड़े, रख दें, जो में पिल्ल त्राप प्रतिष्ठा मुक्त हों, फिर उन पर जल धार चढ़ावें और फिर दूध में थोकल फिर जल चढ़ावें, जल चढ़ाने समय बिना मत्र का १०८ बार उच्चारण करें, इनके बाद भूजे के टुकडे खिकान कर जलन रख दें, और वह दुष्प्रिय भिक्षिन जल पूरे धर में छिपक दें तथा एक घम्मत रात्रि को फिला दें।

इस प्रकार मात्र तीन किन प्रयोग करें तो धर तो बीमारी इमेशा-हमेशा के लिये कली जाती है, और रोगी को तुरंत आश्रम

मिलता है।

### मंत्र

ऐ हीं कली कली कली अह  
नमः ।

वस्तुतः यह प्रयोग आजमात्रा हुआ है, और महन्वपर्ण है।

साधना सामग्री - २२०/-

### आत्म रक्षा प्रयोग

आजकल चालो तरफ शब्द  
ऐर विद्यार्थी ब्रह्म वर्णे है, न मन्त्रम्  
ब्रह्म कीन द्वाला कर दे, अथवा  
कोइ तांत्रिक प्रयोग कर दे तो  
जीवन बरबाद हो जाता है।

इसका रखा के लिये आजम  
रक्षा प्रयोग है, जिसका भी  
नाम में नाम है, या विद्यके  
पास भी धन दीनत है, उसको नित्य यह प्रयोग करना चाहिए,  
इसमें 'आत्म रक्षा गुटिका' अपने सामने रखकर मात्र ज्याह  
बार मंत्र उच्चारण कर वह गुटिका पूज, अपने स्थान पर रखने  
तो रक्षा प्रयोग का प्रभाव चाँचोस धृत रहता है, यह गुटिका प्रव  
भिन्न होनी चाहिए, और इसे यात्रा के बजाय वा बाहर जाने  
समय अपने साथ ले ना सकते हैं, इसमें केवल ज्याह बार मंत्र  
जप ही पर्याप्त है।

### मंत्र

पठम द्वितीय मंगलं ब्रजमह शिलामस्तकोपरिणमो अरहताण  
अंगृह्योः णमा सिलाणं तर्वन्योः णमो आवरियाण मध्यमो  
णमो उवज्ञायाणं अनाभिकयो णमो लोपसववग्राहूण  
कनिष्ठकयोः एसो पञ्च णमोकाशो ब्रजमह प्राकारं  
सव्वपावपपणासामे जलभृतवातिका मंगलाण च सव्वेषि  
खण्डिरांगार पूज्य खातिका।

वरनुतः इन में से एक दो वार उच्चारण करना भी  
सिद्धिदायक माना जाया है।

साधना सामग्री - १५०/-

### मनोकामना सिद्धि

हमरे सामने नियम कई स्मरणारूप और कार्य उपलिखित होने  
हैं, जिनके सम्पर्क होने से प्रगति होती है और अनुकूलता प्राप्त होती  
है, परन्तु ये जागीरों की बालपन्नता में बाधाएँ भी जाती हैं, यदि

वरनुतः

समने याति

तरे काम

इच्छन या

कौजदा

इन से यह प्रयोग करके निकले तो निश्चय ही सोचा हुआ कल्य  
न्यस्त होता ही है।

प्रातः, उठकर सकेव आक के बने हुए गणपति के नामने  
मन्त्र न्यारह बार हम मंत्र का उच्चारण कर लें, और प्रार्थना करें  
के पह कार्य आज मेरा सिद्ध हो जाए, गणपति के सामने गृह  
का भोग लगा दें, फिर काय के लिए घर से निकल जाएं तो वह  
जार्य अवश्य ही सफल होता है, गृह का जो भोग लगाया हुआ  
है, वह घर में या बाहर बाट दें।

### मंत्र

ॐ ही अ सि आ उ सा नमः।

वस्तुतः, यह मिठा प्रयोग है, श्वेतरक गणपति बड़ी कठिनाई  
में प्राप्त होते हैं, परंतु मंत्र मिठा गणपति प्राप्त हो जाए, तो जश्वर  
दर्शन में स्थापित कर लेने चाहिए, क्योंकि यह प्रयोग कई कई  
प्रतियों के लिए उपायक बने रहते हैं।

साधना सामग्री - ₹८०/-

### ५. नवशह अरिष्ट निवारक प्रयोग

गही का प्रभाव होता ही है, मगर जैन साहित्य में एक ऐसा  
भी प्रयोग है, जिससे किसी भी प्रकार के यह का दोष समाप्त हो  
जाता है, और उसका अशुभ फल मिटकर वह शुभ फल बने  
जाते हैं।

ताम्रपत्र पर अंकित नवशह यंत्र की अपने सामने रख दें  
और निन मंत्र की एक माला परें, इन प्रकार अशुभ दिन नक  
करने से छु, महीन तक अशुभ गही का दोष व्याप्त नहीं होता,  
छु महीने के बाद अबलड तिन का पुनः प्रयोग किया जा नकता  
है।

यो यथि व्यति च है तो नित्य न्यारह बार इन मंत्र का उच्चारण  
कर दे, तब भी उसके जीवन में गही की अशुभ आधा व्याप्त  
नहीं होती।

### मंत्र

सूर्य मंगल - ॐ ही णमो सिद्धार्थ  
चन्द्रमा शुक्र ॐ ही णमो अरिहंतार्थ  
बुध वृहस्पति ॐ ही णमो उच्चज्ञायार्थ।

शनि शुक्र ॐ ही णमो लोग अव्वमाहृण।

वस्तुतः, यह आजमाया हुआ प्रयोग है, और नवशह यंत्र के  
सामने यदि नित्य न्यारह बार उच्चारण किया जाए, तो उसके  
पारे काम सफल होते रहते हैं, और किसी प्रकार का कोई  
अहंक या बाधा नहीं आती।

साधना सामग्री - ₹५०/-

### ६. फौजदारी दीवानी मुकदमा निवारण प्रयोग

४. 'दिवान्यर' २०११ मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '३७' ८

नहीं चाहते हैं, भी कड़ बार मुकदमों में उलझना पड़ता है,  
और ऐसी स्थिति में जीतना जीतने का एजेंट बन जाता है, यह  
प्रयोग महत्वपूर्ण है, मुकदमे के दिन 'विजय यंत्र' के सामने  
निम्न मंत्र की एक माला अर्थात् ३०८ बार उच्चारण करके जारी  
की परें होना है, तो निश्चय की उसके हक में हो निर्णय होता है, उस दिन जो  
भी बहस होता है, वह भी उसके हक में ही होता है, उसके  
मुकदमों के जीतने के आसार बढ़ जाते हैं, शक्ति या विरोधी पक्ष  
परास्त हो जाता है, वह या तो समझीना कर लेता है या अपनी  
हार मान लेता है।

### मंत्र

ॐ ही श्री कल्पी चक्रज्वरी कार्यसिद्धि विजय देहि देहि स्यादा।  
यह प्रयोग पूर्ण सफलता देने में सकारक है।

साधना सामग्री - ₹८०/-

### ७. वशीकरण प्रयोग

पहले ही दिन उपवास करें और तीसरे दिन फूल पर ३०८  
बार मंत्र बोलकर वह फूल या पृष्ठ जिसकी भी दो ओर वह वर्ण में हो  
जाता है।

### मंत्र

ॐ सो भगवउ अरहउ महाविद्या वशीकरण भगवउ  
ठः ठः ठः स्वादा।

वस्तुतः, यह सरल और सुविधाननक प्रयोग है और उसको  
आजमाया जा सकता है।

### ८. परीक्षा में पास होने का प्रयोग

'मरज्जवली यंत्र' के सामने यदि नित्य एक माला मंत्र नप  
करे और फिर परीक्षा दें तो वह परीक्षा में पास होता है अथवा  
नित्य इस मंत्र की एक माला करे तो वह जो भी पढ़ता है उसे  
कठलाघ हो जाता है और वह गूलत नहीं।

### मंत्र

ॐ ही नमः

वस्तुतः, यह मंत्र विद्यार्थियों के लिये और किसी भी प्रकार  
की प्रतियोगी या विद्यार्थी परीक्षा होने समय विशेष रूप से  
उपयोगी है, यह आवश्यक है कि यह मंत्र जब सरस्वता यंत्र के  
सामने ही किया जाए जो कि मंत्र मिठा प्राप्त प्रनिष्ठा पूर्त हो।

साधना सामग्री - ₹५०/-

### ९. रसायन में प्रश्न का उत्तर जानने का प्रयोग

ऐसी कई समस्याएं या प्रश्न विचारणीय होते हैं जिनके बारे  
में तुरंत निर्णय लेना होता है।

इन प्रयोग में गवि को पलंग पर बैठकर अपना प्रश्न कराना

आ॒  
जा॑  
स्या॑  
स्ना॑  
सम॑  
रक्त॑  
का॑  
आ॑  
सं॑  
की॑  
ओ॑  
नी॑  
हे॑  
डुर॑  
या॑  
उ॑  
इ॑  
क्र॑  
ह॑  
ह॑  
व॑  
य॑  
य॑  
ति॑

पर लिखकर तकिये के नीचे रखा है और फिर पलम पर बैठे-बैठे ही २१ बार इस मंत्र को पढ़कर सो जाए तो रात्रि को स्वप्न में उस प्रश्न का गुभाशुभ दिलाई दे जाता है, और उसके अनुसार कार्य करने पर सफलता मिलती है।

मंत्र

ॐ शुक्ले महाशुक्ले हीं श्री भी अवतर अवतर स्वाहा

वस्तुतः यह जीवन में आजमाया हुआ प्रयोग है, और इससे निति प्रगति के उत्तर आयानी से प्राप्त हो जाते हैं।

१०. दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलने का प्रयोग

मंगलवार की 'सर्व सौभाग्य वंश' जो कि नाबाज के आकार का होता है, वापने सामने रखकर उन पर केशर लगाकर निम्न मंत्र की एक माला फेरें, इस प्रकार नीं दिन करें, वसरे दिन उस नाडीज की धारे में या चेन में पिण्डकर गले में धारण कर लें तो दुर्भाग्य भी सौभाग्य में बदल जाता है।

मंत्र

ऐं कलीं इ सौं कण्ठलिनी नमः

यह प्रयोग सेकड़ी लोगों ने आजमाया है, और प्रत्येक को सफलता मिली है, वस्तुतः यह प्रयोग शीघ्र सिद्धिपूर्ण है।

साधना सामग्री - ₹२०/-

११. किसी भी प्रकार का जहर उतारने का प्रयोग

यह चिढ़ू या साप ने काटा हो और जहर छढ़ गया हो, तो उस काटे हुए स्थान पर हाथ फेरते हुए इक्षुस बार इस मंत्र को पढ़कर कूच केने से नहर उत्तर जाता है।

मंत्र

ॐ अष्टके फुः

वस्तुतः इस प्रयोग को आजमाना चाहिए और समाज के उपयोग के लिए प्रयोग करना चाहिए।

१२. गर्भ पतन न होने का प्रयोग

जिन दिवों के शीघ्र प्रसव हो जाता है, या कुछ महीनों में ही बच्चा उत्तर जाता है या गिर जाता है, तो यह प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

मंत्र चिढ़ प्राण प्रतिष्ठा त्रुत 'गर्भ रक्षा यन्त्र' को मंगलवार के दिन लाल धाने में निम्न मंत्र बोलते हुए २१ माठ लगावें, बीच में उस ताबीज को पिरो दें, फिर वह धागा कमर में बांध दें तो उसका गर्भ-पतन नहीं होगा, नी मास पूरे होने पर सुखपूर्वक के लिए कुछ प्रयोग इस लेख में विद्ये हैं, और वे सभी सिद्ध पुत्र उत्पन्न होने के बाय ही उस डेरे को खोलकर नदी या तालाब सफल एवं प्रभावपूर्ण हैं।

मंत्र

मंत्र

ॐ प्रथम पार्श्वी ही हां हां फट्॥

यह प्रयोग आजमाया हुआ है, और पूर्ण प्रभावयुक्त है।

साधना सामग्री - ₹८०/-

१३. रक्षीकरण प्रयोग

वशीकरण गुटिका और सरसो लेकर ६० बार मंत्र पढ़कर जिसके माथे पर ढाले तो वह स्त्री निश्चय हीं बश में होती है, यह प्रयोग आजमाया हुआ है।

मंत्र

ॐ जलि पाणि उतालि फट् स्वाहा।

वस्तुतः यह प्रयोग महत्वपूर्ण है।

साधना सामग्री - ₹१००/-

१४. पुरुष वशीकरण प्रयोग

वशीकरण गुटिका और पुरुष के पैर की धून या कंकर छाथ में लेकर साठ बार मंत्र बोलकर वह गुटिका और शूल पुरुष पर ढाले अथवा जमीन में गाढ़ दें तो निश्चय हीं वह पुरुष जीवन पर बश में रहता है।

मंत्र

ॐ सो भगवते वशं करि स्वाहा।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है, और निश्चय हीं इसमें सफलता प्राप्त होनी डे।

साधना सामग्री - ₹५०/-

१५. पूर्ण पुरुष प्रयोग

यदि पुरुषत्व में कमजोरी हो या काम कला में अक्षमता अनुभव म होती हो तो यह प्रयोग पूर्ण सिद्धियापक है।

'शुक्र गुटिका' जो कि नाबाज के आकार की होती है, नेकर शुक्रवार के दिन काले धारे में पिरो लें और फिर नीचे दिया हुआ मंत्र साठ बार पढ़कर सात गाठे लगा लें और शाश कमर पर बांध दें तो उसमें पुरुषत्व उत्पन्न होती है, वीर्य स्तंभित होता है, और काम कला में पूर्ण सुख अनुभव करता है।

मंत्र

ॐ शुक्र कामाय स्वाहा।

यो तो जीन साहिन्य में हजारों सिद्ध अनुभूत प्रयोग हैं, पाठकों में विसर्जित करना चाहिए।

साधना सामग्री - ₹३०/-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अग्रिम अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समाज रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका

**मंत्र-तंत्र-यंत्र**

विज्ञान की

**वार्षिक सदस्यता**

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर आप पायेंगे अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

# कठाकथारा यंत्र

वर्तमान शास्त्रात्मक परिवेश के अनुसार जीवन के चार पुरुषार्थों में अर्थ की महात्मा सर्वाधिक अनुभव होती है। परंतु जब भाव्य या प्रारब्ध के काण्डा जीवन में अर्थ की न्यूनता व्याप्त हो, तो साधक के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह किसी देविक शहायता का सहाया लेकर प्रारब्ध के सेष्य को बदलते हुए उसके स्थान पर मनचाही दबना करे।

'कठाकथारा यंत्र' एक ऐसा अद्भुत यंत्र है, जो गरीब से गरीब व्यक्ति के लिए भी धन के स्त्रोत खोल देता है, यह अपने आप में तीव्र स्वर्णाकर्षण के गुणों को समाविष्ट किए हुए है। लक्ष्मी से सम्बंधित सभी ग्रन्थों में इसकी महिमा गायी गई है। शंकराचार्य ने भी निर्घन ब्राह्मणी के घर स्वर्ण वर्षा कराने हेतु इसी यंत्र की ही चमत्कारिक शक्तियों का प्रयोग किया था।

साधक का चाहिए, कि इस यंत्र को किसी बुधवार को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें। नित्य इसका बुक्स में अक्षत एवं धूप व्यूजन कर इसके समान 'अङ्गी सहस्रवर्णे कलकल्याणी शीघ्र अवतर आगच्छ ऊफट स्वाढा' यंत्र का रूप बनाए रखें। ऐसा २१ बुधवार तक करें फिर यंत्र को तिजोरी में रख लें।

यह तुलीभि उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक रादर्य उपले किसी भिन्न, रिटेलर या दबजन को ठगाकर ही प्राप्त कर राकरो हैं। यदि आप पत्रिका के रादर्य लाही हैं, तो आप उरसंभी रादर्य वाकर यह उपहार प्राप्त कर राकरो हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पीडीटक्कार्ड नं ४ को उपर अक्षरों में भरकर हमाए पास मैं दें, तो उत्तर हम देंगे।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 195/- डाक खाच अतिरिक्त 40/-

सम्पर्क:

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राज.)

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राज.)

फोन: ०२९१-५३२२०९ फैक्स: ०२९१-५३५०१०

ऋ 'दिसम्बर' 2001 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '59'

सार्वशीर्ष मास संवत् २०५८

# वक्ष्यों की वापी

मेष

(दू. वे. चो. ली. लू. लो. आ)

यह माह कठिन परिश्रम व उज्ज्ञन से कार्य करने का है। अपनी मेहनत से आप परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना देंगे। सामाजिक कार्यों में आपको पूर्ण सफलता मिलेगी। इस मास आपको लक्ष्यात् अथवा कार्यालय में समस्याओं से नुकूलता पड़ेगा। परन्तु आप उन पर विजय प्राप्त करेंगे। परिवार का आपको पूर्ण सहयोग मिलेगा। ज्ञारीकरण रूप से भी आप पूर्ण स्वभव्य रहेंगे। यात्रा अति आवश्यक होने पर ही करें। इस मास पूर्ण नाहाना के लिए सख्त्यवती साधना संपन्न करें। इस मास की शुभ तिथियाँ ४, ९, ११, २१, २२, २६, २७ और ३१ हैं।

वृष

(ई. झ. झु. झा. वी. दू. वे. वो)

आपका मन उत्सवमित रहेगा। समता होने हुए भी आप कार्यों को मध्यानुकूल स्वप्न नहीं दे पाएंगे। परिवारिक विधियों में आप उलझे रहेंगे। इस मास धनाशय की संभावना है, परन्तु प्राप्त धन का सही प्रयोग करें। नीचन साधी की ओर से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। इसलिए प्रतिकूल स्थिति में भी आप मुश्कुराते रहेंगे। महिलाओं के लिए यह समय विशेष अनुकूल रहेगा। मनवाही इच्छा पूर्ण होगी। इस मास शिव साधना संपन्न करें। इस मास की शुभ तिथि १, ६, ९, १२, १३, २३, २६, ३० और ३१ है।

मिश्रुल

(का. की. झू. य. ल. को. ला)

जो भी कार्य करना चाहत है संयम एवं स्वदब्दिका से ही करें। साड़ेदारों से साधनावर्ष रहें अन्यथा हानि हो सकती है। मिश्रु एवं संबंधियों का सहयोग प्राप्त करें अवश्य ही अनुकूलता प्राप्त होगी। उदानों मामलों में स्वदब्दिका से कार्य करें, सफलता प्राप्त हो सकती है। यात्रा वा बाहर प्रयोग करते समय सावधानी बरतें। विद्यार्थी कड़ी मेहनत करें, सफलता लक्ष्य प्राप्त होंगे। जग्नपति साधना संपन्न करें। इस मास की

शुभ तिथि ३, ५, ९, १५, १८, २३ और २५ है।

कर्क

(ली. दू. हो. ला. डी. डे. डा.)

इस मास आर्थिक सफलता प्राप्त होगी एवं धनाशय हो सकता है। जामाजिक कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। कारोबार में विस्तार या नवीन कार्य आरंभ करने के लिए यह समय उत्तम है। सफलता अवश्य प्राप्त होगी। श्रमिक वर्ग के लिए समय कुछ कटौती रहेगा। नीकरी प्रश्न लोगों के लिए पठोन्नति की संभावना है। विद्यार्थियों को समय का पूर्ण सहायोग करना चाहिए। धूमावती साधना संपन्न करें। इस मास की शुभ तिथियाँ २, ५, १०, ११, १६, १२, ३१ और २५ हैं।

सिंह

(मा. गी. मू. मे. नो. ला. ली. दू. ला.)

समाज में मान सम्मान प्राप्त होगा। लोग आपके प्रयासों की सराहना करेंगे। यदि योद्धा परिश्रम और करें तो सभी कार्य पूर्ण होंगे। इस मास नका दुआ धन प्राप्त हो सकता है। बाहर दूर्घटना का योग है अतः सवधानी बरतें। उमीन नायदूद के क्रथ विक्रय से बचें। यात्रा नामदायक सिल्ड होगी। बेरोजगार व्यक्ति इस मास नीकरी प्राप्त कर सकते हैं। बगलामुखी साधना संपन्न करें। इस मास की शुभ तिथियाँ २, ८, १०, १३, १३, २०, ३० और ३१ हैं।

कठुन्या

(लो. घा. घी. पू. घ. व. ठ. ते. घो)

यह मास आपके पूर्ण अनुकूल है। आपको शुभ समाचार प्राप्त होगा जिससे मन में हृषि होगा। अवालती मामलों में भी सफलता का योग है, परन्तु शृंखलों से सावधान रहें। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। किसी भार्मिक ग्रन्थालय पर जान की संभावना है। मिश्र एवं संबंधी पूर्ण सहयोग होंगे। विद्यार्थी वर्ग के लिए शह दशा अच्छी चल रही है। महानक्षमी साधन करें। इस मास की शुभ तिथियाँ ३, ५, १२, १६, २३, २८ और ३१ हैं।

सर्वी
पितृ
गवाह
अमृत
विष्व
विष्व
दुला
आप आ
प्रयास व
मही है,
बरे बर
सम्मन
साधना
११, २३
वृहित
रहें। ३
है। दम्भ
निषय ते
ध्यान वे
सकारात
तिथि १
धर्म
विशेष र
लेंगे औ
चिना न
जीवन व
बनाए र
दर्जन। ४
३, ८, १
मरकाट
उद्धारवे
है। ५०
शुभ सम
कारण व

सर्वार्थ, अमृत, इवि, पुष्य, द्विपुष्कर, सिंहि योग	
सिंहयोग	12-22-24-25-30 जनवरी
सर्वार्थ शिष्ठ योग	6-10-25 जनवरी
अमृत सिंह योग	6 जनवरी
द्विपुष्कर योग	05 जनवरी
त्रिपुष्कर योग	26 जनवरी

तुला

(रा. रे. ल. ता. तो. तु. ने)

इस मास पूर्ण संयम एवं सूक्ष्मवृद्धि रोकार्य है। अग्र आपने अभिमान के कारण किसी को हानि पहुँचाने का प्रयास करेंगे तो हानि आपको ही होंगी। समय आपके अनुकूल नहीं है, इसलिए ब्रह्म समझार तोमों की सलाह में कर्त्ता करें वरना पछताना पड़ेगा। याद रखें जब आप दूरर को सम्मान देंगे तभी आपका मान सम्मान प्राप्त होगा। महाकाली साधना संपन्न करें। इस मास की शुभ तिथि ३, २०, २६, २९, ३३, ३५ और ३० हैं।

तुष्टिखण्ड (तो. ला. ली. तु. ले. लो. ता. तो. तु.)

इस मास मन अशोत रहेगा और आप तनावगतरहन रहेंगे। अपने क्रोध पर नियंत्रण रखें नहीं तो हानि हो सकती है; वान्यपत्र जीवन में कटुता आ सकती है। इस मास जो योग निषेच ले पूरे होशो हवास में जाति भै ले। ज्वास्त्र की ओर ध्यान दें कारोबारी प्रथास नफल हो सकते हैं तरीं आप सकारात्मक विचार रखें। हनुमान साधना संपन्न करें। शुभ तिथि १, ६, ११, १३, १८, २१, २५ और २८ हैं।

धूलु

(ये. लो. भा. भी. ला. फा. ता. तो.)

इस मास आपको सचि साधनाओं एवं आश्वासमें विशेष रहेगी। धार्मिक आद्यात्मने में आप बहु चह लर भास लेंगे और इसके मन प्रसन्न होंगा। व्यय अधिक होने वाले भी चिता न करें क्योंकि धनागम भी उसी भौति रो होगा। नृहस्य जीवन की उपेक्षा न करें। जीवन साक्षी के साथ मधुर संबंध बनान रखें। ज्वास्त्र मध्यवर्ष रहेगा। मास के अन्त में राजधानी छपते हैं। भाष्योदय साधना लें। इसी मास को अनुकूल तिथि ३, ८, १५, १६, १९, २२ और २६ हैं।

मत्तुर

(भो. जा. जी. तु. ले. लो. ता. तो.)

शत्रुओं से इस मास विशेष ध्यान रहें। किसी के बहकवे ने आकर गन्तव्य कार्य न करें वरना हानि हो सकती है। कारोबार आपाएं नफल हो सकती है रसान की ओर से शुभ समाचार प्राप्त होना। परसु मिथि एवं संवर्धी तनाव का क्रारप आप सकते हैं। विशेषियों के लिए समय कठ संवर्ध का

## ज्योतिष की दृष्टि से पौष २०५८

यह मास वेश में राजनीतिक दृष्टि में स्थिरता लाएगा, मूल्यों में कमी होनी तथा भारत के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में भी तुलि होनी। विशेषी दशाओं में वरावरी के आधार पर सम्बद्ध बनेंगे, प्राइवेट आपदा का अभाव होगा जिससे पूरे देश में सुशान्ति का वास्तवण रहेगा। शीलका के साथ नवे राष्ट्रवादी बनेंगे और भारत-ईरान में व्यापार सम्बन्ध होंगे।

हे। उन्हे ऊपर अधिक परिश्रम करना होगा। गुरु प्राण धारण साधना करें। दस माह की शुभ तिथिया २, ३, १२, १८, २०, २३ और २५ हैं।

कृष्ण

(बू. गे. लो. सा. सी. तु. ले. सो. ल.)

जो समय बैंस गया उसके बारे में व्याघ न शोच अधिन बताना पर ध्यान दें। निपाय लेने वें जलवानी न करें। दुवा वर्ण के लिए समय निश्चय अनुकूल है। विमल परिच्छितिवारी में भी शक्तिवास प्राप्त होने का दोष है। पारिवारिक जीवन मधुर होगा। एक सलाह की ओर से अनुकूल समाचार प्राप्त होगे। रक्षात्मक कार्यों में मास विशेष स्वि रहेगी एवं स्फलता प्राप्त होगी। भैरव साधना संपन्न करें। इस मास आपकी अनुकूल तिथिया ८, ११, १६, २६, २९, ३०, ३१ और ३२ हैं।

मोहन

(बी. लू. ल. झ. के. लो. ता. तो.)

साधनात्मक शक्ति के आधार पर आप आसानीसे रक्षात्मक प्राप्त कर पायेंगे। देवी दूर्गा के फलस्वरूप अनुकूल प्रयास उपस्कृत होंगे एवं आपके विनय अद्वितीय होगा। मित्रों एवं स्वामीयों से सहायता की आशा रखने की जोशा गुरु ने ही मार्जनीयन प्राप्त होगा। शिवली-स्थित में गो देव रखे सकतहों। आपके हो हाय लगेंगी। व्यय पर विचार संख्या १, ३, १०, १२, १५, २०, २१ और २० है।

## इस मास के दृष्टि, पर्व एवं त्योहार

१ जनवरी	पौष कृष्ण पक्ष तिथि -७- शतीयार कालाद्वयी
२ जनवरी	पौष कृष्ण पक्ष तिथि -११- वृद्धवार-समावार पक्षाद्वयी
३ जनवरी	पौष कृष्ण पक्ष तिथि -१२- शुक्लार प्रद्यापद्वयी
४ जनवरी	पौष कृष्ण पक्ष तिथि -३०- वृद्धवार-लमावर्गार
५ जनवरी	पौष शुक्ल पक्ष तिथि -१- सोमवार, मकर राशनी
६ जनवरी	पौष शुक्ल पक्ष तिथि -६- शनिवार, ग्रह गोविन्द तिथि जयती
७ जनवरी	पौष शुक्ल पक्ष तिथि -११- शुक्रवार, ग्रहन पक्षाद्वयी
८ जनवरी	पौष शुक्ल पक्ष तिथि -१५- गोमवार, पौष्या

# सामाया हूँ

साधक, पाठ्यक तथा सर्वेजन सामान्य के लिए समय का वह रूप बहां प्रस्तुत है। जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उड़ाति का कास्य होता है तथा जिनके जान कर आप इसे उपलेक्षित कर सकते हैं। जीवे की जई सारणी में समय को प्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए ज्ञानवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, जौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुआ उत्सव से सम्बन्धित हो इधर अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस प्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपके आशय में डांकित हो जावेगा।

**बहु मुहूर्त का समय प्राप्त: ४.२४ से ६.०० बजे तक ही रहता है।**

वार/दिनांक	थ्रेष्ठ समय
रविवार ( ६ १३ २० २७ जनवरी)	दिन ७.३६ से १०.०० १२.२४ से २.४८ रात्रि ७.३६ से ९.१२ तक ११.३६ से २.०० तक
सोमवार ( ७ १४ २१ २८ जनवरी)	दिन ६.०० से १०.४८ तक १.१२ से ६.०० तक रात्रि ८.२४ से ११.३६ तक २.०० से ३.३६
मंगलवार ( १ ८ १५ २२ २९ जनवरी)	दिन ६.०० से ७.३६ तक १०.०० से १०.४८ तक १२.२४ से २.४८ तक रात्रि ८.२४ से ११.३६ २.०० से ३.३६ तक
बुधवार ( २ ९ १६ २३ ३० जनवरी)	दिन ६.४८ से ११.३६ तक रात्रि ६.४८ से १०.४८ तक २.०० से ४.२४ तक
गुरुवार ( ३ १० १७ २४ ३१ जनवरी)	दिन ६.०० से ६.४८ तक १०.४८ से १२.२४ तक ३.०० से ६.०० तक रात्रि १०.०० से १२.२४ तक
शुक्रवार ( ४ ११ १८ २५ जनवरी)	दिन ९.१२ से १०.३० तक १२.०० से १२.२४ तक २.०० से ५.०० तक रात्रि ८.२४ से १०.४८ तक १.१२ से २.०० तक
शनिवार ( ५ १२ १९ २६ जनवरी)	दिन १०.४८ से २.०० तक ५.१२ से ६.०० तक रात्रि ८.२४ से १०.४८ तक १२.२४ से २.४८ तक ४.२४ से ६.०० तक



# गुरु शुभ्रो बाहुवली व प्राह्लाद की बातें

किसी भी कार्य के प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की आवाज रहती है, कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, वाधाएं तो उपरियत नहीं हो जायेगी, पता कहीं दिन का प्रारम्भ विस प्रकार से होगा, विन की लमालि पर वह रथ्यों के तबादरहित कर पायेगा या नहीं।

प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनके उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल हर आलन्द दुःख बन जाव। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वाहनिहिंद के विविध प्रकाशित-अपकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहाँ प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्प्रब्र करने पर आपका पूर्ण सफलतादात्रक बन राखेगा।

## जनवरी

1. रात्रि तथा नमक धर से निकलन समय द्वार से बाहर फैक है शुभ प्रशंसित होगे।
2. आज नवीन कार्य आरंभ करते समय कुछ नमः का तीन बार उच्चारण करें।
3. प्रातः स्नान करने काले जल में नवीनी से ५ बार कुलिर्वं फिर स्नान करें। स्फुर्ति रहेगी।
4. आत्म रक्षा हेतु अप हनुमान चालिया का पाठ करें।
5. प्रातः धर से जाते समय शहद खाएं दिन अच्छा रहेगा।
6. आज प्रातः चार माला गुरु मन्त्र जप अवश्य करें।
7. कुदु दुर्गायि नमः जो प्रातः एक माला जप करें।
8. धर के द्वार पर थोड़े काले तिल दिखाएं दें। नजर में बचाव होगा।
9. एक गिलाल पानी लेकर पूर्व की ओर मुख कर खड़े हो जाएं। ऐ बाज का ११ बार उच्चारण करें, श्रीमंगित जल को पीलें।
10. आज पूरे दिन अधिक से आधिक कुनमः शिवाय का जप करें।
11. पीपल के पत्ते-पर मिठाई रखकर हनुमान मंदिर में चढ़ाएं।
12. किसी भी कार्य से पूर्व यह इलोक ५ बार पढ़े - गुरु पाठोद्दक युवत्ना योसीक्षय वटः। तीर्थराज प्रव्यागश्च गुरोमूर्ति नमोः नमः।
13. केले के वृक्ष के नीचे सरसों का दीपक लगाएं।
14. धर से बाहर जाते समय सफेद मुष्ट जेब में रख कर नाएं।
15. आज रात में धर के द्वार पर दीपक लगाएं। अनिष्ट समात होगा।
16. गायत्री मंत्र जपते हुए एक बलश जल उपने सूर्य को अपित करें।
17. शिव तोप्र स्तोत्र का लघु बद्ध पाठ करो दिन आनन्दपूर्ण होगा।
18. निश्चिलेश्वर पंचक का पाठ करें। सफलता प्राप्त होगी।
19. पश्चान गोदा को प्राप्त, काल लड्डू जा भोग लगाए।
20. गुरु मंत्र जपते हुए कुकुम में मस्तक पर निलक लगाएं। नर्मा धर से जाए।
21. गुरु दिवस के सुपर्ने निश्चिलेश्वरसनन्द स्तवन का पाठ करें। दिन भर गुरु नम्र जपते रहें।
22. एक बागन पर कुकुम से चिलोग बनाकर छीं लिख कर उस दिन में आपने घास रखें, खत में जला दो। अनिष्ट समाप्त होगा।
23. धर से जाते समय दही खाओ। दिन अच्छा रहेगा।
24. तीन किल्व वज्र प्राप्त, शिवलिंग पर चढ़ाएं कार्य में सफलता होगी।
25. प्रातः काल उठने ही ५ बार गायत्री मंत्र जप करें।
26. चावल और कुकुम मिलाकर चरों दिशाओं में फैकते हुए कुछ ही नमः का पांच बार जप करें।
27. उठव की गाल दान में दें। सफलता मिलेगी।
28. तुलसी के पीधे में जल अपित कर प्रवक्षिण करें।
29. पाच लौंग काशन में लगेटकर कार्य में सफलता की प्रार्थना करते हुए मंदिर में अपित करें।
30. प्रातः उठते ही बोनों हथों को सबसे पहले ढेरें। उसके बाव बाहु बाहु करें।
31. प्रातः विस्तर से उठते समय दायां पांच पहले नर्मीन पर रखें।

# मंत्र जप साधना

## का महत्व

वर्तमान युग में यज्ञ, कर्मकाण्ड और एकांतिक साधना प्रत्येक के लिए संश्वर नहीं है। मंत्र जप का तत्पर्य है- नाम जप। जब मंत्र जप की क्रिया संपत्ति होती है तो पूरे शरीर में एक वर्तुल स्थिति बनती है। यही साधना में सफलता का रहस्य है। प्रस्तुत लेख में स्पष्ट है कि क्या होते हैं मंत्र, उनका महत्व और किस प्रकार से मंत्र जप साधना संपत्ति की जाए।

सभी धर्मों और सम्प्रदायों की आध्यात्मिक साधनाओं में भगवान् कृष्ण ने इसे सब यज्ञों से श्रेष्ठ कहा है और अपनी अपने-हष्टवेद के मंत्र-साधना को एक आवश्यक अंग माना जाता विभूति माना है। 'यज्ञाना जप यज्ञोऽस्मि' यज्ञों में जप-यज्ञ में है। हिन्दू धर्म के वैदिक, पौराणिक, स्मृति और तांत्रिक हैं। भगवान् मनु ने अपने अनुभव से कहा है- 'और कुछ करें या मतावलग्नियों में तो यह साधना प्रचलित है ही, बोढ़ और जैन न करें, केवल जप से ही ब्राह्मण सिद्धि पाता है।' गोस्वामी श्री तुलसी दास ने भी जप की महिमा का गान मत वालों ने भी इसे अपनाया है। उनके विधि-विधान में भी जप पर बल दिया गया है। यहीं नहीं, सूक्ष्म मत और ईसाई क्रिया हैं- कैथोलिक मत वाले भी इसे प्राचीन काल से अपनाए हुए हैं। योगी लोग क्रिया-योग में स्वाध्याय का इसे एक अंग मानते हैं। योगी लोग क्रिया-योग में स्वाध्याय का इसे एक अंग मानते हैं। तपयोग, मंत्रयोग, राजयोग और हठयोग में नादानुसन्धान का वर्णन आता है वह वास्तव में जप की एक विशेष अवस्था है। जप-साधना हिन्दू धर्म के आध्यात्मिक कर्मकाण्ड का मेल दण्ड है। इसलिए पड़ता है। उससे अनेक प्रकार की सिद्धियां प्राप्त होती हैं। साधक

का मनोबल दृढ़ होता जाता है, विचारों में विवेकशीलता आती है, बुद्धि निर्मल व पवित्र बनती है, आत्मा में प्रकाश आता है। इसके अभिट प्रभाव को देखते हुए शास्त्रकारों ने इसकी अपार महिमा का गान किया है।

लिंग पुराण में लिखा है 'जप करने वाले का कभी अनिष्ट नहीं होता, वक्ष, पिशाच, भीषणग्रह उसके पास कभी फटक नहीं सकते। इससे जन्म-जन्मातरों के पाप नष्ट हो जाते हैं, सुखों व सौम्याओं की वृद्धि हो जाती है और मुक्ति की प्राप्ति होती है।'

गीता में भगवान् कृष्ण ने कहा - 'आयते महातो भयात्' जप, साधक का महान् भय से बचा करता है। मनुरम्भुति में कहा है 'जप करने वालों का कभी पतन नहीं होता है।' भगवान् मनु ने एक और स्थान पर कहा है कि जप से अन्तःकरण पर ब्रह्ममय हो जाता है।

जप की महिमा बताने वाले कुछ प्रमाण इस प्रकार है-

**महर्षिणा भूगुरुं गिरामस्त्वयेकमशरणम्।**

**यज्ञानां जपयज्ञोस्मि स्थावराणां हिमालयः॥**

'मैं महर्षियों में भूगुरु और वाणियों में ओंकार, यज्ञों में जपयज्ञ तथा स्थावरों में हिमालय हूं।'

**समस्त यम तनुभ्यो जप यज्ञः परः स्मृतं.....**

**इत्येवं स्वर्थां ज्ञात्वा विष्णो जपपरो सबेतः।**

**भारद्वाज गायत्री व्याख्या**  
'समस्त यज्ञों से जप अधिक थेड़ है। अन्य यज्ञों में तो हिंसा होती है, जप यज्ञ छिसा से नहीं होता है। जितने भी कर्म, यज्ञ, दान, तप हैं, वे समस्त जपयज्ञ की सोलहवीं कला के समान भी नहीं होते हैं जप द्वारा स्तुति किये गये वेवता प्रसन्न होकर बड़े-बड़े भोगों को तथा अक्षय शक्ति को प्रदान करते हैं। जप-कर्म वाले द्विज को दूर से देखते ही राक्षस, वैताल, भूत, प्रेत पिशाच आदि प्रयत्नीत हो भाग जाते हैं। इस कारण समस्त पुण्य-साधनों में जप सर्वश्रेष्ठ है।'

**मास शतव्रयं विग्रःस्वर्णकामानावाप्नुयात्।**

**एवं शतोत्तरं जप्त्वा सहस्रं सर्वमाप्नुयात्॥**

'इस प्रकार एक मास तक 300 मंत्र प्रतिदिन जप करने पर साधक, सब कार्यों में सिंचि प्राप्त करता है। भ्यारह सी नित्य जपने से सब कार्य ही सम्पन्न हो जाते हैं।'

**सूक्ष्मा ग्राणमपामं च जपोन्मासं शतव्रयम्।**

**यदिच्छेष्टवद्याज्ञोति सहस्रात्परमाप्नुयात्॥**

'ग्राण जपान वायु को रोककर एक मास तक प्रतिदिन एक सहस्र मंत्र जपने से हाँच्छेष्ट वस्तु की उपलब्धि होती है।'

**एक यादो जपेदृध्वं बाहूरुच्छानिल वशः।**

**मास शतमवाप्नोति यदिच्छेष्टविति कौशिकः॥**

'आकाश की ओर भुजाएं उठाएं हुए, एक पैर के ऊपर लड्डा होकर, सांस को यथाशक्ति अवशोध कर एक मास तक 100 मंत्र प्रतिदिन जप करने से अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति होती है।'

**एवं शतत्रयं जप्त्वा सहस्रस्वर्णाप्नुयात्।**

**निमज्याप्त्यू जपेन्मांस शतमिष्टमवाप्नुयात्॥**

'जल के मीठर ढुबकी लगाकर एक मास तक 1300 मंत्र प्रति दिन जप करने से अभीष्ट वस्तुओं की प्राप्ति होती है।'

**तात्र**

जप आरंभ करते ही साधक के अन्तःकरण में एक हलचल मचती है और उसकी विलक्षण शक्ति से आंतरिक क्षेत्र में उनको सूक्ष्म परिवर्तन होते हैं। बुरे विचार घटने लगते हैं और सत्य प्रेम, न्याय, क्षमा, ईमानदारी, सन्तोष, शांति, पवित्रता, नम्रता, संघर्ष सेवा और उदारता जैसे सदगुण बढ़ने लगते हैं। मन क्षेत्र प्रभावित होने से विवेक, दूरविचिता, तत्त्वज्ञान और क्रतस्मरा बुद्धि की प्राप्ति होती है, जिससे दुःखों का कटना और सुख-शांति का प्राप्त होना अनिवार्य परिणाम है।

जप से मलिनताओं का पर्वा हटकर सदगुणों का विकास होता है और महानता के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। दुर्गण और दोष कम होने लगते हैं और साधक धीरे-धीरे निर्मल चरित्र की साक्षात् प्रतिमा बन जाता है। वह असत् से सत्, अन्धकार से प्रकाश, मृत्यु से अमरत्य, निराशा से आशा, सीमित से असीम, शिथिलता से दृढ़ता, नरक से स्वर्ग, तुच्छता से श्रेष्ठता और कुबुद्धि से सदबुद्धि की ओर कदम बढ़ाता है।

मंत्र-जप से शक्ति उत्पन्न होती है। इसकी सिद्धि का दूसरा नाम है। योगदर्शन में स्पष्ट कहा है कि मंत्र जप से सिद्धियां प्राप्त होती हैं। अन्तःकरण की पवित्रता तो सर्वश्रेष्ठ सिद्धि है, जो जप का स्वभाविक लाभ है। योगदर्शन में तो यद्यां तक कह दिया गया है कि जप साधक धीरे-धीरे इतना उत्तम जाता है कि वह इसी साधना से समाधि-अवस्था तक पहुंच जाता है। आगामी सूत्र में महर्षि ने निर्देश दिया है कि साधना-काल में आये विघ्नों का इससे नाश होता है और अन्तरात्मा के स्वरूप का ज्ञान होता है। हङ्गवर के साक्षात्कार का मार्ग खुल जाता है

और प्राचीक नित्य आसन्द में मग्न रहता है, उसे कुछ प्राप्त वह इस प्रक्रिया को निरंतर जारी रखता है, तो जीवन में कई करना शेष नहीं रह जाता, उसे किसी वस्तु का अभाव नहीं वर्षों की वृद्धि हो सकती है। यह किसी देव-दानव की कृपा से लगता, वह समाटों का समाट बनकर सर्वात्र आसन पर नहीं, अपने प्रस्थाधी का फल है।

### अर्थ

नप से आध्यात्मिक जान ही प्राप्त हो, ऐसी जान नहीं है, जीने वाले उपनिषद्यां भी इसकी विशेषता है। कठिनाइयों और अपनेलियों नो हर एक वे जीवन में आती है, जीवन की वृद्धि कर उप साधक उनको हस्तेहस्ते छोलता है, पहाड़ जैसे कठ उसे छोल समान लगते हैं। आध्यात्मिक शक्ति के बढ़ने से उपका शाहस भी बढ़ता है। आर्थिक अभाव, विवाह, सन्तान, मुकुट, शाशुना, संचर्ष आदि आपनियों का ऐसा सरल समाधान हो जाता है कि वह चमत्कार सा ही दिखाई देता है। तपस्वी साधक अपने लिए ही नहीं उरन दूसरे को लाभ दहुंचाने की क्षियति में रहते हैं। यह किसी के अनुग्रह से अनायास प्राप्त नहीं हो जाते उरन जग द्वारा प्राप्त शक्ति के ही चमत्कार होते हैं।

जप द्वारा आयुवृद्धि के लाभों की वैज्ञानिक व्याख्या भी विद्वानों ने की है। २४ घण्टे में प्रत्येक स्वरश्य व्यक्ति २१६०० बार इवोस लेता है अर्थात् १ द्वारीर के लिए विषमित रूप से उसके अनुरूप पवित्रता के मिनट में १५ बार इवास लेना स्वाभाविक है। यदि किसी उपाय साधन, उसके प्रोषण और विकास के लिए आध्यात्मिक से उन इत्तिहासों की संख्या कम हो जाए तो आयु-वृद्धि सुनिश्चित व्याधाम, जप और मन पर चढ़े मल-विशेषों को दूर करने के हैं। प्राणायाम ऐसी योग की सशक्ति क्रिया है, जिससे इवास लिए नित्य अभ्यास आवश्यक है ताकि पुराने संस्कारों का शमन प्रवाप किया का नियमन किया जाता है। जप ये ऐसा ही होता रहे और नए आल्युरी आक्रमणों के मुकाबिले की तैयारी होता है। जप के समय इवासों की संख्या स्वाभाविक रूप से होती रहे। अपने इष्टदेव का नो स्थिकर और गुरु प्रवक्त संत हो, होता है। जप के समय इवासों की संख्या स्वाभाविक रूप से होती रहे। उसका जप नित्य ही करना चाहिए। यह नित्य-जप कदलता जम हो जाती है। यह एक मिनट में १५ के स्थान पर ७-८ रहे। उसका जप नित्य ही करना चाहिए। यह नित्य-जप कदलता जम हो जाती है। दूसरी तात्त्विक एक घण्टा प्रतिदिन जप करता है, तो है। नियमित रूप से करने के कारण इसमें ही ही सूक्ष्म शक्ति लगभग ५०० इवासों की आयुवृद्धि हो गई। इस तरह से यदि का विकास होता है।

## २. नैमित्तिक-

जप-पितृ-कण से।  
उकण होने के लिए  
हम पितृ-शास्त्र आदि  
कर्म करते हैं, जिससे  
पितर जहां भी हों,  
उनके सूक्ष्म शरीर को  
बल मिलता है और  
प्रसन्नता हो जाती है।  
वे आशीर्वाद देते हैं।  
देव-पितरों के सम्बन्ध  
में जो जप किया जाता

**जप से मिलता ओं क्ल पर्वा**  
**ठुटक्के सद्गुणों का विकास होता**  
**है और भगवान्ता के लक्षण प्रकट**  
**होते लगते हैं। दुर्गुण और दोष**  
**कम होते लगते हैं और साधक**  
**शीरे-धीरे विनाश चित्र की साधात**  
**प्रतिमा बन जाता है।**

लिए बात को नन में  
पश्चानाम भी होता है।

४. प्रायश्चित जप-  
प्रसन्नत्य कर्मों को बोल  
अथवा अन्य साधनाओं  
द्वारा कम किया जाए  
और आगे भावधानी  
करती जाए, यही क्रिया  
का आदेश है। आचार्यों  
ने संचित व नित्य दोषों  
के प्रभाव को दर करने  
के लिए अनेकों प्रकार के

है, उसे नैमित्तिक जप की संशो दी जाती है। वह पितृपक्ष में लो  
किया ही जाता है। इस जप में ऐनरों की सद्गति होती है।

३. काम्य-जप पशु भाव के साधक को ईश्वराधन की ओर  
आकर्षित करने के लिए पहले भौतिक सिद्धियों की उपलब्धि  
में सहयोग दिया जाता है, जिससे उसके विश्वास में दृढ़ता हो  
और आत्मकल्याण की साधना की अगली सीढ़ी पर चढ़ने के  
लिए तैयार हो। किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए जो सकाम साधना  
की जाती है, वह काम्य-जप कहलाता है। इससे देव-शक्तियों  
को आकर्षित किया जाता है, जो अपीष मिद्रि में सहायक  
होती है।

निषिद्ध-जप- पवित्रता, संयम, ब्रह्मचर्य, मिताहार, यम-  
नियमों का पालन, मनोनियह जप-साधना में अवश्यक बताए  
गए हैं। यदि किसी भी साधना के नियमों का पालन पूर्ण नीति  
से नहीं किया जाता है, तो देव-कृपा संदिग्ध रहती है।  
अनधिकारी गुरु से दीक्षा लेकर अशुद्ध उच्चारण के साथ  
अपवित्र अवस्था में और निषिद्ध स्थान पर यदि अविधिपूर्वक  
जप किया जाए, तो वह निषिद्ध जप कहलाता है, जिसमें वेवता  
और मंत्र में भी अनुकूलता न हो और श्रद्ध विश्वास का अभाव  
हो, ऐसी साधना से कोई लाभ नहीं होता। केवल निराशा ही  
हाथ लगती है।

५. प्रायश्चित जप- मानव शरीर धारण करने से पूर्व हमें  
८४ लाख योनियों से होकर आना पड़ता है, जिसमें विभिन्न  
प्रकार की पशु योनियां होती हैं। उनके संस्कार हमारे मानस-  
पटल पर अंकित रहते हैं। छोटा-सा उनेजक कारण मिल जाने  
पर हमसे बड़े-बड़े दोष, अपशाध अथवा पाप हो जाते हैं, किनके

उपायों का दिव्यानन किया है, उनमें से एक प्रायश्चित जप है।

इसका स्पष्ट अधिक-अधो दोष और अपराध को स्वीकार करना।  
पाप की गांठ उसके स्वीकार करने से ही खुलती है। इसे स्वीकार  
न करने से वह और दृढ़ होती है। अतः जाने अनजाने पापों के  
परिमार्जन के लिए जो जप किया जाता है उसका प्रायश्चित  
जप कहा जाता है।

५. अचल जप- विना संकल्प के कोई भी काम निषिद्धत  
समय में पूर्ण नहीं हो पाता। कठिन कार्यों के लिए तो संकल्प  
अनिवार्य होता है। जप-साधना में समय और संख्या की  
विशेषता रहती है। जब साधक यह निष्चय करता है कि नित्य

प्रसि वह इतना समय लगाकर इतना जप करें ही आसन से  
उठेगा- वह अचल जप कहलाता है। इससे साधक की मनोभ्रूमि  
में दृढ़ता आती है और किसी भी बड़ी-ले-बड़ी साधना के लिए  
साहस बटोर सकता है।

६. चल जप- अन्य जप तो विधिपूर्वक आसन पर बैठकर  
किए जाते हैं, परंतु चल जप विज्ञ भी परिस्थिति में किया जा  
सकता है। इसके लिए किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं है। खाली  
मन को शैतान का घर कहा गया है। उसमें विभिन्न प्रकार के  
अनावश्यक विचार चक्कर लगाने रहते हैं।

इससे बचने के लिए अवश्यक है कि मन में दुरे विचारों का  
आगमन न हो। यह तभी हो सकता है, जब मन खाली न हो  
और संदेह उसे व्यस्त रखा जाए। अपने दृष्ट देवता के स्मरण  
के अतिरिक्त और कौन-सा श्रेष्ठ साधन हो सकता है? मंत्र जप  
का साधन हर समय चलता रहें, तो आसुरी वृन्दियों के परेशान  
विकास का प्रश्न ही नहीं उठता। इस साधना में प्रवर्द्धन घातक

सिद्ध होता है। प्रदर्शन के बिना यह साधना चलती रहे, तो

से मन उचट जाए, तो ध्यान करना चाहिए। ध्यान की भी एक इसमें अपूर्व सफलता मिलती है।

७. वाचिक जप- जिस मंत्र उच्चारण को अन्य व्यक्ति भी सुन सके, उसे वाचिक-जप कहते हैं। आरंभ में साधक के लिए यही ठीक रहता है क्योंकि अन्य जप अभ्यास साम्य है। यह जप क्षण के लिए भी स्वतंत्र न छोड़ना अखण्डता की परिभाषा में निम्न कोटि का जाना जाता है। फिर भी शब्द-विज्ञान की महता आता है। शास्त्र का भी यही आदेश है-

स्वीकार करते हुए इसकी उपयोगिता को स्वीकार करना ही होगा। योगियों का कहना है कि इससे वाक्-सिद्धि होती है और पट्टचक्रों में विद्यमान वर्ण बीज शक्तियां जागत होती हैं।

८. उपांशु जप- मनुष्मृति के अनुसार उपांशु जप उसे कहते हैं कि मंत्र का उच्चारण होना रहे, होठ ढिलते रहे परंतु पास बैठा व्यक्ति भी उसे सुन न सके, जापक स्वयं ही उसे सुने।

इस नप के प्रभाव ने स्थूल से सूक्ष्म शरीर में प्रवेश होता है। और बाह्य वृत्तियां अनुभूति होने लगती हैं, एकाग्रता बढ़ने लगती है, एक अद्भुत मस्ती प्रतीत होती है, जो अनुभव की ही वस्तु है।

९. भ्रमर-जप- भ्रमर के गृजन की भाँति गुनगुनाना इस जप की विशेषता है। इसमें होठ और जिला नहीं हिलानी पड़ती। जिस तरह वंशी बजाई जाती है उसी तरह प्राणवायु के सहयोग से मंत्रावृत्ति की जाती है। इस जप से वीचिक तन्द्रा की वृद्धि होती है और पट्टचक्रों का धीरे-धीरे जागरण होने लगता है, प्रकाश की अनुभूति होती है और आन्तरिक तेज की वृद्धि होती है।

१०. मानसिक जप- मानसिक जप में होठ और जिला कुछ भी नहीं हिलते। मंत्र के पद और अक्षरों के अर्थ पर मन में विचार किया जाता है।

'स्पष्ट बोलने से वाणी स्थूलता में रहती है और उसका प्रभाव भी सीमित स्थूल में रहता है। पर मन के द्वारा मंत्र के उच्चारण से बहुवाक् सूक्ष्म हो जाती है। परा, पश्यन्ती, मध्यमा- यह तीन वाक् भी सूक्ष्म होती हैं। उनसे नानि प्रदेश आदि में स्पष्टित स्थूल पर रिश्यत वाक् की अपेक्षा अधिक पड़ता है। सूक्ष्म की शक्ति स्थूल की अपेक्षा अधिक होती है। उसका प्रभाव भी बहुत पड़ता ही है।'

११. अखण्ड-जप- हर समय जप करना सम्भव नहीं है। परिवर्तन से मन का भी विधान है। वर्कावट भी होती है और मन भी उचटता है। परिवर्तन से मन का भी विधान है। साथ में ब्रह्म-प्रावना का रहना आवश्यक लगता है, इसलिए गुरुजनों ने यह आदेश दिया है कि जब जप

करना चाहिए, आर्य उन्होंका अध्ययन करना चाहिए। इस तरह से मन को हर समय लगाए ही रहना चाहिए, उसे एक क्षण के लिए भी स्वतंत्र न छोड़ना अखण्डता की परिभाषा में आता है। शास्त्र का भी यही आदेश है-

जापाच्छान्तः पुनर्ध्यायिद ध्यानाच्छान्तः पुनर्जपित ।  
जपध्यानपरिश्रान्त आत्मानं च विचारयेत् ॥

'जप करते-करते जब थके तो ध्यान करना चाहिए, ध्यान से थके, तो पुनः जप करे। इन दोनों से जब थके तो आत्म-तत्त्व का चिन्तन करे।'

१२. वर्ष की अखण्ड साधना को तप की संज्ञा दी गई है। इससे महासिद्धि की उपलब्धि होती है।

१२. अजपा जप- यह जप माला के बिना ही होता है। इवासोच्छ्वास की क्रिया हमारे शरीर में बराबर स्वाभाविक रूप से होती रहती है, जो एक अहोरात्र में २१६०० की संख्या में होती है। जो इवास बाहर निकलता है, उसकी ध्वनि 'हंस'

की तरह होती है और जो अंदर आता है उसकी ध्वनि सः की तरह होती है। इस तरह से 'हंस' मंत्र का जप हमारे शरीर में अपने आप होता रहता है। इसे अजपा नायकी भी कहते हैं। श्वासोच्छ्वास के साथ मंत्रावृत्ति अजपा जप कहलाती है। इस जप की यही विशेषता है कि यह अपने आप होता रहता है, इसके लिए कुछ करना नहीं पड़ता। केवल दृष्टा रूप में इसकी स्वाभाविक क्रिया को देखना होता है।

हंसोपनिषद् में हंस की स्वाभाविक क्रिया का वर्णन करते हुए कहा है-

सर्वेषु वेदेषु व्याप्त वर्तते यथा ह्यान्मिनः काष्ठेषु तिलेषु तेलमिव। विविता नमृत्युमेति।

'समस्त देहों में यह जीव हंस-हंस जपता हुआ व्याप्त रहता है, उसी प्रकार जैसे काट में अग्नि रहती है और तिलों में तेल प्रयत्न होता है। इसे जान लेने वाला मृत्यु को उल्लंघन कर जाता है।'

१३. प्रदक्षिणा जप- इसकी प्रक्रिया नाम से ही स्पष्ट है। बट और ब्रह्मर व पीपल के वृक्ष को पवित्र माना जाता है। जप करते हुए परिक्रमा करनी पड़ती है। ज्योतिलिंग-मंदिर की प्रदक्षिणा का भी विधान है। साथ में ब्रह्म-प्रावना का रहना आवश्यक लगता है। इससे भी विशेष लाभ होता है।

# जोगन लारवा



यों तो किसी भी रोग के शब्द हेतु आज चिकित्सा विज्ञान के पास अचूक झलाज है, परन्तु मंत्रों के आध्यात्म से चिकित्सा के पीछे धारणा यह है, कि सभी रोगों का उद्भव मनुष्य के शर्कर से ही होता है। जब पर पड़े दुष्प्रभावों को विद्यमान द्वारा नियंत्रित कर लिया जाए, तो रोग स्थायी रूप से शान्त हो जाते हैं।

## १. पुरुष लुग रोगों के लिए प्रयोग।

सर्वी, खांसी, बुखार या नुकाम हो तो लोग डॉक्टर के पास जाकर दवा ले लेते हैं, परन्तु नमनेन्द्रियों से सम्बंधित तकलीफों को लोग बताते नहीं हैं, छिपाते हैं। यदि छोटी-मोटी तकलीफ हो तो प्रायः जर्से सहने रहते हैं या अनदेखा कर देते हैं, परन्तु जब तकलीफ बढ़ जाती है, तब डॉक्टर को देखना ही पड़ता है। आज चिकित्सा विज्ञान के पास हर रोग के अचूक उपाय हैं और उनसे लाभ उठाना भी चाहिए, यही बुद्धिमान व्यक्ति के लक्षण हैं। इस स्तम्भ के अन्तर्गत यह प्रयास रहता है कि रोग निराकरण के बे उपाय भी दिये जाएं, जिसे मंत्र चिकित्सा कहा गया है। नाथ योगियों ने कई ऐसे साधार मंत्र दिये हैं, जो इस प्रकार के गुम रोगों के निवान के लिये पुरुषों द्वारा सफलता से प्रयोग किये जाते रहे हैं।

प्रस्तुत प्रयोग को पुरुषों के किसी भी गुम रोग, जैसे अण्डबुद्धि, नपुंसकता, हर्निया, स्वप्नदोष, शक्तिहीनता आदि के निराकरण के लिए आजमाया जा सकता है। इस प्रकार के शारीरिक दोष तभी व्याप्त होते हैं, जब शरीर में काम तत्व का असन्तुलन होता है। इस साधना व मंत्र जप का प्रभाव उसी काम तत्व को सुनियोजित व सन्तुलित करने के लिए है। 'कामवेद चेटक' की एक लाल वस्त्र पर स्थापित कर उसका संक्षिप्त पूजन कर लें। फिर 'पूर्ण पीरुष प्रामि कामवेद माला' से निम्न मंत्र की १४ माला नित्य इ शारि तक जप करें-

## मंत्र

॥ॐ त्वं आदेश गुण का, त्रैसे के लेहु गणयद्व  
कृष्ट, और्ह फ्रहु गय विल कृष्ट । परब्रह्म धारहा हा  
रावण । कृष्ट विहारह, ब्रह्म आण, रोतहु ब्रह्म आण,  
आण विहारह, दार्ज गर्वहि ब्रह्म । ती तीलहि ब्रह्म  
शाप, ह्स हस जंदीर, ह्स जंदीर हा हा हा ॥

प्रयोग समाप्ति पर समस्त सामग्री को प्रवाहित करें।

साधना सामग्री पैकेट- २७०/-

## २. द्वचा आएके नेत्र कमज़ोर हैं?

आपको पास या दूर की वस्तु को देखने के लिए चम्मे का प्रयोग करना आवश्यक हो जाता है अथवा डॉक्टर ने नेत्र पर अनावश्यक दबाव लगाया है। इस कारण भी आपको चश्मा लगाने की सलाह दे दी है, कुल मिलाकर आपकी आंखों की वृष्टि कमज़ोर हो, तो यह प्रयोग करें।

अपने पूजा स्थान में पूर्वाभिमुख होकर बैठें। किसी पात्र में चाकूष को स्थापित कर दें। उसके समक्ष मूँगा माला से निम्न मंत्र की ५ माला मंत्र जप करें। मंत्रोच्चार के साथ चाकूष पर एक-एक आचमनी जल चढ़ाते जाएं।

## मंत्र

॥ॐ त्वं जं यद्युपाते दृष्टि देवाय ततः ॥  
मंत्र जप समाप्त करने के उपरान्त उस जल से अपने दोनों नेत्र धो लें। यह प्रयोग आप ३० दिन तक करें। इस प्रयोग

को आप सूर्योदय के समय ही करें तथा इसे किसी भी दिन ऐ  
आरम किया जा सकता है।

साधना समझी - २००/-

### ३. ब्लैंड प्रेशर यॉ समाप्त करें।

वर्तमान युग में अन्डप्रेशर एक ऐसी बीमारी है, जो अधिकांश लोगों की होती ही है। इससे निजात पाने के लिए दवाओं का उपयोग तो करते ही है, लेकिन ये दवायें स्थाई निदान नहीं देती हैं। स्थाई रूप से छुटकारा पाने के लिए आप रोज नियारण यश्च को स्थायित कर उसके पापचार पूजन कर उसके समक्ष दीपक लगाकर 'आरोग्य माला' से ३१ दिन तक निम्न मन्त्र का उच्चारण करें-

मंत्र

॥ॐ ते रुद्रेण्यो दं गं ऊः ॥

मंत्र यप समाप्ति के बाद यत्र को नदी में प्रवाहित कर दें तथा माला को धारण कर लें।

साधना समझी - २००/-

### ४. अब परिवार में किसी प्रकार का कॉर्ड अभाव रह ही नहीं सकता।

इसके लिए ६० देशों के वैज्ञानिकों ने निरीक्षण किये हैं, और उसके आधार पर ही वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं, कि यदि प्रान् काल घर में 'अग्निहोत्र' अथवा हवन हो तो घर में किसी प्रकार का कोई अभाव या नकलीफ रह ही नहीं सकती और घर की समस्याएं भी अपने आप सुलझती रहती हैं, इसीलिए उन्होंने अग्निहोत्र को आवश्यक माना है। अग्निहोत्र के लिए आवश्यक है, कि इसे ठीक सूर्योदय के समय करें, न उससे पहले और न ही उसके बाद।

आप स्नान आहि से निवृत होकर, एक तांबे के हवन कुण्ड में छोटी-छोटी लकड़ियां जला लें। किसी बाली में आधी भुंडी चावल, दो चम्पय धी और पांच तांबेज नारियल लेकर मिला लें। बाद में निम्न मन्त्र पढ़कर क्रमशः ५ आहुनि दें-

मंत्र

ॐ अर्थात् ततः स्वाहा।  
ॐ इवदाय ततः स्वाहा।  
ॐ प्रशापतये ततः स्वाहा।  
ॐ विष्णवे ततः स्वाहा।  
ॐ सर्वकार्यं तित्त्वयर्थं ततः स्वाहा।

प्रयोग आहुनि के साथ एक तांबेज नारियल का होना अनिवार्य है।

यदि वह कार्य ठीक सूर्योदय के समय हो और नियमपूर्वक हो, तो मिश्रबय ही आपकी समस्याओं का समाधान देना ही।

साधना समझी - १०५/-

### क्या आपका बच्चा बीमार, चिड़चिठि, कमज़ोर समरण यादि बाला ही गया है?

किसी आकस्मिक आघात के परिणाम रूपरूप या अन्य किसी कारणबद्ध यह देखने में आया है, कि उसका असर बड़ी की आपेक्षा बच्चों पर ज्यादा होता है। मरिजानक की नाड़ियों में अन्यथिक खियाव उत्पन्न होने के कारण वह कभी-कभी सलमे का रूप धारण कर लेता है और वह कोमल पुष्प-इस कुप्रभाव को देख नहीं पाता, कल्स्यरूप वह बच्चा असमय ही बीमार पड़ जाता है और बाल-बात पर चिड़चिठि भाना, हर कार्य का विरोध करना, उसकी आवत सी बन जाती है।

ऐसी स्थिति में वह कभी रोता है, कभी हँसता है, तो कभी मौन हो जाता है, निससे कि पूरा घर परेशान रहता है। आप अनेक ढाक्टरों से उसकी जांच करवाते हैं और कई दवाइयां खिलाते हैं, लेकिन फिर भी उसमें कर्क नहीं पड़ता है। डॉक्टर भी उस बोमारी का स्पष्टता से पता नहीं लगा पाते। बच्चे के शरीर व मन पर वासावरण एवं घटनाओं का गहरा असर पड़ता है और धीर-धीर उसकी स्मरण शक्ति कमज़ोर पड़ने लग जाती है। इस प्रयोग के माध्यम से आप अपने बच्चे को सामान्य अवस्था प्रदान कर सकते हैं।

ग्रनिवार के दिन प्रातः कालीन बेला में पीपल के पेड़ की नात बार परिक्रमा कर कच्चे सूत से उन्हे बांध दें और हाथ में 'भेदिनी गुटिका' को लेकर मन ही मन बच्चे के रोगमुक्त होने की कामना करें, फिर ५ मिनट तक वही खड़े रहकर निम्न मन्त्र का मन ही मन जप करें-

मंत्र

॥ॐ तीर्त्ती गुणोऽस्तु तः ० ॥

सात दिन ऐसा करें और फिर उस गुटिका को ब्रालक के गले में पहना दें। महीने भर पश्चात भेदिनी गुटिका को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना समझी - ११०/-

गुरु दं  
इव योगी,  
जौर शिष्य  
वन-केन  
कुण्डलिनी  
दोनों में पृ  
ष्ठा अण्णा  
क माध्यम  
उठना चाह  
सा निर्मित  
कुण्डलिनी  
१. सम  
२. मार्ग  
३. तां

# प्राणायाम और कुण्डलिनी जागरण

गुरु वीक्षा प्राप्त कर आध्यत्मिक पथ पर आगे बढ़ने वाले हर योगी, तपस्वी, साधक, साधिका, मंत्रिक और तांत्रिक शिष्य और शिष्याओं का हर पल भरसक प्रयास यही रहता है कि यन-केन प्रकारण जैव भी और जितनी जल्दी सम्भव हो सके कुण्डलिनी जागरण में सफलता प्राप्त कर दे भोग और मोक्ष दोनों में पूर्णता प्राप्त करके अपने रद्दगुरु का नाम रोशन करते हुए अपना जीवन सफल और साकार कर सकें। अनेक विद्याओं के माध्यम से साधक साधना रत रहते हुए इसमें सफलता प्राप्त करना चाहते हैं, गुरु कृपा प्राप्त कर शक्तिपात्र के लिए वह चातक ता निर्निमेष बाट जीहता रहता है।

**कुण्डलिनी जागरण में सहायक अनेक विद्याएं**

१. सक्षम गुरु के द्वारा शक्तिपात्र किया
२. मांत्रिक साधना एवं चेतना मंत्र अनुष्ठान द्वारा
३. तांत्रोक्त क्रिया एवं मंत्र साधना द्वारा

४. नामा प्रणाली से ब्रह्म रंध्र भेदन किया द्वारा

५. आसन, बंध एवं मुद्राओं द्वारा

६. हठयोग पद्धति एवं सूर्य साधना द्वारा

७. ध्यान एवं नाद योग से चक्र भेदन द्वारा

८. नाड़ी शोधन एवं सुषुम्ना ताइन विधि द्वारा

९. षट् कर्म एवं भस्त्रिका अभ्यास द्वारा

१०. सतत ‘हु’ हुकार ध्वनि द्वारा

११. विशिष्ट प्राणायाम प्रक्रिया द्वारा।

वे सभी विद्याएं अपने आप में पूर्ण एवं प्रामाणिक हैं, अनुभव गम्य एवं साधकों की सफलता का आधार भूत माध्यम रही है, किसी भी एक या उनेक पद्धतियों का आश्रय ले साधक अपनी सुषुम्ना सुषुम्ना को मूलाधार से उठाकर नित अभ्यास करता हुआ सहस्रार तक सभी चक्रों को जाग्रत कर सफलता प्राप्त कर लेनाहै, यहां पर हम प्राणायाम के माध्यम से केव्य शीघ्र सफलता

प्राप्त कर सकते हैं, इस विषय पर सूक्ष्म विवेचन के द्वारा प्रकाश डालने का प्रयास कर रहे हैं।

### प्राणायाम शब्द और क्रिया का तात्त्विक विवेचन

प्राणायाम का शाब्दिक ओर सीधा सादा अर्थ है प्राण को समस्व नहीं, संक्षेप में स्वामी शिवानन्द जी के शब्दों में स्पष्ट आयाम देना अर्थात् विश्राम देना, रोकना। एक विशिष्ट पद्धति है।

से प्राण पर नियंत्रण पाने की क्रिया एवं अध्यात्म का प्राणायाम कहा गया है, इसके तात्त्विक विवेचन में पूर्ण पांच प्राण को समस्व लेना आवश्यक है, पुनः प्राण को पांच उपविभागों में भी विभाजित किया गया है।

(१) प्राण (२) अपान (३)

समान (४) उदान (५) व्यान

#### (१) प्राण

प्राण एक वायरीय शक्ति जो समस्त ब्रह्माण्ड में व्याप्त है, श्वास द्वारा ली जाने वाली वायु से उसका घनिष्ठ संबंध है, किन्तु हवा की अपेक्षा अधिक सूक्ष्म है इसीलिए प्राण मूल शक्ति के रूप में वायु तथा समस्त सृष्टि में व्याप्त शरीर में नहीं वरन् कण्ठ नली तथा श्वास पठल के मध्य में स्थित है।

#### (२) अपान

यह नाभि प्रदेश में स्थित हो कर बड़ी आंत को बल प्रदान करता है।

#### (३) समान

इसका नन्दनंथ छाती एवं नाभि के प्रध्यवर्ती क्षेत्र से है।

#### (४) उदान

इससे कंठनली के ऊपर के अंगों का नियंत्रण होता है।

#### (५) व्यान

यह जीवन शक्ति सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त है।

शरीर में प्राण के अतिरिक्त पांच उपप्राण भी बताये गये हैं जिनके

नाम क्रमशः (१) नाग (२) कूर्म (३) किंकर (४) वेदवत् तथा (५) धनंजय हैं।

विषय विस्तार के कारण यहाँ इन रखबक्ता विस्तार से विवेचन

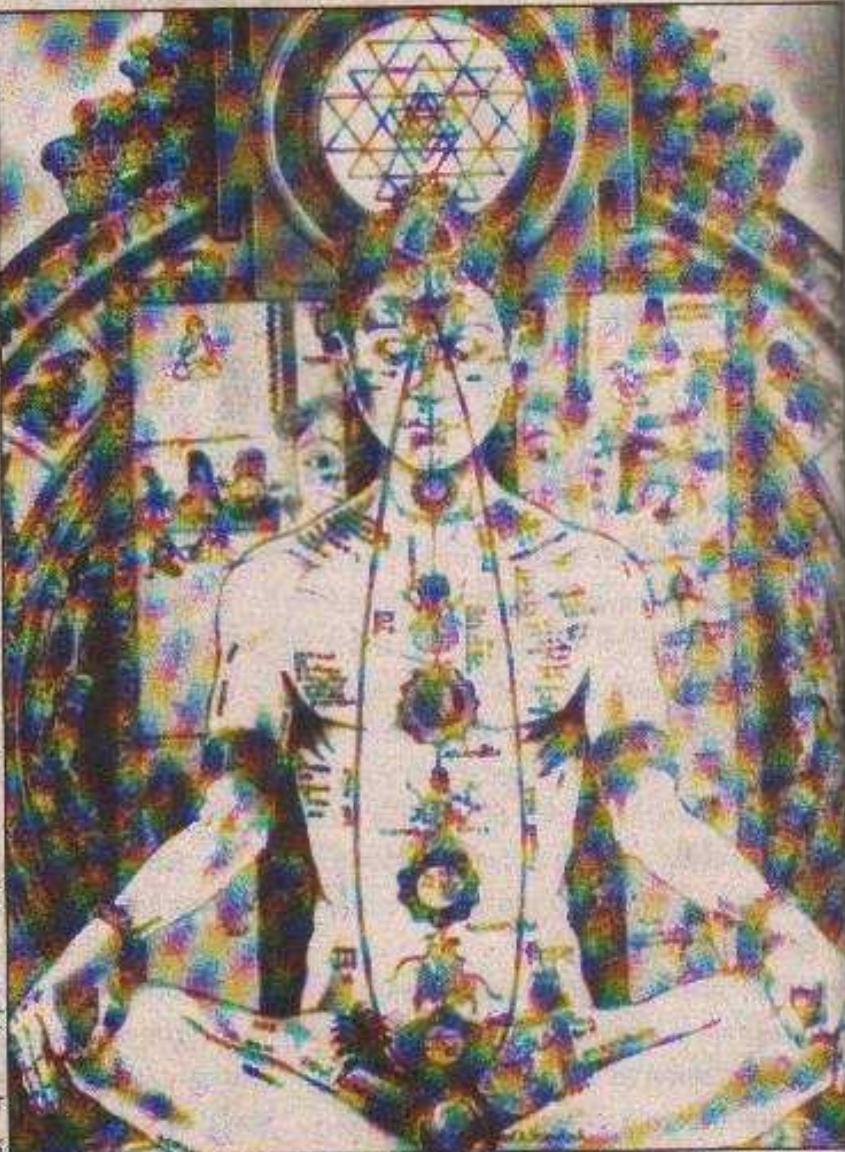
सम्भव नहीं, संक्षेप में स्वामी शिवानन्द जी के शब्दों में स्पष्ट

'भौतिक स्तर पर प्राण यति एव क्रियाओं के रूप में तथा

मानसिक स्तर पर विचार के रूप में दिखाई देता है, प्राणायाम

वह माध्यम है जिसके द्वारा योगी जपने द्वाटे से शरीर में समस्त

ब्रह्माण्ड के जीवन अनुभव का प्रयास करता है तथा सृष्टि की



उमस्त शक्तियां प्राप्त कर पूर्णता की ग्रामि का प्रयत्न हो जाता है, ध्यान की स्थिरता तथा प्राण की सुखमता और बनता है।

### कुण्डलिनी जागरण से पूर्व विकारों का क्षय

योग सिद्धि एवं मनु स्मृति में भी प्राणायाम की महिमा का उक्त कागड़ से गुणालान किया गया है।

आसन की स्थिरता होने पर श्वास-प्रश्वास की स्वाभाविक गति का नियमन करना रोक कर सम कर देना, प्राणायाम क्रिया के प्रथम आधारभूत मफलाना है, दूसरा काल संख्यों के आधार पर श्वास प्रश्वासों की स्वाभाविक गतियों को दोष और सूक्ष्म वृत्ति से बाह्य वृत्ति (रचक), आध्यन्तर वृत्ति (पूरक) और स्तम्भ वृत्ति (कुम्भक) में नियमित करना ये मुख्य तीन भेद हैं।

मनु के अब्दों में प्राणायाम के लाभ स्पष्ट हैं।

“जैसे अग्नि से नपाये हुए रवण, रजत अदि धातुओं के नल जल जाने हैं, वैसे ही प्राणायाम के अनुषान से इन्द्रियों में जा गये दोष, विकार आदि नष्ट हो जाते हैं, केवल इन्द्रियों के नेत्र ही दूर नहीं होते प्रत्युत देह, प्राण, मन के विचार भी दूर हो रहे उन पर आधिपत्य प्राप्त हो जाता है।”

प्राणायाम के अध्यात्म से अनुष्ठान पर पढ़ा आवरण दूर हो जाता है, विवेक बुद्धि जाग्रत हो जाती है, मन को जहां तहां उन्नत बाहर किसी भी स्थान विशेष पर उठारने की शक्ति आ जाती है, इससे प्रत्युत्तर सिद्धि में भी सम्भायता मिलती है।

### कुण्डलिनी जागरण में सहायक विशिष्ट प्राणायाम

बैरण्ड संहिता तथा हठयोग प्रवीपिका में इस विशिष्ट प्रक्रिया के लिए कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण प्राणायाम प्रयोग इस प्रकार बनाये हैं।

### (१) नाड़ी शोधन अथवा नाड़ी शुद्धि प्राणायाम

पद्मासन में बैठकर दाएं हाथ के अंगूठे से दबाकर प्राण वायु की धीरे धीरे मूलाधार तक भर ले, विना कुंभक किये ही वैयं नशुने से शनि-शनि रेचक करें, अर्थात् सांस बाढ़र निकाल दें, इसी प्रकार नासिका के बायं छिद्र से पूर्ववत् प्राण का पूरक करें, प्राण वायु को कंठ, इवय भी उदर में भरकर वथाशनि कुम्भक करें, इस क्रिया में ऐसा अहसास होना चाहिए कि शिखा से लेकर पाठ नख पर्यन्त प्राण वायु देह में भर गया है, जब कुछ जलके विना कुंभक किये रेचक करें, इसी प्रकार नित्य अध्यात्म से इनकी सरेख्या बढ़ाते हुए ६० तक ले जाएं।

यह अध्यात्म सिद्ध होने पर छोटी बड़ी सभी नाड़ी तथा शराओं की शुद्धि हो कर देह में सर्वत्र रक्त, प्राण, ज्ञान, क्रिया का व्यायायत संचार होने लगता है, सुषुप्ता मूलाधार से उठकर कुछ मुख्य हो जाती है, कुण्डलिनी जाग्रत होने का क्रम प्रारंभ

### (२) भृतिका प्राणायाम

यह प्राणायाम खड़े तथा बैठे दोनों स्थितियों में किया जा सकता है लिएक ध्यान रखने की बात यह है कि सामर्थ्यानुसार साधक लुहार की धौकिनी के समान श्वास प्रश्वास की गति को बम पूर्वक, अथात् नक्षत्रि स्थिति रखने हुए उस श्वास प्रश्वास तक करता रहे जब तक कि वह पसीने पसीने न हो जाए, श्वास प्रश्वास तम्बा और पूरा होना चाहिए, दोनों नशुनों से एक साथ भी यह किया जी जा सकती है या अपने अध्यस्त आसन में बैठकर अंगुलियों से बायें नशुनों को बन्द करके बिना कुम्भक किये दायें नशुने ले शब्द ध्वनि उत्पन्न करते हुए बल पूर्वक रेचक और पूरक को बिना लेके लाभे लाभे श्वास-प्रश्वास तारा करें, इस प्राणायाम के अध्यासी को दूध और धी का मेवन करते हुए धीरे धीरे अध्यात्म बढ़ाते रहना चाहिए, हठयोग प्रवीपिका में इस प्राणायाम के लिए स्पष्ट लिखा।

**कुण्डली-धीधकं शिष्रं पवनं सुखदं हितम् ।**

**ब्रह्मनाथी मुखे संस्थ-कफ-दग्धतनाशनम् ॥**

**सम्यग् गात्र समुद् भूतं ग्रन्थि त्रय विभेदकम् ...**

यह प्राणायाम कुण्डलिनी को धीर जाता, प्राण को सुखद बनाता और सुषुप्ता के द्वार को खोलता है, प्राण तथा कुण्डलिनी के ऊर्ध्व गमन में होने वाली सुषुप्ता गल स्कावट को हटाता है, सुषुप्ता में पही ब्रह्म ग्रन्थि, विष्णु ग्रन्थि, सद्गुरुन्धियों को खोल देने में अति सहायक सिद्ध होता है।

### (३) सूर्य भेदी प्राणायाम

सिद्धासन अथवा पद्मासन में बैठकर सूर्य नाड़ी, विश्वासन अर्थात् दायें नशुने से शनि-शनि अब्द ध्वनि करते हुए प्राण का पूरक करें, प्राण वायु को कंठ, इवय भी उदर में भरकर वथाशनि कुम्भक करें, इस क्रिया में ऐसा अहसास होना चाहिए कि शिखा से लेकर पाठ नख पर्यन्त प्राण वायु देह में भर गया है, जब कुछ जलके विना कुंभक किये रेचक करें, इसी प्रकार नित्य अध्यात्म से इनकी सरेख्या बढ़ाते हुए नाड़ी से रेचक किया जाता है, नित्य अध्यात्म से धीरे धीरे संस्था २१ और ३१ तक बढ़ा सकते हैं, बैरण्ड संहिता में इस प्राणायाम के लाभ बताते हुए लिखा है।

**कुम्भकः सूर्य भेदस्तु जरामृत्यु विनाशकः ।**

**धीधेत कुण्डली धौक्ति येहायत विवर्धनः ॥**

यह प्राणायाम बुढ़ापि और मृत्यु को देह में नहीं आने देता कुण्डलिनी को जगाता और जठराज्ञि को प्रदीप करता है।

#### (४) त्रिवन्ध युक्त वायवीय कुभक प्राणायाम

प्रदमास्त्रन में बैठ कर गीवा कटि को भीधा रखने हुए दोनों हथेलियां घुटनों पर रख कर दूषि को धूमध्य में स्थिर कर दें, दोनों नथुनों से लम्बी सांस लेते हुए २५ बार रेचक पूरक शीघ्रता करके गूल, उड़ियान और जालन्धर तीनों बन्ध लगाकर यथा शक्ति बाह्य कुभक करें, घबराहट होने पर देव धूक दोनों नथुनों से पूरक करके उड़ियान बन्ध ढीला छोड़ कर अन्तः कुभक कर लें और फिर घबराहट होने पर दोनों नथुनों से वेग पूर्वक रेचक कर दें, इस प्रकार अभ्यास से थीरे-धीरे संस्था बढ़ाते रहें।

प्राण को मूलाधार से बहु रंध की ओर इच्छापूर्वक गमन कराने की शक्ति आ जाने से कुण्डलिनी जागरण स्वतः हो जाता है।

#### प्राणायाम की उपयोगिता तथा उसमें शारीरिक स्वास्थ्य (आरोग्य)-लाभ

शारीर की रक्षा के लिये निस प्रकार अचकी उपयोगिता है, शारीरस्थ रोगनाश के लिये जैसे श्रीशिद्धियों का विनियोग होता है, उसी प्रकार शारीरस्थ बाहरी और भीतरी (बाह्याभ्यन्तर) रोगों के समूल नाश के लिये प्राणायाम का प्रयोग होता है।

जैसा किंकड़ा भी गया है-

प्राणायामेन युक्ते न सर्वरोगक्षयो भवेत् ।

आयुक्ताभ्यासयोगेन सर्वरोगसमुद्भवः ॥

हित्वा कासश्च स्वासश्च शिरःकण्ठिकेवनः ।

भवन्ति विविधा दोषाः पवनस्य व्यतिक्रमात् ॥

अर्थात् समुचित प्राणायामद्वारा सभी रोगों का नाश हो जाता है और अविद्यपूर्वक प्राणायाम के अभ्यास से सब रोग उत्पन्न हो सकते हैं। उनमें विशेष रूप से हिचकी, खांसी और श्वास (सांस) का फूलना, रिर, कान एवं नेत्र में बेदना आदि अनेक रोग उत्पन्न होते हैं। इस आशय की पुष्टि ब्रह्मार्दीय पुराण से भी होती है।

यथा-

शनैः शनेविजेतव्याः प्राणाः मत्तगजेन्द्रवतः ।

अन्यथा खलु जायन्ते महारोगा भयकराः ॥

आशय यह है कि मनवाले डार्थी के समान प्राणायाम करने समय प्राण (वायु) को अभ्यास द्वारा धीरे धीरे जीतना चाहिए अन्यथा भयकर महारोग होने की संभावना रहती है।

योगशास्त्रानुमोदित पद्धति से तथा गुरु के द्वारा उपलिखित परम्परा से किये गये प्राणायामों से रक्ष रोग नष्ट हो जाते हैं और यदि इसके विपरीत आचरण किया जाता है तो रोग होना सुनिश्चित है।

अतः प्राणायाम करने में प्राचीन परंपरा का पालन आवश्यक है। प्राचीन परंपरा के पालन में स्थान और काल आदिका ध्यान रखना आवश्यक है। जैसा कि कहा गया है-

आदी स्थानं तथा कालं मिताऽऽहारं ततः परम् ।

नाशीशुक्ष्मिं ततः पश्चात् प्राणायामे च साधयेत् ॥

अर्थात् प्राणायाम-साधना में उपयुक्त स्थान, काल, परिमित आहार और नाई-शुद्धि (वात-पित्त-कफकी) आवश्यक है।

रोग-नाश के अतिरिक्त मानसिक संतुलन रखने में भी प्राणायाम का महान उपयोग होता है। प्राणायाम के निरन्तर अभ्यास से चित्त में रक्षादाता आती है और इसके लिये पातंजलीत 'पञ्चदर्शनविधारणाभ्यां वा प्राणस्य' अर्थात् कोष्ठगत वायु का नासिका (नाक)-के पुटोंद्वारा विशेष प्रयत्न से पञ्चदर्शन-वर्मन विधारण-विशेषरूप से धारण करके प्राणायाम करे।

प्राणायामेन संवर्यम्य मनो वर्षशतं मुनिः ।

अतिष्ठृदेकपादेन निर्द्धन्दोऽनिलभोजनः ॥

प्राणायामात् खेचरस्त्वं प्राणायामाद्वोगनाशनम्

प्राणायामाद्वोधयेच्छस्ति प्राणायामान्पनोन्पनी ॥

आनन्दो जायते चित्त प्राणायामी सुखी भवेत् ।

अर्थात् प्राणायाम से आकाशगमन की शक्ति आती है, प्राणायाम से समूल रोग-नाश होता है, इसके बढ़ती है, मानसिक संतुलन ठीक रहता है, चित्त में आनन्द की प्रसिद्धि होती है और प्राणायामी सब प्रकार से नीरोग रहते हुए सुखी रहता है।

इतना ही नहीं, प्राणायाम के सेवन से शरीर में फेफड़ (फुफ्फुस) की शक्ति बढ़ती है, सूधिरकी शुद्धि होती है। समरन नाई-चक्रों में चैतन्य आता है।

ऐसे प्राणादायक प्राणायाम के सेवन से स्वस्थ एवं नीरोग रहकर पुरुषाद्यचतुर्थ-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति कर मानव-जीवन को सफल बनाया जा सकता है।

गाम करते

न चाहिए

उपलब्ध

हैं जो उन

राग होना

आवश्यक

का ध्यान

म।

इ॥

परिस्ति  
कहे।

ध्ये में भी  
के निरंतर

नातनलोक  
न वायु का

ईन-बमन,

।

निः।

नः॥

शनम्

ननी॥

प्रवृत्।

ज-आती है,  
इ-मानसिक

जीती है और  
है।

र में फेफड़  
है। समस्त

एवं नीरोग  
को प्राप्त

निः शुल्क उपहार

दिव्य उपहार !!

# महाकाला माला

भगवान् महाकाल का तावता का अनुभव हर उस त्याक्त का होता है, जो काल के ज्वार भाटे का अनुभव करता है, इन क्षणों में त्यक्ति किसी भी अन्य पर विद्वास नहीं करता, वह निर्भर होता है तो मात्र स्वयं पर या काल पर लैकिल जो समर्थ त्यक्ति होते हैं, ते काल पर भी निर्भर नहीं होते अपितु अपने साधनात्मक बल से काल को अपने अनुसार चलने को बाध्य कर देते हैं। 'महाकाला माला' भी एक ऐसी ही अद्वितीय माला है, जिसे धारण करके साधक अपने मार्ग की ऊकावट को धकेल कर हटा सकता है, बाधाओं को पैर की ठोकरों से उड़ा सकता है। आप इसे सवा माह तक धारण करने के उपरांत नदी में खिलार्जित कर दें तथा निट्य भगवान शिव का हयान करें।

## जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान — “ज्ञान दान”

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। २० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समाजों में, मंगल कार्यों में, ब्राह्मणों को, धार्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे बचित हैं। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

### आप छस्या करें?

आप केवल एक पत्र (संलग्न लोस्टकार्ड क्रमांक 3) भेज दें, कि 'मैं २० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूँ। आप निः शुल्क 'महाकाल माला' ३९०/- (२० पूर्व प्रकाशित पत्रिका के ३००/- + छाक त्रय ९०/-) की बी. पी. पी. से भिजवा दें, बी. पी. पी. आप पर मैं पोस्टबैन को धन यशि देकर छुड़ा लूँगा। बी. पी. पी. छूटने के बाद युगे २० पत्रिकाएं रजिस्टर्ड छाक द्वारा भेज दें।' आपका पत्र आपने पर ३००/- + छाक त्रय ९०/- = ३९०/- की बी. पी. पी. से 'महाकाल माला' भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दूरीम उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके। बी. पी. पी. छूटने पर आपको २० पत्रिकाएं भेज दी जाएंगी।

### सम्पर्क अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - ३४२००१, (राज.)

फोन - ०२९१-४३२२०९, टेलीफोन: ०२९१-४३२०१०

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India. Phone : 0291-432209

‘दिव्यपत्र’ 2001 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान ‘75’

# विवाह रेखा

## क्या कहती है

भूमि शरीर में नवये कोमल और चिकित्सा जो आवश्यक है, उभया नाम 'विल' है। एक प्रबाल में इसका शरीर में नवले अधिक नहीं है। एक तरफ यह पूरे शरीर में खुल पहुँचाने का कार्य करता है, तो दूसरी तरफ यह अपने आप में इनमा अधिक जोमल छाना है कि कहे भावनाओं को मन में भेजकर सुनता है।

कोमल विचार, विपरीत देने के प्रति भावनाएं आदि कार्य इसी के माध्यम से सम्पन्न होते हैं। यह इनमा अधिक कोमल होता है कि जरा-सी विपरीत बात से ख्यालों ठेस पहुँच जाती है और टूट जाता है। इस पर को भली प्रकार से पार करने के लिए एक ऐसे मध्यमणी की जरूरत होती है, जो दुख में सहायता हो, परेशानियों में हिमान जाता है। मानवीय कल्पनाओं का यह एक सुन्दर प्रतीक है। बंधाने वाला हो तथा जीवन में केंद्र से केंद्रा भिलाकर चलने की कल्पना, दया, ममता, स्नेह और प्रेम आदि भावनाएं इसी के समान रखता है।

एक हृदय चाहता है कि वह कृपये हृत्य से सम्पर्क स्थापित दिखने में छोटी होती है, पर इसका महत्व सबसे अधिक होता करे, आपमें दोनों का प्यार हो। दोनों हृत्य एक मधुर कल्पना है। यह रेखा कीनिष्ठा उंगलों के नीचे, हृदय रेखा के कुपर से ओत-प्रोत हों और नव दोनों हृत्य एक सूत में बंध जाते हैं, बुध पर्वत के बगल में हयेली के बाहर निकलने समय जो आहे तब उसे समाज विवाह का नाम देता है।

वस्तुतः मानव जीवन की पूर्णता तभी कही जाती है, जबकि हयेली में पेसी, रेखाएं दो तीन या चार हो सकती हैं, पर उन उसका अज्ञान भी सुन्दर हो, समझदार हो, प्रेम की भावना से तभी रेखाओं में एक रेखा मुख्य होती है। यदि ये रेखाएं हृदय भर हुआ हो तथा दोनों के हृदय एक दूसरे से मिल जाने की रेखा से ऊर हों, तो वे विवाह रेखाएं कहलाती हैं और ऐसे समान रखत हैं। निश्चयित के घर में सुशील, सुन्दर रवरथ व्यक्ति का विवाह निश्चय ही होता है। परंतु ये रेखाएं यदि हृदय

रेखा से नीचे हों, तो ऐसे व्यक्ति का विवाह जीवन में नहीं होता।

यदि हथेली में दो या तीन रेखाएं हों, तो जो रेखा भवसे अधिक लंबी पुष्ट और स्वस्थ हो उसे विवाह रेखा मानना चाहिए। बाकी रेखाएं इस बात की सूचक होती हैं कि या तो विवाह से पूर्व उतने सम्बंध होकर दूर जाएंगे अथवा विवाह के बाद उतनी अन्य स्त्रियों से सम्पर्क रहेंगे।

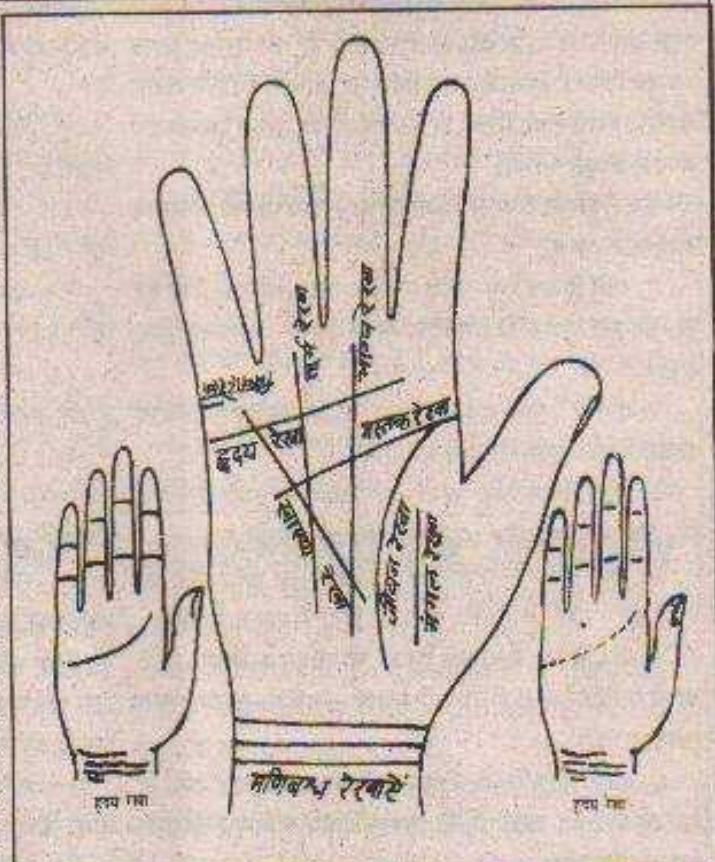
पर इसके साथ ही साथ जो छोटी छोटी रेखाएं होती हैं, वे रेखाएं प्रणय रेखाएं कहलाती हैं। वे जितनी रेखाएं होंगी, व्यक्ति के जीवन में उतनी ही पर स्त्रियों का सम्पर्क रहेगा। यही बात स्त्रियों के हाथ में भी लाग देती है।

पर केवल ये रेखाएं देखाकर ही अपना मत लियर नहीं कर लेना चाहिए। पर्वतों का अध्ययन भी इसके ज्ञाया-साथ आवश्यक है। यदि इस प्रकार की रेखाएं हों और गुरु पर्वत ज्यादा पुष्ट हों तो निश्चय ही ऐसा व्यक्ति प्रेम सम्बंध स्थापित करता है, पर उसका प्रेम सान्त्विक और निरोध होता है। यदि शानि पर्वत विशेष उभरा हुआ हो और ऐसी रेखाएं हों, तो व्यक्ति अपनी आदि से बड़ी आयु की स्त्रियों से प्रेम सम्बंध स्थापित करता है।

यदि हथेली में सूर्य पर्वत पुष्ट हो और ऐसी रेखाएं हों, तो व्यक्ति बहुत अधिक सोच विचार कर अन्य स्त्रियों से प्रेम सम्पर्क स्थापित करता है। यदि बुध पर्वत विकसित हो तथा प्रणय रेखाएं हाथ में दिखाई दें, तो ऐसे व्यक्ति को भी प्रेमिकाओं से धन लाभ होता है। यदि हथेली में प्रणय रेखाएं हों और चन्द्र पर्वत विकसित हो, तो व्यक्ति काम लोलुप तथा सुन्दर स्त्रियों के बीच फिरने वाला होता है। यदि शुक्र पर्वत बहुत अधिक विकसित हो तथा प्रणय रेखाएं हों, तो वह व्यक्ति अपने जीवन में कई स्त्रियों से सम्बंध स्थापित करता है, तथा पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

प्रणय रेखा का हृदय रेखा से गहरा सम्बंध होता है। ये प्रणय रेखाएं हृदय रेखा से जितनी अधिक नजदीक होंगी, व्यक्ति उतना ही कम उम्र में प्रेम सम्बंध स्थापित करेगा और ये प्रणय रेखाएं हृदय रेखा से जितनी अधिक दूर होंगी, व्यक्ति के जीवन में प्रेम सम्बंध उतना ही अधिक बिलम्ब से होगा।

यदि हथेली में प्रणय रेखा न हो, तो व्यक्ति अपने जीवन में लेने में बदलावी सहन करता है। यदि प्रणय रेखा से कोई नहायक



संबंधित रहते हैं तथा वे काम लोलुप नहीं होते।

यदि प्रणय रेखा गहरी तथा स्पष्ट हो, तो उस व्यक्ति के प्रणय सम्बंध भी गहरे जानेगे। परंतु यदि ये प्रणय रेखाएं छोटी तथा कम जोर हों, तो उस व्यक्ति के प्रणय सम्बंध भी बहुत कम समय से खल सकेंगे।

यदि दो प्रणय रेखाएं साथ-साथ ऊपर बढ़ रही हों, तो उसके जीवन में एक साथ दो स्त्रियों से प्रेम सम्बंध चलेंगे, ऐसा समझना चाहिए। यदि प्रणय रेखा पर डोस का चिन्ह हो तो व्यक्ति का प्रेम बीच में ही दूर जाना है। यदि प्रणय रेखा पर द्वितीय चिन्ह दिखाई दे तो उसे प्रेम के लेत्र में बदनामी सहन करनी पड़ती है।

यदि प्रणय रेखा भूर्य पर्वत की ओर जा रही हो, तो उस व्यक्ति का प्रेम सम्बंध ऊच जानामो से रहेगा। यदि प्रणय रेखा हृदय रेखा से जितनी अधिक दूर होंगी, व्यक्ति का प्रेम सम्बंध जल्दी ही समाप्त हो जान है। यदि प्रणय रेखा में कोई सहायक रेखा हथेली में नीचे की ओर जा रही हो, तो वह उन-

- रेखा हथेली में ऊपर की ओर बढ़ रही हो, तो उसका प्रणाय कई भागों में बंट जाए तो बार-बार संगाई टूटने का योग बनता सम्बुद्ध टिकाऊ रहता है तथा जीवन भर आनन्द उपभोग करता है।
६. यदि प्रणाय रेखा बीच में ही दृटी हुई हो, तो उससे प्रेम सम्बंध है। यदि विवाह रेखा न्यूर्थ रेखा को स्पर्श कर नीचे की ओर बढ़ती हो, तो ऐसा विवाह अनमेल विवाह कहलाता है।
७. यदि विवाह रेखा स्पष्ट, निर्दीष तथा लालिमा लिए दृष्ट हो, तो उस व्यक्ति का वैवाहिक जीवन अत्यन्त सुखमय होता है।
८. यदि विवाह रेखा स्पष्ट, निर्दीष तथा लालिमा लिए दृष्ट हो, तो उसकी पत्नी व्यभिचारिणी होती है।
९. यदि विवाह रेखा स्पष्ट, निर्दीष तथा लालिमा लिए दृष्ट हो, तो उसकी पत्नी का सुख नहीं मिलता।
१०. यदि विवाह रेखा आगे चलकर आयुरु रेखा को काटता है।
११. यदि विवाह रेखा स्पष्ट हो, तो व्यक्ति दास्पत्य हो, तो उसका वैवाहिक जीवन कलनह पूर्ण रहता है।
१२. यदि विवाह रेखा, भास्य रेखा तथा मस्निष्ठ रेखा परस्पर मिलती हो, तो उसका वैवाहिक जीवन अत्यन्त सुखदायी समझना चाहिए।
१३. यदि विवाह रेखा कोई आड़ी रेखा काटती हो, तो व्यक्ति का वैवाहिक जीवन बाधाकारक होता है।
१४. यदि कोई अन्य रेखा विवाह रेखा में आकर या विवाह रेखा स्थान पर आकर मिल रही हो तो प्रेतिका के कारण उसका गृहस्थ जीवन नष्ट हो जाता है।
१५. यदि विवाह रेखा के प्रारंभ में द्वीप का चिन्ह हो, तो काफी बाधाओं के बाद उसका विवाह होता है।
१६. यदि विवाह रेखा जहाँ से छुक रही हो, उस जगह क्रोम का चिन्ह हो तो उसकी पत्नी की मृत्यु अकल्प्यान होती है।
१७. यदि विवाह रेखा को सन्तान रेखा काटती हो, तो उसका विवाह अत्यन्त कठिनाई के बाद होता है।
१८. यदि विवाह रेखा से कोई आड़ी रेखा निकलकर विवाह रेखा से सम्पर्क स्थापित करती है, तो उसका वैवाहिक जीवन अत्यन्त सुखमय होता है।
१९. यदि विवाह रेखा आगे चलकर दो मुंह वाली बन जाती है, तो इस प्रकार के व्यक्ति का दास्पत्य जीवन सुखमय नहीं कहा जा सकता तथा उसका वैवाहिक जीवन कलहपूर्ण बना रहता है।
२०. यदि विवाह रेखा के प्रारंभ में द्वीप का चिन्ह हो, तो काफी बाधाओं के बाद उसका विवाह होता है।
२१. यदि विवाह रेखा जहाँ से छुक रही हो, उस जगह क्रोम का चिन्ह हो तो उसकी पत्नी की मृत्यु अकल्प्यान होती है।
२२. यदि विवाह रेखा को सन्तान रेखा काटती हो, तो उसका विवाह अत्यन्त कठिनाई के बाद होता है।
२३. यदि विवाह रेखा पर एक से अधिक द्वीप हो, तो व्यक्ति जीवन भर कुआरा रहता है।
२४. यदि बुध शेष के आस-पास विवाह रेखा के साथ-साथ दो तीन रेखाएं चल रही हों, तो जीवन में पत्नी के भलावा उसके सम्बंध दो-तीन स्त्रियों से रहते हैं।
२५. यदि विवाह रेखा बढ़कर कठिनिका की ओर दूक जाए, तो उसके जीवन साथी की मृत्यु उसके पूर्व होती है।
२६. विवाह रेखा का अचलक टूट जाना, गृहस्थ जीवन में बाधा रखरूप समझना चाहिए।
२७. यदि बुध शेष पर दो समानान्तर रेखाएं हों, तो उसके दो विवाह होते हैं, ऐसे समझना चाहिए।
२८. यदि विवाह रेखा आगे चलकर मूर्य रेखा से मिलती हो, तो उसकी पत्नी उच्च घद पर नौकरी करने वाली होती है।
२९. यदि दो हृदय रेखाएं हों, तो व्यक्ति का विवाह अत्यन्त अपनी पत्नी की इत्या करता है। यदि बुध पर्वत पर विवाह रेखा

कठिनाई से होता है।

३०. यदि चन्द्र पर्वत से रेखा आकर विवाह रेखा से मिले, तो मृत्यु समझनी चाहिए।

३१. यदि मंगल रेखा से कोई रेखा आकर विवाह रेखा से हो, तो ऐसे व्यक्ति को जीवन में सन्तान सुख नहीं रहता।

३२. यदि चन्द्र रेखा पर जो खड़ी लकड़ी होती है, वे सन्तान में उसके विवाह में बराबर बाधाएं बनी रहती हैं।

३३. यदि मंगल रेखा पर जो खड़ी लकड़ी होती है, वे सन्तान होती है, परंतु यदि कमज़ोर रेखाएं होती हैं, तो सन्तान भी कमज़ोर रखाएं कठलाती हैं।

३४. सन्तान रेखाएं अत्यन्त मर्हीन होती हैं, जिन्हें नंगी और अंखों से देखा जाना सम्भव नहीं होता।

३५. इन सन्तान रेखाओं में जो लम्बी और पुष्ट होती है, वे प्रथम रेखाएं होती हैं तथा जो मर्हीन और कमज़ोर होती है, उन्हें प्रसन्नत: विवाह रेखा का अपने आप में महत्व है और इस रेखा का अध्ययन पूर्णतः सावधानी के साथ किया जाना चाहिए।

३६. यदि इनमें से कोई रेखा ढूटी हुई हो, तो उस बालक की समझनी चाहिए।

३७. यदि स्पष्ट और सीधी रेखाएं होती हैं, तो सन्तान स्वरूप होती है, परंतु यदि कमज़ोर रेखाएं होती हैं, तो सन्तान भी कमज़ोर समझनी चाहिए।

३८. विवाह रेखा को ६० वर्ष का समझ कर इस रेखा पर जड़ों पर भी गहरापन दिखाई दे, आयु के उस भाग में विवाह समझना चाहिए।

३९. विवाह रेखा का अपने आप में महत्व है और इस रेखा का अध्ययन पूर्णतः सावधानी के साथ किया जाना चाहिए।

(पृष्ठ 28 का शेष)

**मंगल:** अग्नि तत्व प्रधान यह है। पराक्रम, हिंसा, कर्मठता, रक्त, मास आदि का अधिपति है। अतः दशम भाव में मंगल प्रधान व्यक्ति सेना, पुलिस, सर्जन आदि होता है। शूमि पूत्र होने के कारण भूमि, भवन, कृषि कार्य, सम्पत्ति को किराये पर उठाने से संबंध रहता है। मंगल का संबंध सूर्य के साथ भट्टा, विजली का सामान, मंगल का संबंध चन्द्र से होने पर होटल, लौज, किराये के मकान आदि का व्यवसाय होता है। मंगल लग्न में होने पर चतुर्थेश या एकादेश से संबंध होने पर कूर कमों या चोरी द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

**बुध:** पृथ्वी तत्व का प्रतीक यह बुध है। यह व्यापार का नायक है। यदि बुध लग्नेश, सूर्य तथा चन्द्र को प्रभावित करता है तो जातक अध्यापन कार्य करता है। यदि बुध छितीयेश या पचमेश डोकर गुरु से संबंध हो तो जातक वकील, अध्यापक, उपदेशकर्ता होता है। बुध यदि सूर्य से प्रभावित हो तो कलंक, नेखाकार, बैंक आदि के पद पर होता है। बुध का शनि-शुक्र ने संबंध होने पर वस्त्र विक्रेता, बुध छितीयेश के साथ होने पर न्योतिष्ठो बना देता है। बुध नृतीयेश होने पर विद्वान लेखक या पत्रकार होता है।

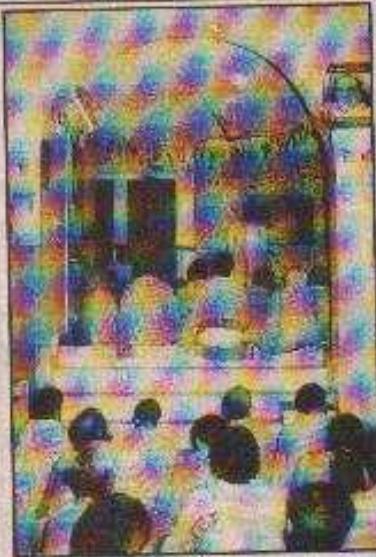
**गुरु:** वायु तत्व प्रधान यह है। यह विद्या, कानून, वित, वाणी, राज्य की कृपा आदि का प्रधान यह है। अधिक बली गुरु न्यायाधीश बनाता है। गुरु छितीयेश या एकादेश डोकर लग्न और लग्नेश पर प्रभाव हो तो बैंक, किराया, व्याज, साकारी आदि का कार्य हो सकता है।

**शुक्र:** जल तत्व प्रधान यह है। यह भोग-विलास वाला यह है। इसके प्रभाव से कलात्मक तथा सौन्दर्य प्रसाधन वस्तुएं, रहता है।

सूर्य आदि से संबंधित व्यवसाय होते हैं। यदि चतुर्थेश से संबंध हो तो वाहन आदि से संबंधित कार्य होता है। यदि शुक्र लग्नेश, धनेश अथवा गुरु से प्रभावित हो तो जातक जोहरी होता है। शुक्र चतुर्थ चतुर्थेश के साथ चन्द्रमा को प्रभावित करता हो तो जातक कवि होता है।

**शनि:** वायु तत्व प्रधान यह है। इसका प्रभाव रोग, धातु, मूत्र, घृणा, पत्थर आदि पर है। शनि मंगल से प्रभावित हो तो इजीनियर अथवा विजली का काम करने वाला होता है। बुध से प्रभावित होने पर विजली का काम करने वाला, शनि से सूर्य व राहु प्रभावित होने पर चिकित्सा कार्य, चतुर्थेश शनि पृथ्वी के अंदर वाले पदार्थ तेल, पेट्रोल, कोयला आदि का कारक है। समम से शनि का संबंध हो और लग्न या लग्नेश को प्रभावित कर रहा हो तो व्यक्ति भवन ठेकेदार होता है या उसका व्यवसाय करता है। कम अंश का शनि यदि तुला राशि में हो तो नीकरी करता है।

**राहु-केतु:** छाया यह है। इनका पृथक अस्तित्व नहीं है। किसी की दृष्टि होने पर या युक्ति होने पर कारकत्व को प्राप्त होते हैं। दशम भाव में मंगल प्रधान व्यक्ति चुनीतियों को स्वीकार करते हैं जब तक जीते हैं स्वाभिमान से जीवन व्यतीत कर समाज में त्याग व बलिदान की परंपरा ढालकर राष्ट्रीय सम्मान से विभूषित होते हैं। जब सूर्य मंगल के साथ लग्न का स्वामी भी दशम भाव में हो तो निश्चित है राहु में सर्वोच्च सम्मान मिलता है। मंगल के साथ शुक्र की स्थिति कुड़ली में हो तो व्यक्ति नाइट कलब, होटल या मनोरंजन घर, सिनेमा निदेशक इत्यादि हो सकता है। उसका विपरीत लिंग वालों से संबंध



# गुरुद्वारा किंवद्दी

जिसकी परमात्माँ प्रबोग और उत्तम दीक्षाएँ  
जागत्का गुणी हैं, उस सिद्ध वैतन्य दिव्य शुभि-

## पर हो दिव्य साधनार्थक प्रयोग

23.1.2002 बुधवार लिखितेश्वरानन्द आवाहन सिद्धि प्रयोग

समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारम्भ हुई है, इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली 'सिद्धाश्रम' में पूज्य मुद्रेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विद्यान के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं, जो कि उस दिन शाम ६ से ८ बजे के बीच सम्पन्न होती हैं यदि श्रद्धा व विश्वास हो, तो उसी दिन से साधनाओं में सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

यह जीवन का बहुत बड़ा सौभाग्य होता है, कि शिव्य गूरु चरणों में रह सके, उनका साहचर्य लाभ प्राप्त कर सके। सदगुरु की मात्र उपस्थिति से ही शिव्य के अन्दर एक चेतना व्याप हो जाती है, उनकी उपस्थिति मात्र से ही संकट दूर हो जाते हैं, उनकी उपस्थिति मात्र से ही शिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं। सदगुरुदेव निखिलेश्वरानन्द जैसे अथतम व्यक्तित्व में जो व्यक्ति एक बार प्राणों से जुड़ जाता है, वह उनके बिना रह नहीं पाता। वह इसी उधेड़ बुन में रहता है, कि गुरुदेव का दर्शन लाम हो। इस विशेष साधना द्वारा साधक कहीं भर हो ब्रह्म मुहूर्त में सदगुरुदेव का आवाहन कर सकते हैं। इस साधना के फलस्वरूप पूज्यपाद अवश्य ही साधक के समस्त उपस्थित होते हैं, और इस उपस्थिति को अनेकों प्रकार से अनुभव किया जाता है, कभी दिव्य अष्टांग के रूप में, कभी मन में आई आकस्मिक प्रफुल्लता से, कभी ब्रिंजात्मक रूप में दर्शन द्वारा और कभी तो प्रत्यक्ष रूप में भी। यह प्रयोग सदगुरुदेव के चरणानुरागियों के लिए अमृतफल है। इस साधना द्वारा सदगुरुदेव की उपस्थिति का एहसास साधक को विशेष अवसरों पर मिलता रहता है, पक्ष शिव्य को इससे अधिक और बाहिर भी क्या?

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे। आप अपने किसी दो मित्रों अथवा स्वतन्त्रों को (जो पत्रिका के रद्दस्त नहीं हैं) पत्र तंत्र-यत्र यज्ञान गतिका वार्षिक सदस्य बनाकर दिल्ली गुरुद्वारा में तान्यन्त्र होने वाले किसी एक श्रोता में भाग ले सकते हैं। पत्रिका की सदस्यता का एक वरीय गुरु रु २३५/- है, परन्तु आपको पत्र रु ४६०/- ही जमा कराने हैं। प्रयोग से सन्तुष्टिया विशेष पत्र निक्ष, प्रण-प्रतिष्ठित साधी (पत्र, दुटिका आदि) आपको नि:शुल्क प्रदान की जाती है।

- १ यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप सदृश तथा अपने किसी एक पत्रिका के लिए पत्रिका वर्षिक सदस्यता आप कर उपरोक्त किसी ताठना में भाग ले सकते हैं।
- २ पत्रिका सदस्य बनाकर आप किसी एक परिग्राम की व्यापि परम्परा की इस पवन नामात्मक दान द्वारा से बोइकर एक पूर्णत एवं पूर्णवारी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयाप ते एक परिवार में अथवा कुछ प्रणियों में ईश्वरीय चिन्तन, साधनानक विन्तन वा घटा है, तो यह आपके भीवन की नफलता का भी भ्रातीक है। उपरोक्त प्रयोग रो मर्वथा नि:शुल्क है और उस कुरु दान ही उपरोक्त स्वरूप साधक को आप होते हैं। प्रयोगों की नीतिशावर राशि के अर्थ के हराजू में नहीं तील नकते।

एकोटो द्वारा 'सौंदर्यी आकर्षण दीक्षा' के बाल २३ से २५ जलखटी को ही आप चाहे तो निर्धारित विकासों से पूर्व ही अपना फोटो एवं नीतिशावर राशि का बैंक डाटा ('अव-तंत्र-यत्र यज्ञान' के नाम से) मेंजकर भी इन विकासों पर होने वाली दीक्षा को ग्राहन कर सकते हैं। आपका एकोटो एवं पांच सक्षम्यों के पत्र विस्तीर्ण कार्यालय को सम्मय पर प्राप्त हो सके, इस हेतु आप अपना पत्र शीघ्र अतिशयपूर्ण भेजें। पत्र विज्ञव से मिलने पर दीक्षा सम्पन्न न हो सकेंगी।

24.1.2002

## गुरुवार टेलीप्रैंथी साधना

क्या यह सम्भव है कि हम लामने बाले व्यक्ति के मन की बात पहले से ही जान जाएँ? क्या हम जान सकते हैं कि जिस व्यक्ति के साथ व्यापार कर रहे हैं, उसके मन में कैसी भावनाएँ हैं? वह क्या सोच रहा है? कहीं उससे घोषणा तो नहीं होगा? आपकी पत्ती के मन में या आपके पति के मन में क्या विचार हैं, क्या भावना है? आपके उच्चाधिकारी और आपके सहयोगी आपके बारे में क्या सोच रहे हैं? आपके शत्रु आपके बारे में क्या बोजनाएँ बना रहे हैं?

टेलीप्रैंथी एक ऐसी विद्या है, जिसके द्वारा दूसरे के मन के विचारों को एक खूबी पुस्तक की भाँति पढ़ा जा सकता है, चाहे वह व्यक्ति निकट हो अथवा दूर किसी दूसरे पर रहना हो साधना द्वारा मस्तिष्क के उन तन्तुओं को चेतना प्राप्त होती है, और उनके जाग्रत होने पर मनुष्य की वह सुस अलौकिक शक्ति जागत होती है, जिसने उसके लिए कोई रहस्य फिर रहस्य नहीं रह जाता है।

25.1.2002

## शुक्रवार भगवती दुर्गावस्त्रदात्यक प्रयोग

भगवति दुर्गा मां शक्ति के विभिन्न रूपों में सबसे अधिक क्षमतावान्, दयावान् एवं शक्तिशाली है। उनकी साधना करने का अर्थ है जीवन में वह सब कुछ प्राप्त कर लेना जो कि आपका अभीष्ट है। उनकी साधना के पश्चात् यह संभव ही नहीं कि कोई इच्छा अपूर्ण रह जाए। भगवति दुर्गा तो साधकों की कामनाओं की पूर्ति के लिए अपने वरदानों की झोली खोल देती है, प्राप्त करना न करना तो फिर साधक की अपनी क्षमता पर निर्भर है। परंतु अगर पूर्ण शक्ति एवं विश्वास के साथ इस प्रयोग को गुरु के सान्निध्य में संपन्न कर लिया जाए तो निश्चित ही सफलता प्राप्त होती है। इस श्रेष्ठतम् प्रयोग द्वारा आप किसी एक इच्छा की पूर्ति कर सकते हैं।

वीक्षा आज के तुम में पुल प्रामाणिक आप हैं जपलाल की ऊपराही की प्राप्त कर लेने का, जीवन के अवधि को, अप्यर्थन को दूर कर देने का, जीवन में अतुलवी बल, नाहस, पीरुष एवं शीर्य प्राप्त कर लेने का, साधना में विशिष्ट प्राप्त कर लेने का...

गुरु प्रवृद्ध शक्तियां द्वारा विद्या जिस कारण ऐसु वह वीक्षा प्राप्त करना है, उसमें निपुक्ति प्राप्त कर लेना है, विशेषके वह सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त करने का पुल लघु ठाप्य है।

वीक्षा में आप लेने वाली साधनों का जल से अग्रत अविषेक करने के अवसरा विशेष शक्तिपात्र प्रदान किया जाता है। यह वीक्षा इन तीनों दिवसों को साथ उ बजे प्रदान की जाती है। वीक्षा के उपरान्त एक उपयोगी लक्ष्य प्रकाल दिया जाता है।

जीवन के बीच इन 3 दिनों के लिये  
किन्तु पांच व्यक्तियों  
की वार्षिक रक्तस्त्र बनाकर  
उनके ढाक परे लिखका कर  
उपहार रक्तस्त्र परे वीक्षा आप  
विशुद्धक प्राप्त कर लाकर दें।

शक्तिपात्र वृक्त वीक्षा

**सौरदर्श्य आकर्षण  
दीक्षा**

2356  
=Rs. 1175/-

किसी भी व्यक्ति का वेहरा उसके व्यक्तित्व का दर्पण होता है। यदि आपके भूख पर तेजस्विता है, आकर्षण है, तो स्वतन् सामने वाला व्यक्ति आपसे प्रभावित होता है। इसर यदि दुर्बल भी हो, परन्तु यदि मुख पर आभा है, सौन्दर्य है तो कोई भी आपसे बन करने के लालायित होता है। सौन्दर्य आकर्षण दीक्षा द्वारा वहां स्थिरों के सौन्दर्य में गतव वा निवार आने लगता है, कादा के बन हो जाती है, वहीं पुलवों के मुख्यमानन पर तेजस्विता भी गेज आ जाता है। बड़े-बड़े नेताओं, अफसरों, सून्दरियों में यह गृण प्राकृतिक रूप से व्याप होता है। यदि आप व्यापारी या कर्मचारी हैं और सामने वाले से अपनी बात मनवाना चाहते हैं या आप रुपरत्न में या अकस्म के सामने घबराते हैं, तो इस दीक्षा के महायम से स्वयं अपने वेहरे पर आकर्षण और सम्मोहन ला सकते हैं। ऐसे व्यक्ति को हर किसी रो आनुकूलन ही प्राप्त होता है। इसके साथ ही आपके व्यक्तित्व में निखार आता है, और सौन्दर्य प्राप्त होता है।

सम्पर्क : सिटीप्रेस 306, कॉलेट एन्सेंबल, फील्मपुर, नई दिल्ली - 34, फोन : 011-7182248, टेली फैक्स : 011-7196700

ऋग्वेद 'दिसम्बर' 2001 मंत्र-तंत्र-वंत्र विज्ञान '81'

'ज्युस्क्रम' में दीक्षा व साधना का महत्त्व'

शास्त्रों में वर्णित लाता है, जिस लिंगर में गंगा वायु किया जाए तो अंति उत्तम होता है, उससे भी अधिक पुष्ट्यकालीन होता है वही लड़ी को लिखारे करें, उससे भी अधिक सुखद होता है, और उससे भी अधिक पर्वत में करें तो, और पर्वत में भी वही दिमालाय में लिखा जाए, तो और लड़ी कई जुला बेष्ट होता है। इन सबसे भी बेट होता है यदि यादृक गुरु दालों में देवतक वासना लगाए जाएँ। और यदि गुरु दाल जाने पर उन अन्दरूनी गुरुथाम में भी यह साधना प्रदान करें, तो इससे बड़ी शीक्षण और कुछ दीक्षा ही लाई।

कुछ ऐसे दक्षात लोग हैं, जिन दिव्य शक्तियों का जास अवैष्ट रहता ही है। जो सद्गुरुण लोग हैं, वे मुहूर रूप से अवश्य लश्चरीर प्रतिपादन अपने धारा में अवश्यक रखी हुए प्रत्येक वर्तितेवि का सूक्ष्म रूप से संपादन करते ही रहते हैं। इसलिए यदि शिवा गुरुथाम में पहुंच कर गुरु के अस्त्रा, सभा एवं शीक्षा प्राप्त करता है और गुरु दालों का दालशी तरह उनकी आशा से साधना प्राप्त्यज्ञ करता है, तो उसके शीक्षण से देवतक भी इत्यांकी होते हैं।

तीर्थ स्थान पुष्ट्यप्राप्त है पर शिवा ज्यादा जातक के लिए शीर्षी तीर्थी से भी पातल तोर्न गुरुथाम होता है। जिस बात में सद्गुरु लक्ष्यक वास्तविक रूप रहता है, ऐसे दिव्य दक्षात पर गुरु दालों में उपस्थित होकर गुरुमुख से भव्य प्राप्त करते वी दीक्षा ही साधना में तब अवश्य होती है, जब उसके साधक जागत होते हैं। दूसरी तथा को द्वातान में रखते हुए जातकों के लालार्थ गुरुकेव की लालाता के बाबूद भी लिखी गुरुथाम में तीन दिवसों को साधनालक प्रयोगों की शूखता विवरिति की जाई है।

# विद्या - वृद्धि

## विद्यामर्शन सम्प्रदाय

नाथन जब साधनाओं के स्रोत में थोड़ा अनुभवी हो जाता है, तब वह दस महाविद्याओं की साधना की ओर आकृष्ट हुए बिना नहीं रह पाता, क्योंकि संसार की समस्त गतिविधियों की आधारभूत ये दस महाविद्याएं ही होती हैं। वस्तु महाविद्याओं में भगवती उल्लम्फना पांचवें क्रम में आती है, अतः इन्हें 'पञ्चमी' करने वाली, विपरीत रति में आसक्त, रति तथा कामदेव के विद्या' भी कहा जाता है। नात्रिक ग्रन्थों में इन्होंने 'प्रचण्ड-चण्ड-उपर स्थित, डाकिनी तथा वरिणी नामक अपनी सखियों के चण्डिका' अथवा 'प्रचण्ड चण्डिका' के नाम से भी सम्बोधित किया गया है। भगवती छिन्नमस्ता की साधना शत्रुओं का नाश करने वाली है। इनकी साधना तो स्वयं भगवान परशुराम ने भी सम्पन्न की थी और नाथ पंथ के प्रवर्तक गुरु गोरख नाथ भी छिन्नमस्ता के उपासक रहे हैं।

### भगवती छिन्नमस्ता स्वरूप वर्णन

ये अस्तिमाला धारिणी हैं, जो अपने कठे हुए मरुक को भी अपने ही हाथ में निए हुए हैं। जो महामाता धोड़शी एवं भुवनेश्वरी बनकर रमेश्वर का पालन करती हैं, वही उंतकाल में छिन्नमस्ता बनकर नाश करती हैं। कर्ती (किंची), खाप्पर, रक्त, नाग, दिग्म्बरन्द आदि उस संहार शक्ति को ही निरुपित करता है।

छिन्नमस्ता का स्वरूप विन्न ध्यान मव में पूर्णता से दिया गया है। साधकों को चाहिए इसी ध्यान मंत्र से देवी का ध्यान करें-

मास्त्वन्मण्डल मध्यगा निजशिर शिष्ठं विकीर्णालिकं,  
स्फारास्य प्रपिबद्धगलात्वर्वर्णविर वामे करे विश्वतीम्।  
याभासकरतिस्परोपरिगतां सख्यावै निजे डाकिनी,

वर्णन्यौ परिवृश्योमव कलितां श्रीछिन्नमस्तां भजे॥

अथात सूर्यमण्डल के मध्य में विराजमान बाण द्वाय में अपने ही कठे हुए मस्तक को धारण करने वाली, बिखरे हुए केशों वाली, अपने कण्ठ से निकलती हुई रत्नधारा का स्वयं ही पान भगवती उल्लम्फना पांचवें क्रम में आती है, अतः इन्हें 'पञ्चमी' करने वाली, विपरीत रति में आसक्त, रति तथा कामदेव के विद्या' भी कहा जाता है। अपर स्थित, डाकिनी तथा वरिणी नामक अपनी सखियों के चण्डिका' अथवा 'प्रचण्ड चण्डिका' के नाम से भी सम्बोधित साथ प्रसन्न रहने वाली भगवती छिन्नमस्ता देवी का मैं ध्यान करता हूँ।

### जब गुरुदेव ने मुझे साधना प्रदान की

बचपन के आरंभ से ही मुझे अपनी संस्कृति के प्रति अत्यन्त गहरा अनुराग था। कल-कल करती हुई बहनी नदिया, ये बर्फीले सुन्दर पढ़ाइ, हरी-भरी सुन्दर प्रकृति मुझे बरबल प्रकृति के गूढ़ रहस्यों की ओर आकर्षित करती रहती थीं। अचानक एक दिन मेरे मन में इन रहस्यों को जानने की ललक बढ़ गयी और मैं घर से निकल पड़ा।

काफी घपड़े खाने के बाद मेरा सीधार्य जागा और मुझे हरिंल से लगभग १५-१६ कि.मी. दूर मैरव की घाटी, जो गंगोदी से पहले स्थित है, मैं उन्न गंगासी विश्वों को साधना सम्पन्न करवा रहे थे। मैं शिष्ठकर्ते हुए गुरुदेव जी के कुछ निकट गया, त्यों ही गुरुदेव जी ने मेरा नाम लेकर मुझे अपनेपास बुलाया, तो मेरी प्रसन्नता का ठेकाना न रहा। मैं पूज्य गुरुदेव जी के चरणों में लिपट गया।

गुरु  
देव  
करने के  
का निम्न  
गुरुदेव  
सफलता  
से मुझे  
का प्र  
मानसि  
साधना  
महावि  
साधना  
सम्पन्न  
की प्रेर  
में उ  
कि कब  
शुभ मुह  
की ओर  
निधि  
पवित्रता  
मुझे आ  
उपरांत  
साधना  
में स्रोत  
जिरोधा  
छिन्नम  
छिन्न  
इसके प्र  
इसके उ  
अनुभव  
लाभार्थी  
१. य  
रूप से  
जीवन  
२. य  
साधना  
३. वि  
आधिक  
वस्त्रवर  
४. वि

गुरुदेव जी मेरे आने के उद्देश्य को समझा गये और अगले दिन मुझे विधिवत दीक्षा देकर साधना के गोपनीय सूत्र स्पष्ट करने के उपरान्त मुझे उच्चस्तरीय विशेष साधनाएं सम्पन्न करने का निर्देश देकर चले गए। मैं हिमालय के विभिन्न स्थानों में गुरुदेव जी के निर्देशानुसार साधनाएं सम्पन्न करता हुआ सफलता प्राप्त करता रहा, पूज्य गुरुदेव टेलीपेठी के माध्यम से मुझे निर्देश व मागदर्शन देते थे।

काफी समय बीत गया, कि एक दिन पूज्य गुरुदेव से मानसिक सन्देश प्राप्त हुआ, वे कह रहे थे - 'तुम्हारा साधनात्मक स्तर निश्चय ही अच्छा है, किन्तु तुम्हें अब महाविद्या साधना सिद्ध करनी चाहिए, क्योंकि महाविद्या साधना महत्वपूर्ण एवं श्रेष्ठ साधना है। और महाविद्या साधना सम्पन्न करने के उपरान्त ही कोई साधक उच्च स्तर के साधक की श्रेणी में आ पाता है।'

मैं अन्यन्त प्रसन्नता पूर्वक उस क्षण की प्रतिक्रिया करने लगा, कि कब गुरुदेव मुझे महाविद्या साधना देंगे। गुरुदेव ने मुझे शुभ मुहूर्त पर छिन्नमस्ता महाविद्या दीक्षा तीन चरणों में प्रदान की और साधना से सम्बंधित आवश्यक निर्देश प्रदान किये।

निश्चिरित मुहूर्त पर, मैंने साधना प्रारंभ की। पूरे लगन व पवित्रता के भाव से २१ दिन में सब लालवा मंत्र जप सम्पन्न कर मुझे आशार्तीत सफलता प्राप्त हुई। साधना में सफलता के उपरान्त गुरुदेव जी ने आशीर्वाद प्राप्त किया। गुरुदेव ने मुझे साधना में सफलता के लिए आशीर्वाद प्रदान कर साधनाओं में शेत्र के उच्च स्थिति प्राप्त करने की आशा दीवार में गुरु-आज्ञा शिरोधार्य मानकर अपने लद्य की ओर गतिशील हूँ।

### छिन्नमस्ता साधना की उपलब्धियां

छिन्नमस्ता महाविद्या साधना तो तीव्र शत्रुहन्ता साधना है, इसके प्रभाव से तीरण से तीरण शत्रु भी निरस्त हो जाता है। इसके अलावा इस साधना को सम्पन्न करने के बाद जो नवीन अनुभव मुझे हुए हैं, उन्हें गुरु करा फलस्वरूप साधकों के लाभार्थ प्रकाशित किया जा रहा है-

१. यदि व्यक्ति शत्रु बाधा से ग्रसित हो, तो शत्रु बाधा पूर्ण रूप से समाप्त हो जाती है और व्यक्ति का व उसके परिवार का जीवन पूर्ण सुरक्षित हो जाता है।

२. यदि कारोबार विपन्न अवस्था में चल रहा हो, तो इस साधना के बाद कारोबार सुदृढ़ता से चलने लगता है।

३. छिन्नमस्ता महाविद्या साधना सम्पन्न करने के उपरान्त आर्थिक अभाव समाप्त हो जाते हैं और घन का आगमन बराबर बना रहता है।

४. छिन्नमस्ता महाविद्या सिद्ध होने पर व्यक्ति के शरीर का

• • • • •  
छिन्नमस्ता महाविद्या साधना को छिन्न करने से साधना के जीवन में यज, शत्रुघ्ना, शोग आदि की अमर्त्याएं यात्रा हो जाती है। उसका तथा उसके परिवारों का जीवन पूर्ण ऋप से सुखित रहता है।

भगवती छिन्नमस्ता अपने साधक को छुट आजे वाले रहते हैं विद्यार्थी रहती है। इस साधना को सम्पन्न करने के बाद साधक पर मर्दी, गर्भी आदि का अभाव लड़ी पर्वता है तथा उसका प्रतीर उच्चकोटि की साधनाओं के अवधारा बन जाता है।  
• • • • •

कायाकल्प हो जाता है और वह स्मृतिवान तथा योवानवान बन जाता है।

५. इस साधना के सम्पन्न होने के उपरान्त शरीर उच्चकोटि की साधनाओं के अनुकूल बन जाता है और गर्भी-सर्वी का विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है।

छिन्नमस्ता महाविद्या दीक्षा संस्कार सम्पन्न करने के दौरान पूज्य गुरुदेव जी ने मुझे जो साधना विभान व सूक्ष्म विन्दु रूप किए वे इस प्रकार हैं-

इस साधना में १६ बीजों का मन्त्र प्रयोग किया जाता है जो इस प्रकार है-

॥ श्री हीं कर्त्ता ऐं वज्र विरोचनीये हूँ हूँ फट स्वाहा ॥

इस मंत्र की मुख्य विशेषता इस प्रकार है-

इस विशिष्ट मंत्र में सर्वप्रथम 'श्री' बीज मंत्र है, जो कि लक्ष्मी का प्रतीक है।

'हीं' बीज, यह लंजा बीज है, जो कि जीवन में सभी दृष्टियों से उत्तमि में सहायक है।

'ऐं' बीज, जीवन में समस्त गुणों को देने वाला और संजीवनी विद्या प्रदान करने वाला है।

'व' बीज, जीवन में समस्त गुणों को देने वाला और संजीवनी विद्या प्रदान करने वाला है।

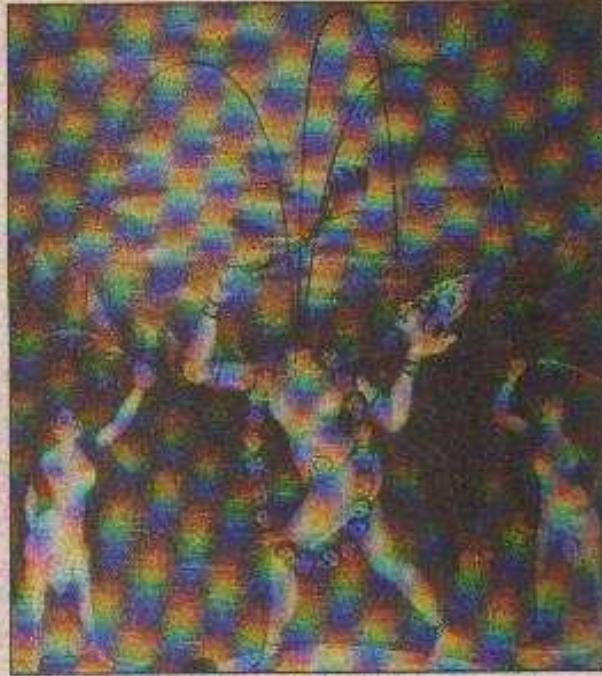
'ज' बीज, इन्द्र का प्रतीक है, जो कि एक स्थान पर दूरस्थ व्यक्ति अश्रवा यत्ना को जानने में सहायक है।

'र' यह अग्नि देव का प्रतीक है, और पूर्णता प्रदान है।

'व' यह पृथ्वीपति बीज है, जिससे साधक 'भू-सिद्धि' करने में सहायक होता है।

'ऐं' यह विपुर देवी का प्रतीक है।

'र' यह विपुर भुन्दरी वा बीजाक्षर है।



नित्य पाठ से साधक को जीवन में धन, शत्रु बाधा, रोग आदि की समस्याएं समाप्त हो जाती हैं।

नाभी शुभारविन्द तदुपरि विलसन्मण्डलं चण्डरश्चः ।  
संसारस्यैकसारां विभूवन-जननीं धर्म-कामार्थ-  
दात्रीम् ॥ तस्मिन्यथे त्रि-मार्गं प्रितय-तनु-धरा  
छित्रमस्तां प्रशस्तामा तां बन्दे छित्रमस्तां शमन-भय-  
हरां योगिनीं योग-मुद्राम् ॥१॥

नाभी शुक्र-सरोज-वक्त्र-विलसद-बन्धक-  
पुष्पारुणं । भ्रास्वद-भास्कर-मण्डलं तवुवरे तद-योगि-  
चक्रं महत् ॥ तन्मध्ये विपरीत-मैथुन-रत-प्रद्युम्न-  
सत्कामिनी-पृष्ठस्थां तस्त्राक-कोटि-विलसत्तेजः-  
स्वरूपां भजे ॥२॥

यामे छित्र-शिरोधरां तवितरे पाणीं महत्कर्तृकां ।  
प्रत्यातीढ-पदां दिग्नन्त-वसनामुन्मुक्त-केश-बजाम् ॥  
छित्रात्मीय-शिरस्समुच्छलवसृग्धारां पिबन्तीं पदा ।  
बालादित्य-सम-प्रकाश-विलसत्तेज-त्रयोद्भासिनीम्  
॥३॥

वामादन्यत्र तालं वहु-गहन-गलव-रक्त-धारा-  
भिरुच्ची । गायन्तीभिस्थि-भूषां कर-कमल-  
लस्तकर्तृकामुग्य-रूपाम् ॥ रक्तामरात्म-केशीभयगत-वसना-  
वर्णिनी-मात्म-शांक्तं प्रत्यालीढोरु-पादामरुणित-नयनां  
योगिनीं योग-निद्राम् ॥४॥

दिग्वस्त्रां मुक्त-केशीं प्रलय-घन-घटा-घोर-रूपां  
प्रचण्डां । वंश्टु दुष्प्रेष्य वक्त्रोदर-विवर-लंसल्लोलजिह्वाय-  
भासाम् ॥ विचुल्लोलासि-युग्मां हृदय-तट-लसद-  
भोगिनीं भीम-मृतिम् । सद्यशित्रात्म-कण्ठ-प्रगतित-  
स्थिरेणाकिनीं वश्यन्तीम् ॥५॥

ब्रह्मानाच्युतायैः शिरसि विनिहता मन्द-पादार-  
विन्दरामेयोगीन्द-मूर्खैः प्रति-पदमनिशं चिन्तितां चिन्त्य-  
रूपाम् ॥ संसारे सार-भृतां श्रिभूवन-जननीं छित्रमस्तां  
प्रशस्तामिष्टां तामिष्ट-वात्रीकलिकलुष-हरां चेतसा  
चिन्तयामि ॥६॥

उत्पत्ति-स्थिति-संहतीर्थटयितुं धते त्रि-रूपां तनुं ।  
त्रिगुण्याज्जगतो यदीय विकृतिर्द्वाच्युतः शूल-भृत् ॥  
तामाद्यां पकृतिं स्मरामि मनसा सर्वार्थ-संसिद्धये । यस्याः  
स्मेर-पदारविन्द-युग्मे लाभं भजन्ते नराः ॥७॥

अभिलिपित-पर-स्त्री-योग-पूजा-परोऽहं । वहु-विध-  
जन-भावारम्भ-सम्भावितोऽहम् ॥ पशु-जन-विरतोऽहं  
भैरवी-संस्थितोऽहं । गुरु-चरण-परोऽहं भैरवोऽहं

‘ओ’ यह बीज संकेत वैलोक्य विनय देवा का आत्मरूप प्रतीक है।

‘च’ यह चन्द्र का प्रतीक है, जो कि पूरे शरीर को निर्धारित, सुन्दर व सख्ती प्रस्तुता है।

‘न’ यह गणेश का प्रतीक है, जो कि त्रिलू-सिंहि भेद में समर्थ है।

‘हृ’ यह साक्षात् कमला का बीजाकार है।

‘य’ यह सर्वस्वती का बीज है; नियमे साधक को वाकसिद्धि द्वारा होता है।

‘हूं’ यह माया युग्म बीज है, जो भान्मा और प्रकृति का संगम है। इससे साधक प्रकृति पर नियंत्रण स्थापित करता है।

‘फट’ यह वैखरी प्रतीक है, नियमे साधक किसी भी क्षण मनोविद्धिन कायं सम्पन्न कर सकता है।

‘ख्या’ यह कामदेव बीज है, जिससे साधक का शरीर सुन्दर, आकर्षक बन जाता है।

‘हा’ यह रति बीज है, जो पूर्ण पौरुष प्रदान करने में समर्थ है।

यह मंत्र इतना अधिक श्रेष्ठ है, कि इसके निहित बीज मंत्र सम्बन्धी देवताओं की कृपा भी साधक को मात्र छित्रमस्ता की साधना करने से अवृत्त, और साथ ही साथ प्राप्त हो जाती है।  
छित्रमस्ता स्तोत्र

छित्रमस्ता मंत्र साधना की ही भाँति छित्रमस्ता स्तोत्र के शिरोऽहम् ॥८॥

रोम

ग्रन्थः

पार्य-

धरा-

भय-

वृक-

सनि-

दुम्न-

तजः-

कां।

ग्राम॥

परां।

सनीम्

धारा-

मल-

वसना-

नथना-

स्वप्ना-

जिह्वाग्र

नस्यद-

निलित-

पादार-

चन्दन्य-

ब्रह्मस्ता-

चेतसा

गं तनुं।

भृत॥

यस्याः

हु-विध-

वरतोऽहं

रत्वोऽहं

उल्लिखिती छिन्नमस्ता करौ द्युमुख छेदकर  
व्याप्ति यदु भाविता अस्त्रपूर्ण व्यक्तिर है  
है उल्लिखित और स्फुरण की स्वरूपास्त्रज्ञ  
छोटे और बड़े जलरी हैं। इन्हें कित्तौरी  
ओं शक्ति व्याप्ति कर्त्ता जै द्यौ छिन्नमस्ता  
के व्याप्तिक व्याप्ति की ओर आज और अप्तका  
जलरी अवृद्ध व्यक्तिर है, उठाए रखतां द्यौ द्यै  
छिन्नमस्ता जै जलरी है।

इदं स्तोत्रं महा-पुण्यं ब्रह्मणा भावितं पुरा। सर्वसिद्धि-  
प्रदं साक्षान्महा-पातक- नाशनम् ॥३॥

यः पठेत्प्रातरुत्थाय देव्या: सम्भितितोऽपि वा। तस्य  
सिद्धिर्भवेद्यि वाऽप्तितार्थ-प्रदायनी ॥३२॥

धनं धान्यं सूतं जायां हयं हस्तिनमेव च। वसुन्धरां महा-  
विद्यामष्ट-सिद्धि लभेव धूमम् ॥३३॥

अर्थ- नाभि भाग में स्वच्छ कमल के ऊपर विराजमान तीव्र  
रश्मि, समूह की सदृश, संसार के एक मात्र आधार स्वरूपा,  
तीनों लोकों की जननी, धर्म अर्थ और काम को प्रदान करने  
वाली, उस कमल के मध्य भाग में तीन धाराओं के रूप में तीन  
शरीर में विभक्त समस्त भय को दूर करने वाली, योगियों के  
आराध्य योग मुद्रास्वरूपा भगवती छिन्नमस्ता का मैं भावपूर्ण  
नमन करता हूँ ॥३॥

नाभि स्थित स्वच्छ कमल के सदृश बंधुक पुण्य के समान  
रक्त वर्ण की शोभा से युक्त, चमकते हुए सूर्यमण्डल के ऊपर  
सुशोभित योनिचक्र वाली, विपरीत मैथुन युक्त रति और कामदेव  
के पृथु भाग पर करोड़ों तरुण सूर्य के तेज से सुशोभित भगवती  
छिन्नमस्ता का मैं बन्दना करता हूँ ॥३२॥

भगवती छिन्नमस्ता के विभिन्नरूपों वाली, बायें हाथ में खड़ा  
धारण की हुई, विशालपूर्ण वस्त्रों वाली, खुले हुए केशों से युक्त,  
कटे हुए मस्तक से निकलती हुई रक्तधारा को पान करती हुई,  
उदित होने हुए सूर्य के समान प्रकाशपुंजमयी त्रिनेत्र धारणी  
भगवती छिन्नमस्ता को मैं नमन करता हूँ ॥३३॥

दूसरी ओर गढ़े और ऊंची धाराओं वाली रक्त को पान करती  
हुई, हिलती हुई अस्त्री मालाओं से सुशोभित, हाथ में चमकती  
हुई खड़ा भारण करने वाली भय प्रदान करने वाली, रक्तवर्णों  
से युक्त, निर्वस्त्र, अपार शक्ति सम्पन्न जघा और पैरों को सिकोड़ी  
हुई रक्त नेत्रों वाली, योगिनी, योग निद्रा से युक्त भगवती का मैं  
बन्दना करता हूँ ॥३४॥

विशालोर्पा वस्त्र से युक्त, खुले हुए वालों वाली प्रलय-

प्राय व्याधक देवी के पाते विश्व को देवताकर  
भवताङ्ग छड़ा भवताङ्गा वै द्युमुख व्याधकरा वै द्युमुख  
व्याधगा वै भवताङ्गे को व्याध व्याधकरा वै द्युमुख  
यह व्याधगा तो व्याध व्याधगालों की व्याधगा  
युजनात्यक्षत्वप से द्वीप विश्व लोगे वाली  
है... व्याधक प्रभाव व्याध तीव्र वै द्युमुख भौम्य से  
तीक्ष्णपत्र इन्हु भी विश्व लोग हो जाते हैं, यस्योदेव व्याधे  
व्या यह व्याधक व्याध व्याधप है विश्व व्याधक व्याधे  
निर्मित हो जाता है।

कालीन धंधोर धटा के समान, भयावह रूपों वाली जिसके दांतों  
को देखना कठिन है मुख पेट रूपी खोह में लपतपाते हुए लाल  
जिह्वा से युक्त बिजली के समान चमकती हुई दो आंखों वाली  
हृदय पटल पर सुशोभित हारों वाली भयावह देह वाली, गोष्ठ  
कटे हुए मस्तक से निकलते हुए रुधीर धाराओं से युक्त  
दाकिनियों को शक्ति प्रदान करती हुई भगवती को मैं नमन  
करता हूँ ॥५॥

ब्रह्मा, विष्णु और महेश के द्वारा वंदित, मंदिर और कमल  
पुण्य के द्वारा, योगियों से पुजित चरण वाली निरंतर ध्यान  
योग संसार में सारभूत तीनों लोगों की जननी श्रेष्ठरवरूपा  
मनोकामनाओं को देने वाली, कलयुग के पाप को हरण करने  
वाली भगवती छिन्नमस्ता को मैं ध्यान करता हूँ ॥६॥

उत्पत्ति स्थिति और सहार करने के लिए तीन रूपों में विभक्त,  
सत्त्व, रज और तमो गुण से संसार को निर्माण करने वाली,  
ब्रह्मा विष्णु महेशस्वरूपा जिसके चरण कमल को लोग  
मनोकामना पूर्ति के लिए पूजते हैं ऐसे उस आदि प्रकृति भगवती  
छिन्नमस्ता को मन से सर्वार्थसिद्धि के लिए स्मरण करता हूँ ॥७॥

भगवती आदि शक्ति के पूजा में लगा हुआ, सभी जनों के  
द्वारा भावपूर्ण नमन करने में लगा हुआ, पशुत्वभाव से रहित,  
भगवती के चरण कमल में मन लगाया हुआ, गुरुचरणों को  
ध्यान करने वाला भैरव रूप में शिव रूप है ॥८॥

इस पवित्र स्तोत्र को जो सर्वसिद्धि देने वाला है तथा सब  
पापों को नाश करने वाला है, पूर्वयुग में ब्रह्मा ने उच्चरित  
किया ॥९॥

जो व्यक्ति प्रातः उठ कर भगवती छिन्नमस्ता के सामने इस  
स्तोत्र का पाठ करता है, वह मनोकामना पूर्ति करने वाली  
भगवती छिन्नमस्ता उसको सिद्धि प्रदान करती है ॥१०॥

इसका प्रति दिन पाठ करने से साधक को भन, धान्य, पुत्र,  
पत्नि, हाथी, घोड़ा, भूमि तथा दस महाविद्याओं को सिद्धि प्राप्त  
होती है ॥११॥

## एक बृहित में:

# आधिकारिक शिविर एवं दीक्षा समारोह

**1 जनवरी 2002 नई दिल्ली**

### शिव शक्ति दिव्याभिषेक दीक्षा

शिविर स्थल - नारायण शक्ति पीठ आरोग्य धाम, (गुजरात अपार्टमेंट के पांच), जो एच-4/3, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34

**13-14 जनवरी 2002 साधनी बैतुल, (मध्य प्रदेश)**

वस महाविद्या सिद्धि साधना शिविर

शिविर स्थल - शास-बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सारनी (सुपरएक्स)

आयोजक - \* श्रीमति शकुन देवी धोडे 78508 \* रामचन्द्र सोनार \* विश्वामित्र साहू \* पूनम साहू \* वनश्वाम मालवीय \* सुंदर सिंह ठाकुर \* डा. विलिप मानकर \* लेखराम माहौ \* शिव कुमार धाड़से \* अर्जुन सिंह उडके \* मुन्ना लाल हारीडे \* नरेन्द्र महतो \* मैत्या लाल मर्याद \* आर. सी. मिश्रा बैतुल \* पुन. के. श्रीवास्तव मुलताई \* वी. डाकरे वमुआ \* कमलाकर धाड़से आठनेर \* जे.एल. नवासे रैमसेही \* डॉल सिंह ठाकुर आमला \* के.के. बरेया शाहपुर \* महावेव तालुक मासोद।

**20 जनवरी 2002**

### शाहजहांपुर (यू.पी.)

#### आष लक्ष्मी सिद्धि साधना शिविर

शिविर स्थल - प्राथमिक विद्यालय छावनी परिषद, निकट फैज़पुर क्लेट, रामलीला मेदान, शाहजहांपुर, उ.प्र.

आयोजक - \* सुनील कुमार ठड़न 05842-27217 \* राजवीर सिंह 0512-612016 \* नितिन चन्द्र पंचारिया 0512-243427 \* माला प्रसाद श्रीवास्तव 05842-21312 \* डा. रवेन्द्र कुमार सिंह 05843-55165 \* लर्वेश्वरानन्द 05842-23624 \* अशोक कुमार \* संजय श्रीवास्तव \* राम बाबू सक्षेना \* राजा राम \* जेश सिंह चौहान \* विजय कुमार \* लेख राज रावत \* अनिल कुमार \* विनेश कुमार अश्वाल \* अशोक कुमार गुप्ता \* हरी प्रकाश शर्मा \* गणिनी ठड़न

**27 जनवरी 2002 उल्हास नगर मुंबई, (महाराष्ट्र)**

वस महाविद्या सिद्धि साधना शिविर

शिविर स्थल - बृंदावन लौन बोटल जवाहर के बगल में सेंट्रल

हास्पिटल रोड, फ्लावर, लालन चौक उल्हास नगर-4241 003

आयोजक - \* भरतीश मिश्रा 8050323 \* जेश सिंह 811 8497

\* भास्करन जी 95251-683357 \* वेंड एकनाथ राय 888 6094 \*

श्री. कृष्णा गोदा -841 2860 \* पी.एस. खांबा 95251-546297 \*

चवु ठवरमलानी 492 9090 \* दिशांकर पांडे 885 6080 \* विज्ञा

भाई - 95250-412166

**26-27 फरवरी 2002 भंडारा, (महाराष्ट्र)**

शक्ति सायुज्य गणपति साधना शिविर

शिविर स्थल - मंगलमूर्ती समाग्रह, खात रोड भंडारा, (महाराष्ट्र)

आयोजक - \* श्री दिनेश निलम 07184-57460 \* श्री प्रवान

परसोङ्कर 07184-52225 \* श्री दिलिप दुवानी 07184-54453 \*

श्री विरेन्द्र जागडे \* श्रीमती मधुभी पाठक \*

श्री अनय निखार 07184-51144 \*

डा. युवराज जमाइवार \*

उपेन्द्र सिंह चौहान \*

विराजी टाके \* पि.के. पांडे \*

हंदवर जी वारेकर \*

साहेब राय जीपकाटे \*

चगल साहेब \*

वी.पी. सातमूने \*

दाकूर पिंड डैस \*

\* सुधिर सेलोकर \*

\* विरेन्द्र जागडे \*

\* मगत (गोंदिया) \*

\* सुनील खवसे \*

\* विजय तुपटे \*

\* विश्वर लिंग पोद्दार

**11-12 मार्च 2002**

बोकारो (झारखण्ड)

महाशिव रात्रि साधना शिविर

शिविर स्थल - मंजर बैवान सिटी सेंटर, जनवृत्त ४ बोकारो इस्पात

नगर, झारखण्ड - 827004

आयोजक - \* शैलेन्द्र कुमार 06542-46209 \*

डा. सत्येन्द्र कुमार 06542-57362 \*

एस. डा. 06542-20089 \*

डी.डी. स्कॉरी 06542-21026 \*

\* एम.एम. सिन्धा 06542-60017 \*

\* एस.के. सिंह 0-9835116370 \*

\* पम.पुरी 0-9835123007 \*

\* आर. कुमार 06542-79786

\* ए.के. सिन्धा 06542-20242 \*

\* ओ. प्रसाद 06542-22135 \*

\* ए.के. सिंह 06542-71711 \*

\* आर. सिन्धा 06542-79442 \*

\* आर. प्रसाद 06542-49104 \*

\* जे.पी. सिंह 0326-273718 \*

\* बी.एस.बी. राव 0326-273411 \*

\* एस.के. सिन्धा, एस.सु. सुमन 0326-273705 \*

\* आर.के. राय 0326-273124 \*

\* सुरेश, आर. साह 0326-462803

**3 फरवरी 2002**

नवग्रह शांति एवं सिद्धि शिविर

शिविर स्थल - लोहानावाडी बाल हनुमान मंदिर के सामने बाडीफरा,

सुरेन्द्र नगर सोलापुर (गुजरात)

आयोजक - \* अतुल भाई जानी 02752-22107 \*

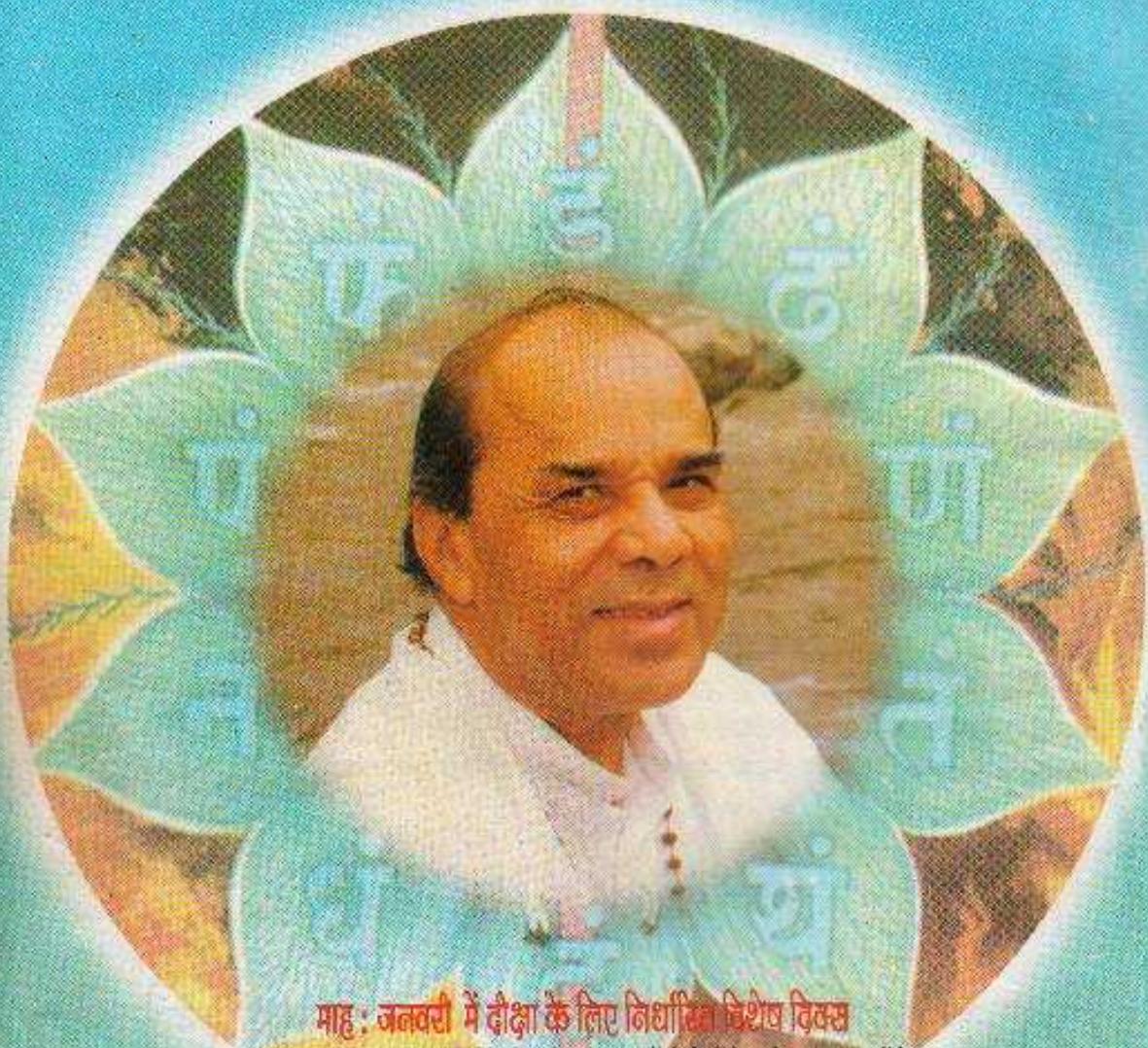
कलपेश शाह 37488 \*

डा. नरेश चन्द्री \*

\* ऋषिकेश भाई \*

\* आर.के. पंचाल 20549 \*

\* इरसाना जी



**माह : जनवरी में दीक्षा के लिए निर्धारित दिवस**  
पश्चपूर्व मुरुदेव निम्न लिर्डि दिवसों पर साधकों से निलंबित दीक्षा प्रदान करेंगे।  
इन्हुंने साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

**दिनांक**  
8-9-10 जनवरी 2002  
**स्थान**  
गुरुकथाम, जोधपुर

निर्धारित दिवसों पर ये दीक्षाएँ प्राप्त : ११ बजे ये १ बजे के

मध्य सारे ५ बजे से ७: ३० बजे के मध्य प्रदान की जायेंगी।

**दिनांक**  
23-24-25 जनवरी 2002  
**स्थान**  
सिंहाश्रम, विलली

तर्फ 21

अंक - 12

**सम्पर्क :**

अन्तर्राष्ट्रीय विद्वान, डॉ० श्रीबाली भार्या, हार्डेलेर कॉन्सोनी, जोधपुर-342001 (राजस्थान), फोन : 0291-432209, फैक्स : 0291-432010  
विद्वान्म, 306, कोहट स्कॉल, पीनापुर, नई दिल्ली-34, फोन : 011-7182248, फैक्स : 011-7195700



## COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with  
By  
  
Avinash/Shashi

Icreator of  
hinduism  
server

